डाक पंजीयन नं. 99/2021-23

E-mail:-adhuniksamachar2014@gmail.com

website:www.aadhuniksamachar.com

PG-5

आधुनिक भारत का आधुनिक नजरिया

आधुनिक समाचार

PG-8

प्रयागराज से प्रकाशित हिन्दी दैनिक

सिनेमाः-नाटू-नाटू का 10% पार्ट लिखने में चंद्रबोस को लगे थे महीनों बोलें- 'कड़ी मेहनत रंग लाई'

वर्ष -08 अंक -266 | प्रयागराज, शुक्रवार , 13 जनवरी, 2023 | पृष्ठ- 8 | मूल्य : 2.00 रूपये

संक्षिप्त समाचार

केरल के मुख्यमंत्री प्रतिशोध की राजनीति कर रहे हैं प्रकाश जावड़ेकर

(आधुनिक समाचार सेवा)

कोच्चि। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के वरिष्ठ नेता और पूर्व केंद्रीय मंत्री प्रकाश जावड़ेकर ने बुधवार को कहा कि केरल की भाजपा इकाई के अध्यक्ष के सुरेंद्रन के खिलाफ रिश्वत मामले में दायर चार्जशीट राज्य सरकार की प्रतिशोध की राजनीति है। उन्होंने कहा, ठएसएनसी लवलिन भ्रष्टाचार घोटाले में आरोपी मुख्यमंत्री पिनाराई विजयन प्रतिशोध की राजनीति कर रहे हैं। उन्होंने सुरेंद्रन मामले में एक फर्जी चार्जशीट दायर की है और हम इसे अदालत में साबित कर देंगे। प्रकाश जावड़ेकर ने कहा, चार्जशीट का समय भी महत्वपूर्ण है। लेफ्ट डेमोक्रेटिक फ्रंट (एलडीएफ) और (यूडीएफ) दोनों ने बीजेपी को बदनाम करने की योजना बनाई थी। लेकिन चार्जशीट चार दिन बाद आई जब मैंने घोषणा की कि सुरेंद्रन पार्टी का नेतृत्व करना जारी रखेंगे।

गायक अदनान सामी ने आंध्र के सीएम जगन को दिखाया आईना

(आधुनिक समाचार सेवा)

नई दिल्ली। गायक अदनान सामी ने आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री वाईएस जगनमोहन रेड्डी को आईना दिखाते हुए कहा कि सबसे पहले हम सभी

लोग भारतीय हैं। अलगाववाद का रवैया ठीक नहीं है। दरअसल एसएस राजामौली के निर्देशन में बनी फिल्म आरआरआर के गीत के तेलुगु वर्जन 'नाटू-नाटू' को गोल्डन ग्लोब पुरस्कार 2023 में सर्वश्रेष्ठ मूल गीत का पुरस्कार मिला है। आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री जगन मोहन रेड्डी ने 'नाटू-नाटू' के पुरस्कार जीतने पर बुधवार को बधाई देते हुए ट्वीट किया, तेलुगु झंडा ऊंचा लहरा रहा है। पूरे आंध्र प्रदेश की ओर से, मैं आरआरआर की पूरी टीम को बधाई देता हूं।

बढ़ते आतंकवाद से परेशान होकर दक्षिण वजीरिस्तान में लोग कर रहे हैं प्रदर्शन, 8000 दुकानें बंद

इस्लामाबाद। दक्षिण वजीरिस्तान में धरने पर बैठे प्रदर्शनकारियों में अपने नेताओं और स्थानीय प्रशासन के बीच बातचीन नाकाम होने के बाद रास्ते जाम कर दिए। दक्षिण वजीरिस्तान के मुख्यालय वाना में

चल रहे धरने का मंगलवार को पांचवां दिन था। धरने का आह्वान वजीरिस्तान अमन ओलासी पसून (वजीरिस्तान पीस पब्लिक मूवमेंट) के द्वारा किया गया है। उनकी मांग है कि बार-बार आतंकी हमलों का सामना कर रहे जिले में शांति बहाल की जाए। बातचीत के असफल होने के बाद प्रदर्शनकारियों ने यातायात को प्रभावित करने के लिए रास्ते पर बैरिकेड्स लगा दिया। प्रदर्शन के कारण वाना में 8000 से अधिक दुकानें बंद रहीं। वजीरिस्तान पीस पब्लिक मूवमेंट के प्रमुख इमरान मुखलिस ने प्रेस कॉन्फ्रेंस के दौरान कहा कि प्रशासन के साथ बातचीत का सिलसिला पिछले पांच दिनों से चल रहा है, लेकिन यह किसी नतीजे पर नहीं पहुंची। हम अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकार संगठन को यह संदेश देना चाहते हैं कि हम अपने देश में अमन चाहते हैं। हालांकि, उन्होंने कहा कि सरकार उनकी मांगों को सुनने की जहमत नहीं उठा रही है मुखलिस कहते हैं कि हम देश के संस्थानों से शांति की भीख मांग रहे हैं। हम अपने इलाके में शांति और बेहतर कानून-व्यवस्था चाहते हैं। प्रशासन के साथ बातचीन की हमारी कई कोशिशें नाकाम हो चुकी हैं। उन्होंने बताया कि प्रशासन ने प्रदर्शनकारियों की कुछ मांगे मान ली हैं। इनमें को शामिल करना, पुलिस स्टेशन के निर्माण में तेजी लाना और नई पुलिस पोस्ट की स्थापना करना शामिल है। मुखलिस कहते हैं कि अधिकारियों के साथ लंबी बातचीत के बावजूद वजीरिस्तान पीस पब्लिक मूवमेंट की नेगोसिएशन कमेटी का मानना है कि प्रशासन आदिवासी लोगों की मांगों को पूरा करने के लिए संवैधानिक और कानूनी शक्तियों का इस्तेमाल नहीं कर पा रहा है। दक्षिण वजीरिस्तान में हाल के दिनों में आतंकवाद बढ़ने और कानून व्यवस्था में आई कमी को लेकर लोगों में आक्रोश है। इसके खिलाफ प्रदर्शन तेजी से जोर पकड़ रहा है। इस प्रदर्शन में आम नागरिकों के अलावा पाकिस्तान की तमाम राजनीतिक पार्टियां भी शामिल हो रही हैं।

प्रधानमंत्री 15 जनवरी को सिकंदराबाद-विशाखापत्तनम वंदे भारत ट्रेन को दिखाएंगे हरी झंडीः केंद्रीय मंत्री

(आधुनिक समाचार सेवा)

हैदराबाद। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 15 जनवरी को सिकंदराबाद और विशाखापत्तनम के बीच वंदे भारत ट्रेन को वर्चुअली हरी झंडी दिखाएंगे। इसकी जानकारी केंद्रीय पर्यटन मंत्री जी किशन रेड्डी ने दी है। इस दौरान रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव और किशन रेड्डी उद्घाटन सेवा के लिए यहां सिकंदराबाद रेलवे स्टेशन पर मौजूद रहेंगे किशन रेड्डी ने बुधवार रात एक विज्ञप्ति में कहा, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 15 जनवरी को सिकंदराबाद रेलवे स्टेशन से प्रतिष्ठित वंदे भारत ट्रेन को संक्रांति के अवसर पर तेलुगू लोगों को तोहफे के रूप में सुबह 10 बजे हरी झंडी दिखाएंगे। देश की आठवीं वंदे भारत ट्रेन सिकंदराबाद और विशाखापत्तनम के बीच लगभग आठ घंटे में चलेगी। विज्ञप्ति में कहा गया है कि ट्रेन के लिए परिकल्पित इंटरमीडिएट स्टॉप में वारंगल, खम्मम, विजयवाड़ा और राजमुंदरी शामिल हैं।वंदे भारत एक्सप्रेस पर पथराव की घटना थमने का नाम नहीं ले रही है। वहीं 11 जनवरी

को आंध्र प्रदेश से पथराव का मामला सामने आया था, जहां पर वंदे भारत एक्सप्रेस को पत्थरबाजों ने निशाना बनाया था। बता दें कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी 19 जनवरी को वंदे एक्सप्रेस को हरी झंडी दिखाने वाले हैं। इससे पहले ही विशाखापत्तनम में ट्रेन पर पथराव की घटना हुई। जिसकी वजह से ट्रेन के शीशे क्षतिग्रस्त हो गए। डीआरएम के हवाले से समाचार एजेंसी एएनआई ने बताया कि विशाखापत्तनम के कांचरापलेम के पास वंदे भारत एक्सप्रेस के एक कोच का शीशा क्षतिग्रस्त हो गया मंडल रेल प्रबंधक अनूप कुमार सत्पथी ने कहा कि शाम 6:30 बजे विशाखापत्तनम में वंदे भारत ट्रेन पर किसी ने पथराव किया था। इस घटना में खिड़की के 2 शीशे पूरी तरह से टूट गए और उन्हें बदलने की जरूरत है। यह बेहद दुर्भाग्यपूर्ण है। उन्होंने कहा कि हमने कुछ संदिग्धों की पहचान की है, आरपीएफ उन पर नजर बनाए हुए है। सीसीटीवी फुटेज खंगाले जाएंगे और दोषियों के खिलाफ सख्त से सख्त कार्रवाई की जाएगी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 30 दिसंबर को कोलकाता में वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से वंदे भारत एक्सप्रेस को हरी झंडी दिखाई थी। इसके बाद से लगातार वंदे भारत एक्सप्रेस पर पथराव की घटना सामने आ रही है। हालांकि पथराव की घटना को लेकर रेलवे अधिनियम की धारा 154 के तहत अज्ञात लोगों के खिलाफ मामला भी दर्ज किया गया है।

वॉयस ऑफ ग्लोबल साउथ समिट में बोले पीएम मोदी- हमने युद्ध

(आधुनिक समाचार सेवा)

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने गुरुवार को वॉयस ऑफ ग्लोबल साउथ समिट के उद्घाटन सत्र को संबोधित किया। इस दौरान उन्होंने सदस्य देशों को भाई कहकर

संबोधित किया। समिट को संबोधित करते हुए पीएम मोदी ने कहा कि हमारा उद्देश्य वैश्विक दक्षिण की आवाज को बढ़ाना है। उन्होंने कहा कि ये मेरा सौभाग्य है, ''मैं आपका स्वागत इस समिट में कर रहा हूं। मैं आपका धन्यवाद करता हूं कि आप दुनिया के विभिन्न जगहों से इसमें हिस्सा ले रहे हैं। भारत ने हमेशा वैश्विक दक्षिण के अपने भाइयों के साथ अपने विकास संबंधी अनुभव को साझा किया है।'' अपने संबोधन में पीएम मोदी ने कहा कि हमने एक और कठिन वर्ष को पीछे छोड़ दिया जो युद्ध, संघर्ष, आतंकवाद और भू-राजनीतिक तनाव, बढ़ती खाद्य उर्वरक और ईंधन की कीमतों को दर्शाता है। अधिकांश वैश्विक चुनौतियां ग्लोबल साउथ द्वारा नहीं बनाई गई हैं, लेकिन वो हमें अधिक प्रभावित करती हैं। उन्होंने कहा कि भारत ने इस वर्ष अपनी 20 अध्यक्षता शुरू की है, ये स्वाभाविक है कि हमारा उद्देश्य वैश्विक दक्षिण की आवाज को बढ़ाना है वॉयस ऑफ ग्लोबल साउथ समिट में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि हमने विदेशी शासन के खिलाफ लड़ाई में एक-दूसरे का समर्थन किया और हम इस सदी में फिर से एक नई विश्व व्यवस्था बनाने के लिए ऐसा कर सकते हैं जो हमारे नागरिकों के कल्याण को सुनिश्चित करेगी। आपकी आवाज भारत की आवाज है और आपकी प्राथमिकताएं भारत की प्राथमिकताएं हैं। उन्होंने कहा कि वैश्विक मुद्दों को हल करने में संयुक्त राष्ट्र जैसे अंतर्राष्ट्रीय संगठनों की बड़ी भूमिका है।

200 से अधिक हवाई यात्री कोरोना संक्रमित मिले : स्वास्थ्य मंत्री मनसुख मांडविया

(आधुनिक समाचार सेवा)

नई दिल्ली। केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री मनसुख मांडविया ने बुधवार को कहा कि अंतरराष्ट्रीय हवाईअड्डों पर रैंडम सैंपलिंग के दौरान 200 से अधिक हवाई यात्रियों को कोराना पाजिटिव पाया गया। इनमें से कई सैंपल में बीएफ.7 वेरिएंट की पुष्टि हुई है। मांडविया ने एक किताब के विमोचन से इतर कहा, '' 15 लाख से अधिक हवाई

यात्रियों की कोरोना जांच की गई। जिनमें से 200 से अधिक यात्री कोराना पाजिटिव पाए गए। जीनोम सीक्वेंसिंग के लिए भेजे गए उनके सैंपल से पता चला कि कई यात्रियों में बीएफ.7 सब वैरिएंट मिले। हमारे टीके बीएफ.7 वैरिएंट से लड़ने के लिए कारगर हैं। मांडविया ने कहा, ''दुनिया में कोरोना की चौथी लहर के बीच हम हर हवाईअड्डे की निगरानी कर रहे हैं। अब तक 8700 उड़ानों की निगरानी की गई है। उन्होंने कांस्टीट्यूशन क्लब में आशीष चांदोरकर और सूरज सुधीर द्वारा लिखित किताब 'ब्रेविंग ए वायरल स्टार्म' का विमोचन किया। कोरोना के 171 नए मामले मिले केंद्रीय स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय ने बुधवार को बताया कि देश में पिछले 24 घंटों में कोरोना संक्रमण के 171 नए मामले मिले हैं। देश में सक्रिय मामलों की संख्या 2342 है। सक्रिय मामले कुल संक्रमणों का 0.01 प्रतिशत शामिल है। दैनिक सकारात्मकता दर 0.09 प्रतिशत दर्ज की गई, जबकि साप्ताहिक सकारात्मकता 0.11 प्रतिशत है। राष्ट्रव्यापी टीकाकरण अभियान के तहत टीके की कुल 220.15 करोड़ डोज जा चुकी हैं। इस बीच रायटर के अनुसार विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ)ने बुधवार को कहा कि एक्सबीबी सब-वेरिएंट से कोरोना संक्रमण बढ़ सकता है।

बिहार के शिक्षा मंत्री की जीभ काटने वाले को दूंगा 10 करोड़, रामचरितमानस पर विवादित बोल के बाद भड़के संत

(आधुनिक समाचार सेवा)

अयोध्या। बिहार के शिक्षा मंत्री चंद्रशेखर द्वारा रामचरितमानस पर दिए विवादित बयान पर हंगामा हो रहा है। अयोध्या के महंत जगद्गुरु परमहंस आचार्य ने इस पर कड़ी प्रतिक्रिया जहिर की है। उन्होंने

चंद्रशेखर को मंत्री के पद से बर्खास्त करने की मांग की है। जगद्गुरु परमहंस आचार्य ने कहा, ठबिहार के शिक्षा मंत्री ने जिस तरह से रामचरितमानस ग्रंथ को नफरत फैलाने वाली किताब बताया है, उससे पूरा देश आहत है। उनका यह बयान सभी सनातनियों का अपमान है। मैं इस बयान पर शिक्षा मंत्री के खिलाफ कानूनी कार्रवाई की मांग करता हूं। उन्हें पद से बर्खास्त किया जाना चाहिए।ठ जगद्गुरु ने आगे कहा कि चंद्रशेखर को एक हफ्ते के भीतर माफी मांगनी चाहिए। अगर ऐसा नहीं होता है, तो मैं बिहार के शिक्षा मंत्री की जीभ काटने वाले को 10 करोड़ रुपये का इनाम देने की घोषणा करता हूं। परमहंस ने कहा कि इस तरह की टिप्पणी को कतई बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। रामचरितमानस तोड़ने वाला नहीं, जोड़ने वाला ग्रंथ है। रामचरितमानस मानवता की स्थापना करने वाला ग्रंथ है। यह भारतीय संस्कृति का स्वरूप है, यह हमारे देश का गौरव है। रामचरितमानस पर इस तरह की टिप्पणी बर्दाश्त नहीं की जाएगी। बिहार के शिक्षा मंत्री चंद्रशेखर ने बुधवार को नालंदा यूनिवर्सिटी में दीक्षांत समारोह के दौरान विवादित बयान दिया था। उन्होंने कहा था कि मनुस्मृति, रामचरितमानस और बंच आफ थॉट्स जैसी किताबों को जला देना चाहिए। उन्होंने कहा कि इन किताबों ने नफरत फैलाई है और लोगों को सदियों पीछे धकेलने का काम किया है। इतना ही नहीं, शिक्षा मंत्री ने ये भी कहा कि रामचरितमानस में कहा गया है कि निचली जाति के लोग शिक्षा हासिल कर जहरीले हो जाते हैं, जैसे एक सांप दूध पीकर हो जाता है।

पूर्व सीएम कुमारस्वामी ने बीजेपी पर साधा निशाना, कहा सैंट्रो रवि ने खुद को ही बताया बीजेपी का कार्यकर्ता

(आधुनिक समाचार सेवा)

बेंगलुरु। कर्नाटक में अपराधिक बैकग्राउंड से आने वाले सैंट्रो रवि

का मामला अपने चरम पर है। कभी कांग्रेस सैंट्रो रवि के बीजेपी से संबध का दावा करती है तो कभी बीजेपी कांग्रेस पर पलटवार करती है। कर्नाटक में सैंट्रो रवि पर सियासत और आरोप- प्रत्यारोप का दौर जारी है। राज्य के पूर्व मुख्यमंत्री एचडी कुमारस्वामी ने बुधवार को भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) पर निशाना साधते हुए कहा कि मानव तस्करी के आरोपी सैंट्रो रवि का बीजेपी से संबंध है। उन्होंने यह भी दावा किया कि रवि ने आज भाजपा नेताओं के साथ अपनी नजदीकियों के लिए, खुद को भाजपा नेता होने का दावा करते हुए पुलिस को एक पत्र लिखा है। पूर्व सीएम कुमारस्वामी ने कहा कि कुछ दिनों से सुर्खियों में रहे सैंट्रो रवि ने बीजेपी के सक्रिय कार्यकर्ता के तौर पर थाने में कवर लेटर लिखा हैं। इससे पहले जगदीश नाम के व्यक्ति ने राजराजेश्वरी नगर थाने में सैंट्रो रवि के खिलाफ शिकायत दर्ज कराई थी। कुमारस्वामी ने संवाददाताओं से बातचीत की । उन्होंने संवाददाताओं से बात करते हुए कहा कि सैंट्रो रवि ने पुलिस को एक कवर लेटर लिखा है जिसमें उसने खुद को भाजपा का सक्रिय कार्यकर्ता होने का दावा किया। उन्होंने यह भी कहा कि रवि ने कवर लेटर में जिन पुलिस अधिकारियों का तबादला किया गया था उनके बारे में भी लिखा है। बता दें कि पूर्व मुख्यमंत्री ने मौके पर वह कवर लेटर को भी पढ़ा है। कुमारस्वामी ने कवर लेटर पढ़ने के बाद कहा कि इससे क्या संकेत मिलता है वह एक मामले के सिलसिले में पुलिस थाने आया था और उसने ऐसा कवर लेटर लिखा था। कुमारस्वामी ने कवर लेटर में सेंट्रो रवि के हवाले से कहा, मैंने तीन-चार साल तक भाजपा कार्यकर्ता के रूप में काम किया है। मेरे विधायकों और हमारी पार्टी के मंत्रियों के साथ संबंध हैं। इसलिए मैंने कई अधिकारियों का तबादला किया है। कुमारस्वामी ने सत्ताधारी दल पर अपना हमला और तेज करते हुए कहा कि सैंट्रो रवि, साइलेंट सुनील, फाइटर रवि जैसे लोगों के कंधों पर पवित्र भगवा कपड़ा मढ़ा कर बीजेपी भगवा रंग की पवित्रता को खराब कर रही है। कांग्रेस पार्टी ने बीजेपी पर निशाना साधते हुए कहा कि सैंट्रो रवि उर्फ केएस मंजूनाथ का बीजेपी से गहरा नाता है।

बेंगलुरु में निर्माणाधीन मेट्रो पिलर गिरने के मामले में कई अधिकारी हुए निलंबित

(आधुनिक समाचार सेवा)

बेंगलुरु। बेंगलुरु मेट्रो रेल कार्पोरेशन लिमिटेड (बीएमआरसीएल) ने बुधवार को निर्माणाधीन मेट्रो का पिलर गिरने से दो लोगों की मौत के मामले में उप मुख्य अभियंता, कार्यकारी अभियंता और साइट इंजीनियर को निलंबित कर दिया। बीएमआरसीएल ने भारतीय विज्ञान संस्थान (आइआइएससी) से भी स्वतंत्र रूप से मामले की जांच करने और एक रिपोर्ट उपलब्ध कराने का अनुरोध किया है। इस मामले में अज्ञात के विरुद्ध मामला दर्ज किया गया है। इस बीच, घटना की

आपबीती सुनाते हुए मृतक महिला के पति लोहित ने कहा कि हम दोपहिया वाहन से कहीं जा रहे थे। मुझे उन्हें कहीं छोड़ने जा रहा था। लेकिन, यह घटना अचानक हो गई। जैसे ही मैंने पीछे मुड़कर देखा, मेरी पत्नी और बच्चा गिर चुके थे। मैं कुछ नहीं कर सकता था। बाद में दोनों की मौत हो गई। बता दें कर्नाटक की राजधानी बेंगलुरु में मंगलवार को भीषण हादसा हो गया था। यहां के आउटर रिंग रोड में निर्माणाधीन मेट्रो का पिलर गिरने एक महिला और उसकी बेटी की मौत हो गई थी। बताया जाता है कि बेंगलुरु के नागवारा इलाके के पास मंगलवार सुबह एक निर्माणाधीन मेट्रो खंभा गिर गया था। इससे क्षेत्र में यातायात प्रभावित हुआ था। लोग गिरे हुए खंभे को हटाने की कोशिश कर रहे हैं, ताकि यातायात सुगम हो सके। मीडिया रिपोर्टों के अनुसार, महिला और उसकी बेटी दोनों बाइक पर सवार थे। इसी दौरान आउटर रिंग रोड पर पिलर उनके ऊपर गिर गया था , जिससे दोनों की मौत हो गई थी।

एसटीएफ ने एटीएम कार्ड बदलकर तीन सदस्यों को गिरफ्तार किया गया

(आधुनिक समाचार सेवा)

प्रयागराज। एसटीएफ ने एटीएम कार्ड बदलकर खाता खाली करने वाले गिरोह के तीन सदस्यों को गिरफ्तार किया है। इनके कब्जे से नकदी के अलावा एटीएम कार्ड व अन्य सामान बरामद हुआ है। गिरफ्तारी मिर्जापुर के विंध्याचल स्थित गैपूरा से हुई। पुलिस गिरफ्त में आरोपी पकड़े गए बदमाशों में नीरज कुमार यादव, रामू भारतीया व अंशुमान सिंह शामिल हैं। तीनों हंडिया के खपटिहा के रहने वाले हैं। उनके कब्जे से 12 एटीएम कार्ड, दो मोबाइल, एक बाइक व नकदी बरामद हुई है। एसटीएफ के मुताबिक, आरोपियों ने पूछताछ में बताया कि वह एटीएम में रुपये निकालने आए व्यक्ति का धोखे से कार्ड बदल देते हैं। साथ ही चुपके से उसका पिन भी देख लेते हैं। फिर दूसरे प्रदेशों में जाकर एटीएम से रुपये निकाल हैं। एक दिन पहले ही उन्होंने मेजा के उरुवा में एटीएम कार्ड बदलकर एक व्यक्ति के खाते से पांच हजार रुपये उड़ाए थे। इस गिरोह का सरगना रामू है। उस पर 16 मुकदमे दर्ज हैं। तीनों को विंध्याचल थाने में दाखिल किया गया है।

डाकघर में महिला अधिवक्ता से मारपीट, अभद्रता के संबंध में विरोध की एसएसपी कार्यालय पर

(आधुनिक समाचार सेवा)

प्रयागराज। डाकघर में महिला अधिवक्ता से मारपीट, अभद्रता के मामले में कार्रवाई की मांग को लेकर वकीलों ने दूसरे दिन भी प्रदर्शन किया। विरोध में एसएसपी कार्यालय के पास जाम लगा दिया। इससे कचहरी रोड पर शाम चार बजे तक यातायात ठप रहा। सुबह 11 बजे के करीब अधिवक्ता एसएसपी कार्यालय के पास बने तिरोह पर पहुंचे। यहां कार्रवाई की मांग को लेकर जाम लगा दिया। मांग उठाई कि महिला अधिवक्ता से अभद्रता के मामले में पुलिस आरोपियों पर कार्रवाई करे। सुबह शुरू हुआ प्रदर्शन शाम चार बजे तक चलता रहा। इस दौरान अधिवक्ताओं ने साथियों पर हमले का विरोध करते हुए नारेबाजी भी की। इस दौरान अधिवक्ता जेपी पांडेय, वरुण प्रताप सिंह समेत अन्य अधिवक्ता मौजूद रहे। अधिवक्ता भूपेंद्र कुमार श्रीवास्तव पीयूष ने कहा कि अधिवक्ता साथी को इंसाफ नहीं मिलने पर वह भूख हड़ताल करेंगे।

दिव्यांगजनों को दी जाएगी 4 प्रकार की वित्तीय सहायता

(आधुनिक समाचार सेवा)

प्रतापगढ़। जिला दिव्यांगजन सशक्तीकरण अधिकारी सच्चिदानन्द तिवारी ने बताया कि राज्य निधि से वित्तीय सहायता प्रदान किये जाने हेतु शासन द्वारा दिव्यांगजन के हितार्थ 04 प्रकार के वित्तीय सहायता की जायेगी। उन्होंने बताया कि उ0प्र0 के दिव्यांगजन द्वारा बनाये गये चित्रों, हस्तकला आदि सहित उत्पादों को प्रदर्शित करने के लिये प्रदर्शनी एवं कार्यशालाओं हेतु धनराशि सहायता के रूप में उपलब्ध कराना, उ0प्र0 के दिव्यांगजन जिनका खेल, ललितकला, संगीत, नृत्य, फिल्म, थियेटर, साहित्य जैसे क्षेत्रों में उत्कृष्ट प्रदर्शन हो उन्हें राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय आयोजनों में प्रतिभाग किये जाने एवं खेल आयोजन हेतु वित्तीय सहायता, दैनिक जीवन के गतिविधियों को बेहतर बनाने के लिये बैच मार्क दिव्यांगता के व्यक्तियों को उच्च सहायता वाले उपकरण क्रय हेतु वित्तीय सहायता दी जाएगी। उ0प्र0 के दिव्यांगजन जो गम्भीर बीमारियों यथा कैंसर, थैलीसीमिया,प्लास्टिक एनीमिया,बहुस्कोलोरोसिस से ग्रसित हो अथवा आयुष्मान भारत प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना एवं मुख्यमंत्री जन आरोग्य योजना से आच्छादित न हो को चिकित्सा हेतु वित्तीय सहायता दी जायेगी।उन्होंने बताया है कि समस्त संस्था, इच्छुक व्यक्ति अपना लिखित अभिलेख तैयार कर जिला दिव्यांगजन सशक्तीकरण अधिकारी प्रतापगढ़ के कक्ष संख्या-25 में जमा करें।

जनपद न्यायालय में अंशकालीन स्वीपर कम फर्राश की होगी भर्ती ,करें आवेदन

(आधुनिक समाचार सेवा)

प्रतापगढ़। वरिष्ठ सदस्य चयन समिति/अपर जिला एवं सत्र न्यायाधीश कक्ष संख्या-01 जी0 प्रसाद एवं सदस्य चयन समिति/ सिविल जज (सी0डि0) प्रदीप कुमार शुक्ला द्वारा अवगत कराया गया कि जनपद न्यायालय प्रतापगढ़ में 06 अंशकालीन स्वीपर कम फर्राश की भर्ती की जाएगी। इन पदों पर आवेदन करने की शैक्षिक योग्यता कक्षा-6 है एवं नियत मानदेय 6000 रूपये प्रतिमाह हैं। इन पदों पर भर्ती हेतु ऐसे आवेदक जिनकी आयु 18 से 35 वर्ष हो निर्धारित प्रारूप पर अपना आवेदनपत्र, समस्त शैक्षिक प्रमाण पत्र, आयु प्रमाण पत्र, जाति प्रमाण पत्र, निवास प्रमाण पत्र व स्वस्थता प्रमाण पत्र सहित दिनांक 25 जनवरी 2023 को सायं 5 बजे तक जनपद न्यायालय प्रतापगढ़ के प्रशासनिक कार्यालय में प्रशासनिक अधिकारी के पास प्रस्तुत कर सकते हैं। आवेदन पत्र के साथ इस आशय का शपथ पत्र भी दाखिल करना होगा कि आवेदक के विरूद्ध किसी भी न्यायालय में न तो कोई अभियोग पंजीकृत हुआ है और न ही कोई आपराधिक वाद लम्बित है तथा न ही किसी मामले में दोषमुक्त अथवा दोषसिद्ध किया गया है। निर्धारित समय एवं तिथि के पश्चात् प्राप्त हुये आवेदनों पर कोई विचार नहीं किया जायेगा। निर्धारित आवेदन पत्र का प्रारूप जनपद न्यायालय प्रतापगढ़ के प्रशासनिक कार्यालय से प्राप्त किया जा सकता है।

श्रद्धालुओं/स्नानार्थियों के सुरक्षा के दृष्टिगत जिला नाविक संघ प्रयागराज के पदाधिकारियों/नाविकों के साथ की बैठक

(आधुनिक समाचार सेवा)

प्रयागराज। पुलिस आयुक्त प्रयागराज श्री रमित शर्मा द्वारा माघ मेला क्षेत्र संगम क्षेत्र स्थित कार्यालय जिला नाविक संघ प्रयागराज में नाविक संघ के पदाधिकारियों/ नाविकों के साथ मीटिंग आहूत की गयी। आयुक्त महोदय द्वारा माघ मेला में देश के विभिन्न क्षेत्र से आने वाले श्रद्धालुओं/स्नार्थियों की सुरक्षा के दृष्टिगत सभी नाविकों निर्देशित किया कि वह अपनी-अपनी नावों में क्षमता से अधिक व्यक्तियों को कदापि नही बैठायेगें क्योंकि क्षमता से अधिक व्यक्तियों को बैठाकर नौ-संचालन करने में दुर्घटना की संभावना से इंकार नही किया जा सकता है। इसी क्रम में सभी नाविकों के निर्देशित करते हुये कहा कि वे नावों में बैठने वाले सभी वक्तियों को लाइफ सेविंग जैकेट्स पहनाना सुनिश्चित करेगें जिसके की दुर्घटना की स्थित में किसी भी व्यक्ति को डूबने से बचाया जा सके। कोई भी नाविक नौ-संचालन करते समय शराब आदि के नशे में नही होना चाहिये तथा इसके साथ ही समस्त नाविक यह सुनिश्चित करेंगे कि नाव में बैठने वाला कोई भी व्यक्ति शराब इत्यादि का सेवन न किया हो, ना ही नाव में बैठकर इस तरह का कृत्य करे। उक्त बैठक में वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक माघ मेला श्री राजीव नारायण मिश्र, पुलिस अधीक्षक माघ मेला श्री आदित्य कुमार शुक्ल, क्षेत्राधिकारी जल पुलिस श्री दिनेश सिंह यादव, प्रभारी एस0डी0आर0एफ0, कम्पनी कमांडर पी0ए0सी0 (बाढ़) व अन्य सम्बन्धित अधिकारी/ कर्मचारीगण आदि उपस्थित रहे।

जिलाधिकारी एवं मेलाधिकारी ने मेला क्षेत्र का किया निरीक्षण

(आधुनिक समाचार सेवा)

प्रयागराज। जिलाधिकारी संजय कुमार खत्री एवं मेलाधिकारी अरविंद चैहान ने बुधवार को मेला क्षेत्र का निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान उन्होंने राहत शिविरों का निरीक्षण कर वहां पर कम्बल, बेड सीट सहित साफ-सफाई को देखा। तत्पश्चात स्वास्थ्य शिविर में दवाओं की उपलब्धता तथा देखे जाने वाले मरीजों की सूची को भी देखा तथा निर्देशित किया कि किसी भी श्रद्धालुओं को कोई समस्या न आये। जिलाधिकारी ने कोविड के दृष्टिगत माघ मेला क्षेत्र में सभी आवश्यक व्यवस्थायें सुनिश्चित रखने के निर्देश दिए है। इसके साथ ही उन्होंने माघ मेला में साफ-सफाई, पानी, बिजली, चकर्ड प्लेट सहित अन्य कार्यों का जायजा लिया। इस अवसर पर मुख्य राजस्व अधिकारी कुंवर पंकज सहित सभी सम्बंधित अधिकारीगण उपस्थित रहे।

खाकचौक के संतों ने किया मेले में प्रदर्शन

(आधुनिक समाचार सेवा)

प्रयागराज। माघ मेले में खाकचौक व्यवस्था समिति के सदस्यों ने प्रदर्शन किया। प्रधानमंत्री महामंडलेश्वर संतोष दास 'सतुआ बाबा पर आरोप लगाकर संतों ने 2023-24 के मेले में समिति के बजाए प्रशासन जमीन व सुविधाओं को बांटे। संतों ने आरोप लगाया कि यहां की समिति विवादित है। साथ ही समिति के बाइलाज पर चर्चा कर रजिस्ट्रार चिट्स फंड सोसायटी के खिलाफ भी प्राथमिकी दर्ज कराने के लिए कहा। खाकचौक के ब्रह्मलीन संतों की वरासत दर्ज कराने और 2022-23 में जमीन आवंटन में गड़बड़ी करने वालों के खिलाफ कार्रवाई की मांग की। प्रदर्शन स्वामी बृज मोहन दास, सीता राम दास और मणि राम छावनी के रामेश्वर दास की अगुआई में किया गया। मेलाधिकारी कार्यालय पहुंचे संतों ने जमकर नारेबाजी की और कहा कि मांगें पूरी न होने पर संत आंदोलन की राह पकड़ेंगे।

युवा अपने लक्ष्य का निर्धारण कर नई ऊर्जा के साथ आगे बढ़े-अपर जिला जज

(आधुनिक समाचार सेवा)

प्रतापगढ़। जनपद न्यायाधीश प्रदीप कुमार सिंह के आदेश के क्रम में राष्ट्रीय युवा दिवस के अवसर पर चिन्तामणि स्मारक विधि महाविद्यालय गोड़े में विधि छात्रों को सम्बोधित करते हुये अपर जिला जज/सचिव जिला विधिक सेवा प्राधिकरण नीरज कुमार बरनवाल ने कहा कि युवा अपने लक्ष्य का निर्धारण कर नई ऊर्जा के साथ आगे बढ़े, अपने अधिकारों के बारे में जाने साथ ही वंचित समुदाय एवं कमजोर लोगों को कानूनी रूप से जागरूक करें।उन्होंने कहा कि स्वामी विवेकानन्द जी का कथन था कि उठो, जागो और आगे बढ़ो और तब तक संघर्ष करते रहो जब तक सफलता प्राप्त न हो जाये इसे युवाओं को आत्मसार करने की जरूरत है।उन्होंने युवाओं को भारतीय संविधान के अनुच्छेद 39ए के अन्तर्गत निःशुल्क विधिक सहायता से सम्बन्धित प्रावधानों के बारे में जानकारी दी।दिनांक 11 फरवरी 2023 को आयोजित राष्ट्रीय लोक अदालत के बारे में जानकारी देते हुये बताया कि आपसी सुलह समझौते के आधार पर मामलों को राष्ट्रीय लोक अदालत के माध्यम से निस्तारण कराया जा सकता है। इस अवसर पर वरिष्ठ पैनल अधिवक्ता जेल विजिटर विश्वनाथ प्रसाद त्रिपाठी ने कहा कि युवा हमारे देश की शक्ति है, इसे अच्छे संस्कार एवं अच्छे व्यवहार के द्वारा देश हमारा और प्रगति करेगा, आज के दिन स्वामी विवेकानन्द जी के विचारों से लोग प्रेरणा लेते है। इस अवसर पर महाविद्यालय के कार्यक्रम अधिकारी डा0 हरिशंकर सिंह ने कहा कि स्वामी विवेकानन्द जी युवाओं के प्रेरणा स्रोत है जिनकी जयन्ती के उपलब्ध में राष्ट्रीय युवा दिवस का आयोजन किया जाता है। महाविद्यालय के प्राचार्य नीलम पाण्डेय ने सभी के प्रति आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के पीएलवी राम प्रकाश पाण्डेय ने किया। इस अवसर पर छात्रा दृष्टि सिंह, अविरल मिश्र, नितिन सिंह, मो0 अजहर ने अपने-अपने विचार व्यक्त किये। कार्यक्रम में रविशंकर मिश्र, अमन त्रिपाठी, अजय सिंह, डा0 हरिशंकर सिंह, रवि पाण्डेय, आदित्य ओझा, अनिल उपाध्याय, प्रियंका शाही, अनिल वर्मा, विनोद कनौजिया आदि लोग मौजूद रहे।

अतीक अहमद के बेटे अली को मिली जमानत

(आधुनिक समाचार सेवा)

प्रयागराज। पूर्व सांसद अतीक अहमद के बेटे अली अहमद की अर्जी को न्यायिक मजिस्ट्रेट की अदालत ने स्वीकार करते हुए जमानत मंजूर कर ली। साथ ही यह शर्त लगा दी कि 20 हजार रुपए के दो जमानत बंधपत्र एवं इतनी ही राशि का एक निजी बंधपत्र दाखिल करने पर रिहा किया जाए। यह आदेश न्यायिक मजिस्ट्रेट शालिनी विधेय ने आरोपित अली अहमद की जमानत अर्जी पर अधिवक्ता राधेश्याम पांडेय, खान शौलत हनीफ व आरबी सिंह सहित अभियोजन अधिकारी के तर्कों को सुन कर दिया। न्यायालय ने कहा कि आरोपित को मुकदमे की विवेचना के दौरान गिरफ्तार किया गया है, अब उसके विरुद्ध न्यायालय के समक्ष आरोप पत्र प्रस्तुत कर दिया गया है। इसके पश्चात वह न्यायिक अभिरक्षा में जेल में बंद है। आरोपपत्र भारतीय दंड संहिता की धारा 295 ए एवं505 (2) व 506 के अंतर्गत प्रस्तुत किया गया है जबकि दंड प्रक्रिया संहिता की धारा 196 (1), (1ए) में अभियोजन चलाए जाने हेतु अभियोजन अनुमति आवश्यक है। पत्रावली पर ऐसी अनुमति नहीं है, इसलिए ऐसी स्थिति में आईपीसी की धारा 295 ए एवं 505 दो के अंतर्गत संज्ञान नहीं लिया जा सकता। मात्र आईपीसी की धारा 506 के अंतर्गत संज्ञान लिया जाता है। न्यायालय ने इसी निष्कर्षों के साथ आरोपित अली अहमद की जमानत अर्जी स्वीकार कर लिया गौरतलब है कि अली अहमद के विरुद्ध प्रयागराज के करेली थाने पर 2021 में एक मुकदमा पंजीकृत किया गया था।

भारत तिब्बत सहयोग मंच, प्रयागराज युवा प्रकोष्ठ द्वारा आयोजित हुआ स्वामी विवेकानन्द जी की जयंती समारोह एवं बैठक

(आधुनिक समाचार सेवा)

प्रयागराज। श्री स्वामी विवेकानन्द जयंती के उपलक्ष्य पर भारत तिब्बत सहयोग मंच काशी प्रांत , प्रयागराज (युवा प्रकोष्ठ के बैनर तले, श्री विवेकानंद जी की जयंती का आयोजन पं0 विजेन्द्र पाठक, महामंत्री भारत तिब्बत सहयोग मंच के नेतृत्व में किया गया ततपश्चात एक महत्वपूर्ण बैठक का आयोजन किया गया जिसके अंतर्गत उपस्थित सभी कार्यकर्ताओं से परिचय प्राप्त करते हुए मंच के राष्ट्रीय स्तर पर चलाये जा रहे चीन के विरुद्ध तिब्बत की आजादी एवं कैलाश मानसरोवर की मुक्ति सहित भारत की सुरक्षा जैसे विषयों पर मार्गदर्शन प्रदान करते हुए कहा कि मंच अपने राष्ट्र की सुरक्षा एवं चीन के द्वारा भारत के प्रति किये जा रहे अनैतिक क्रिया कलापों के प्रति मंच के माध्यम से इस वैचारिक मंच के जनांदोलन को और गति प्रदान करने पर बल देने की बात कही तथा संगठन की वर्तमान गतिविधियों पर प्रकाश डाला तथा आगामी कार्यक्रमों की दिशा निर्देश भी प्रदान किये। साथ ही सदस्यता तथा जागरूकता अभियान पर जोर देने को कहा गया,इस बैठक में मुख्य रूप से प्रयागराज युवा प्रकोष्ठ के जिला महामंत्री विजेन्द्र पाठक जी,जिला प्रचार प्रमुख अजय मिश्रा जी, जिला उपाध्यक्ष शुभम दुबे, श्रीमान अभयराज मिश्रा जी, एडवोकेट रितेश मिश्रा जी, श्रीमान जितेंद्र तिवारी जी, आदर्श आज़ाद पासवान जी, वैभव सिंह, सहित अन्य कार्यकर्ताओं की उपस्थिति रही।

जिलाधिकारी ने कार्यों की धीमी प्रगति पर जेएमसी के प्रोजेक्ट मैनेजर को लगायी फटकार

(आधुनिक समाचार सेवा)

प्रतापगढ़। जिलाधिकारी डा0 नितिन बंसल ने कैम्प कार्यालय के सभागार में जल जीवन मिशन के अन्तर्गत ग्रामीण क्षेत्रों को पाइप पेयजल योजना से आच्छादित करने हेतु ग्रामीण पाइप पेयजल योजनाओं के निर्माण कार्यो एवं डी0पी0आर0 स्वीकृति के सम्बन्ध में समीक्षा के के दौरान जेएमसी के प्रोजेक्ट मैनेजर को कार्यों में धीमी प्रगति के लिए जमकर फटकार लगाई। बैठक में अधिशासी अभियन्ता जल निगम ने बताया कि जल जीवन मिशन के अन्तर्गत फर्म मेसर्स पावर मेक प्रोजेक्ट लि0 द्वारा फेज-3 के अन्तर्गत आवंटित राजस्व ग्रामों के सापेक्ष 80 राजस्व ग्रामों हेतु निर्मित 32 नग डीपीआर जिला पेयजल एवं स्वच्छता मिशन द्वारा राज्य पेयजल एवं स्वच्छता मिशन को अग्रसारित किया जाना है। बैठक में मेसर्स पावर मेक प्रोजेक्ट लिमिटेड के 32 नग डीपीआर की स्वीकृति प्रदान की। जिलाधिकारी ने नाराजगी व्यक्त करते हुये जेए मसी के प्रोजेक्ट मैनेजर को निर्देशित किया कि परियोजनाओं के कार्यो की प्रगति बढ़ायें इसमें किसी भी स्तर पर लापरवाही न बरती जाये।बैठक में बताया गया कि मेसर्स पावर मेक प्रोजेक्ट के जनपद में 70 स्थानों एवं जेएमसी के 135 से अधिक स्थानों पर परियोजनाओं का कार्य चल रहा है। अधिशासी अभियन्त जल निगम ने बताया कि 55 स्थानों पर खारा पानी मिला है जिस पर जिलाधिकारी कमेटी बनाकर आवश्यक कार्यवाही करने हेतु निर्देशित किया। जिलाधिकारी ने अधिशासी अभियन्ता जल निगम व जेएमसी एवं पावर मेक के प्रोजेक्ट मैनेजर को निर्देशित किया कि निर्माणाधीन पेयजल परियोजना से सम्बन्धित किसी विभाग की यदि कोई समस्या हो तो उसे आपसी समन्वय स्थापित करते हुये उसका निराकरण करायें, पेयजल से जुड़ी परियोजनाओं एवं कार्यो को किसी भी स्तर पर लम्बित न रखा जाये। जमीन से सम्बन्धित विवादों का निराकरण क्षेत्रीय लेखपाल के साथ बैठक कर जल्द से जल्द निस्तारण करायें। उन्होने जेएमसी एवं पावर मेक के प्रोजेक्ट मैनेजर को स्पष्ट रूप से निर्देशित किया कि पेयजल परियोजनाओं के निर्माण एवं संचालन के कार्य को गुणवत्ता एवं मानक के अनुरूप कराया जाये। उन्होने कहा कि सरकारी भवनों यथा प्राथमिक विद्यालय, आंगनबाड़ी केन्द्र, पंचायत भवन, हेल्थ एवं वेलनेस सेन्टर आदि को पेयजल परियोजना की पाइप से अनिवार्य रूप से सम्बद्ध किया जाये।बैठक में मुख्य विकास अधिकारी ईशा प्रिया, जिला विकास अधिकारी ओम प्रकाश मिश्र, अधिशासी अभियन्ता जल निगम लोकेश शर्मा, जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी भूपेन्द्र सिंह, जिला पंचायत राज अधिकारी रविशंकर द्विवेदी सहित कार्यदायी संस्था के प्रोजेक्ट मैनेजर उपस्थित रहे।

इलाहाबाद हाईकोर्ट ने लिया बड़ा निर्णय चयनितों को अगली सुनवाई तक ना हटाएं

(आधुनिक समाचार सेवा)

प्रयागराज। उत्तर प्रदेश में सहायक प्रोफेसर भर्ती परीक्षा में बैठे उम्मीदवारों के लिए राहत की खबर सामने आयी है। इलाहाबाद हाई कोर्ट ने उच्चतर शिक्षा सेवा चयन आयोग प्रयागराज की सहायक प्रोफेसर भर्ती परीक्षा के संशोधित परिणाम की चुनौती याचिका पर आयोग से जवाब मांगा है। साथ ही पहले जारी हुए परिणाम के तहत चयनित अभ्यर्थियों को अगली सुनवाई तक सेवा से न हटाने का निर्देश दिया है। यह आदेश न्यायमूर्ति मनोज मिश्रा तथा न्यायमूर्ति विकास बुधवार की खंडपीठ ने अभिषेक कुशवाहा व आठ अन्य, राजेश कुमार व अन्य, उमेश चंद्र तिवारी व तीन अन्य की याचिकाओं की सुनवाई करते हुए दिया है। खंडपीठ ने कहा कि यह बताया जाए कि किन परिस्थितियों में परिणाम संशोधित करना पड़ा है। दाखिल तीन याचिकाओं की अगली सुनवाई 13 फरवरी को होगी। उत्तर प्रदेश उच्चतर शिक्षा सेवा आयोग ने पिछले दिनों विज्ञापन संख्या 50 के तहत असिस्टेंट प्रोफेसर के चार विषयों शारीरिक शिक्षा, संस्कृत, अर्थशास्त्र और गणित का अंतिम संशोधित परिणाम जारी कर दिया है।

गरीबों का सेवा करना ही मानव का सबसे बड़ा धर्म -संजय उर्फ संदीप

(आधुनिक समाचार सेवा)
हरहुआ /वाराणसी। गरीबों व असहायों का मदद करना सबसे बड़ा धर्म होता है उक्त बातें गनेशपुर शिवपुर विधानसभा के सभासद प्रत्याशी व समाजवादी पार्टी जिला सचिव संजय उर्फ संदीप यादव ने कड़ाके की ठंड को देखते हुए। आज खरगपुर व बांसदेवपुर गांवों में जाकर इनर व सोटर , टोपी सैकड़ों गरीबों और असहायों में वितरण किए। गर्म कपड़ा पाते ही गरीबों का चेहरा खिल उठा। वहीं संजय उर्फ संदीप ने बताया कि गरीबों का सेवा करना ही मनुष्य का सबसे बड़ा धर्म होता है। उन्होंने यह भी कहा कि हर नेताओं और समाजसेवियों को गरीबों और असहायों का मदद करने चाहिए। वितरण में मौजूद लोहिया वाहिनी के प्रदेश सचिव महेश यादव, अभिषेक, सर्वेश यादव समाजसेवी, राजेश गौड़ अमित इत्यादि लोग उपस्थित रहे।

मुख्य विकास अधिकारी ने आकांक्षात्मक विकास खण्डों में स्वास्थ्य एवं बाल विकास पर ध्यान देने का दिया निर्देश

(आधुनिक समाचार सेवा)
मीरजापुर ।12 जनवरी 2023- मुख्य विकास अधिकारी श्रीलक्ष्मी वीएस की अध्यक्षता में विकास भवन सभागार में आकांक्षात्मक विकास खण्डों की समीक्षा बैठक में सर्वप्रथम गत माह की बैठक में दिये गये निर्देशों का अनुपालन की समीक्षा की गयी। तदुरान्त स्वास्थ्य एवं पोशण के अन्तर्गत ग्रामीण क्षेत्रों में बेहतर स्वास्थ्य व्यवस्था मुहैया कराने हेतु प्रत्येक ग्राम पंचायतों में शत् प्रतिषत आशाओं का चयन एक माह के अन्दर कराने हेतु अपर मुख्य चिकित्साधिकारी को निर्देषित किया गया। प्रत्येक आकांक्षात्मक विकास खण्डों में चिह्नित 20-20 अति कुपोषित (सैम) बच्चों को समुदाय स्तर पर पोशण पोटली प्राप्त कराते हुए उनकी साप्ताहिक रूप से ऑगनबाड़ी कार्यकत्री एवं आशा के माध्यम से नियमित अनुश्रवण करते हुए उन्हें स्वस्थ्य करने का निर्देश दिया गया। साथ ही ऐसे बच्चों के परिजनों को षासन द्वारा संचालित सेवाऐं (पेंषन, राषन कार्ड, मनरेगा आदि) से आच्छादित करने का भी निर्देश दिया गया। बैठक में यूनीसेफ समन्वयक द्वारा बताया गया कि एम.सी.पी. कार्ड पर गर्भवती महिलाओं से सम्बन्धित सूचना एवं बच्चों का ग्रोथ चार्ट अपडेट नहीं किया जा रहा है, जिसके सम्बन्ध में अपर मुख्य चिकित्साधिकारी एवं जिला कार्यक्रम अधिकारी को निर्देशित किया गया कि एएनएम एवं आंगनबाड़ी को प्रशिक्षित करते हुए एम.सी.पी. कार्ड को अपडेट कराना सुनिश्चित करें, ताकि महिलाओं एवं बच्चों के स्वास्थ्य सुधार का आकलन हो सकें। ग्राम स्वास्थ्य स्वच्छता एवं पोषण समिति की बैठकों में ग्राम प्रधान की उपस्थित सुनिश्चित करने हेतु खण्ड विकास अधिकारियों एवं सहाक विकास अधिकारी (पंचायत) को निर्देषित किया गया।प्रत्येक शुक्रवार को आयोजित

होने वाले ग्राम चैपालों में आयुश्मान कार्ड बनाने हेतु आशा, ऑगनबाड़ी एवं पंचायत सहायक के माध्यम से शत् प्रतिशत पात्र लाभार्थियों का कार्ड बनवाने हेतु निर्देश दिये गये। अपर मुख्य चिकित्साधिकारी को निर्देशित किया गया कि आकांक्षात्मक विकास खण्डों में डाग्लोनोसिन सेन्टरों को क्रियाशील कराये एवं नवीन प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों में चिकित्सक का उपस्थित कराना सुनिश्चित करें, जिसका अनुश्रवण सम्बन्धित खण्ड विकास अधिकारियों द्वारा किया जाय। पशु चिकित्साधिकारी को निर्देशित किया गया कि आकांक्षात्मक विकास खण्डों में अनिवार्य रूप से पशुधन प्रसार अधिकारी की तैनाती करायें। जिला विकास अधिकारी/उपायुक्त (स्वतरू रोजगार) को निर्देशित किया गया कि आकांक्षात्मक विकास खण्डों में स्वयं सहायता समूह की महिलाओं को ब्यूटिशियन एवं अन्य लोगों को आरसेटी के माध्यम से प्रशिक्षण दिलाया जाना सुनिश्चित करें। बैठक में परियोजना निदेशक अनय मिश्रा, जिला ग्राम्य विकास अभिकरण, जिला विकास अधिकारी/उपायुक्त (स्वतः रोजगार) श्रवण कुमार राय,जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी गौतम प्रसाद, जिला समाज कल्याण अधिकारी गिरीश चन्द्र, जिला अर्थ एवं संख्याधिकारी शशिकान्त, अपर मुख्य चिकित्साधिकारी, जिला पंचायत राज अधिकारी अरविन्द कुमार, जिला कार्यक्रम अधिकारी वाणी वर्मा, जिला प्रबंधक कामन सर्विस सेन्टर, आकांक्षात्मक विकास खण्डों के खण्ड विकास अधिकारी, सहायक विकास अधिकारी (पंचायत), मुख्यमंत्री फेलों द्वारा प्रतिभाग किया गया।

बनारस से डिब्रूगढ़ की रोमांचक अदभुत यात्रा आज से

(आधुनिक समाचार सेवा)
वाराणसी।दुनिया की सबसे लंबी यात्रा पर निकलने वाले रिवर क्रूज एमवी गंगा विलास को आज प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी वीडियो कांफ्रेंसिंग के जरिए रवाना करेंगे। यह 52 दिन में करीब 3200 किमी की दूरी तय कर डिब्रूगढ़ पहुंचेगा। फाइव स्टार सुविधा और आधुनिक तकनीक से युक्त जलयान का सफर कई मायने में वैश्विक स्तर के मापदंडों पर खरा उतरता है। लिहाजा, इसमें सफर करने वाले विदेशी सैलानी भी सुविधाओं को लेकर काफी संतुष्ट हैं। आइए जानते हैं काशी से डिब्रूगढ़ तक गंगा विलास के सफर की खासियत जलयान में 36 पर्यटक एक साथ यात्रा कर सकते हैं। पहले सफर में वाराणसी से स्विट्जरलैंड के कुल 32 पर्यटक यात्रा करेंगे। इसमें से 10 पर्यटक कोलकाता में उतर जाएंगे और स्विट्जरलैंड के ही इतने नए यात्री वहां आगे के सफर के लिए जुड़ जाएंगे। यात्रा के दौरान जलयान में भारतीय व्यंजन विदेशी सैलानियों को परोसा जाएगा। इस दौरान वाराणसी की जलेबी- कचोरी और चाट, बिहार की बाटी- चोखा तो बंगाल में जलयान के पहुंचते ही भुजिया चावल भी जायके में शामिल होगा। इसके अतिरिक्त नाश्ते में चूड़ा- मटर, इडली, सांभर, चाय-कॉफी आदि पर्यटकों को परोसे जाएंगे। 40 कर्मचारियों से युक्त गंगा विलास जलयान कोलकाता में 18 माह में बनकर तैयार हुआ था। जलयान पूरी तरह भारतीय राज्य से साज-सज्जा संयुक्त है। इसमें शयनयान, किचन, जिम, रेस्टोरेंट, सैलून, गीत संगीत, चिकित्सा, ओपन स्पेस सहित इसमें सभी तरह की आधुनिक सुविधाएं हैं। भारत में 25 हजार रुपये और बांग्लादेश में 50 हजार रुपये प्रति दिन किराया है। आते समय (अपस्ट्रीम) लगभग 12 किलोमीटर और जाते समय (डाउनस्ट्रीम) लगभग 20 किलोमीटर प्रति घंटा की गति से सफर तय होगा। आधुनिक सुविधाओं से युक्त स्क्रूज यात्रा का रूट वाराणसी और गाजीपुर होते हुए बक्सर से पटना, मुंगेर और भागलपुर की सुल्तानपुर, बंगाल से बांग्लादेश होते हुए डिब्रूगढ़ तक होगा। इस दौरान अलग-अलग शहरों में इसका लगभग 50 जगहों पर ठहराव होगा। जलयान के अत्याधुनिक उपकरण गंगा को प्रदूषित होने से बचाने के साथ ही पर्यावरण स्वच्छ रखने में मददगार है। जलयान में पानी के लिए आरओ और एसटीपी प्लांट लगा है, ताकि दूषित पानी गंगा में न जाए। इसके अतिरिक्त प्लास्टिक का भी प्रयोग नहीं किया जाता है। प्रदूषण और शोर रहित प्रणाली से सफर के साथ नदी का इको सिस्टम भी प्रभावित नहीं होगा। अंतर जलयान के डायरेक्टर राज सिंह ने बताया कि जलयान में वाराणसी से 32 पर्यटक सवार होकर पहली बार इस यात्रा का आनंद लेंगे।

जन सुनवाई हेतु ग्राम चौपाल का आयोजन 13 जनवरी को

(आधुनिक समाचार सेवा)
मीरजापुर । आयुक्त ग्राम्य विकास ने ग्राम चौपाल का आयोजन किये जाने का निर्देश दिया गया। उक्त के तहत दिनांक 13 जनवरी 2023 को विधानसभा मझवा के विकास खण्ड पहाड़ी में ग्राम पंचायत बेदौली कला, इमिरिती, विकास खण्ड मझवा में महामलपुर, करसड़ा, विधानसभा मझवा नगर विकास खण्ड सिटी के ग्राम पंचायत पड़रा हनुमान, सिरसी बहरवार, विधानसभा नगर के विकास खण्ड कोन में भोगांव, चन्देलडढ़िया, विधानसभा छानबे विकास खण्ड छानबे के ग्राम पंचायत गोगांव, अकोढ़ी, विकास खण्ड लालगंज में पतुलकी, बसही कला, विकास खण्ड हलिया में हलिया, बरी, विधानसभा मड़िहान विकास खण्ड पटेहरा कला में मरचा, ककरद, विकास खण्ड राजगढ़ में ददरा, पतेरी, विधानसभा चुनार विकास नरायनपुर में परशुरामपुर, बैंकुंठपुर, विकास सीखड़ में शिल्पी, पचराव, विकास खण्ड जमालपुर भुईली खास, हिनौती माफी में चौपाल का आयोजन किया हहग् जायेगा। ग्राम चौपाल हेतु चयनित ग्राम पंचायत को मा0 सांसद/मा0 विधायकगण के सुझाव के अनुसार परिवर्तन सम्भव हैं।

वाराणसी में बोले सीएम योगी- पीएम देश को जोड़ने में जुटे हैं, कुछ तोड़ने का रच रहे षडयंत्र

(आधुनिक समाचार सेवा)
वाराणसी। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ गुरुवार को गुरुधाम स्थित राममंदिर में आयोजित श्रीमद्जगद्गुरु रामानंदाचार्य के 723वें जयंती समारोह में शामिल हुए। कहा कि आज पीएम मोदी के नेतृत्व में देश को जोड़ने वाली ताकत काम कर रही है, जिसमें बिना भेदभाव के समाज के हर तबके को योजनाओं का लाभ देने का प्रयास हो रहा है। देश को आतंकवाद, नक्सलवाद, अराजकता से मुक्त करने का हो रहा कार्य भारत के सांस्कृतिक मूल्यों और आध्यात्मिक वैभव को वैश्विक स्तर पर पहचान दिलाने के संग आतंकवाद, नक्सलवाद, अराजकता से देश को मुक्त करने का कार्य हो रहा है। वहीं दूसरी तरफ कुछ लोग देश को तोड़? के नाम पर षडयंत्र रच रहे हैं। जाति, क्षेत्र और भाषा के नाम पर समाज को तोडे में जुटे हैं। हमें ऐसे तत्वों से सावधान रहना होगा।मुख्यमंत्री ने कहा कि सात सौ साल पहले साधना की ऊंचाइयों को प्राप्त करने वाले श्रीमदुरु रामानंदाचार्य ने हर परंपरा को, फिर चाहे वो सगुण हो या निर्गुण, सभी को जोड़कर मध्यकाल के आक्रांताओं को भक्ति के माध्यम से मुंहतोड़ जवाब दिया था। इसी कारण आज का भारत बचा हुआ है। यह कार्यक्रम ऐसे अवसर पर आयोजित हो रहा है, जब देश आजादी का 75 वर्ष पूर्ण कर रहा है। प्रधानमंत्री ने पंचप्रण की बात की है, इसमें एक प्रण है गुलामी के अंशों को सर्वथा समाप्त करना। विरासत के प्रति सम्मान का भाव पैदा करना। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि जगद्गुरु रामानंदाचार्य ने एक संदेश दिया था, जाति-पाति पूछे नहीं कोई, हरि को भजे सो हरि का होइ। जगद्गुरु रामानन्दाचार्य ने जो कुछ भी किया लोक कल्याण के लिए किया। उस काल खंड में जब बर्बर हमले हो रहे थे। धर्म असुरक्षित था, समाज में वैमनस्यता के बीज बोए जा रहे थे। तब उन्होंने समाज के अलग अलग समूहों को जोड़कर अद्भुत कार्य किया था। भक्ति की सभी परंपराओं को जोड़कर अलग अलग जगह अपने विशिष्ट और उत्कृष्ट शिष्यों को भेजकर समाज को एक सूत्र में पिरोने का कार्य किया।

देह व्यापार की सूचना पर रेस्टोरेंट में छापेमारी

(आधुनिक समाचार सेवा)
वाराणसी। वाराणसी जिले के भट्ठी गांव स्थित रेस्टोरेंट में जिस्मफरोशी के धंधे की सूचना पर एसीपी रोहनिया के नेतृत्व में महिला पुलिस के साथ छापेमारी हुई। इस दौरान पुलिस ने 20 लोगों को जुआ खेलते हुए और एक केबिन से दो युवतियों और युवक को संदिग्ध अवस्था में पकड़ा। युवतियों को पुलिस ने अभिभावकों को बुलाकर सौंप दिया। वहीं, पकड़े गए अन्य लोगों को थाने पर ले आई। उनको छुडाने के लिए तथाकथित पत्रकार व रसूखदारों की भीड़ लगी रही। भट्ठी गांव में 'दिल गार्डेन' नामक एक रेस्टोरेंट है। इसका संचालन वहीं के दो लोग करते हैं। पुलिस को सूचना मिली कि रेस्टोरेंट में बड़े पैमाने पर जुआ होता है और रैकेट भी चलता है। अधिकारियों के निर्देश पर दो पुलिसकर्मी सादे वेश में

रेस्टोरेंट में गए और वहां बैठकर जुआ खेलने लगे। इस बीच एक ने वहीं से फोन कॉल कर पहले से तैयार पुलिस को सूचना दी। इसके बाद पुलिस टीम ने छापेमारी की। मौके से शराब की बोतल, ताश की गड्डी और दो लाख नकद मिले। जब पुलिस ने अन्य केबिन की तलाशी लेना शुरू की तो दो जोड़े संदिग्ध अवस्था में मिले। रेस्टोरेंट के मैनेजर संदेश सिंह को भी हिरासत में लिया गया। थानाध्यक्ष राजकुमार पांडेय ने बताया की मौके से पकड़ी गई लड़कियों को उनके अभिभावकों को बुलाकर सौंप दिया गया। युवतियों संग छेड़खानी के आरोप में बड़ागांव पुलिस की एंटी रोमियो टीम ने चिलबिला गांव के समरजीत को गिरफ्तार किया है। टीम की प्रभारी सब इंस्पेक्टर भारती गुप्ता के अनुसार क्षेत्र की एक युवती ने उसके खिलाफ शिकायत दर्ज कराई है। आरोप लगाया है कि आरोपित युवतियों को देखकर डीजे पर अश्लील गाना बजाता है और फब्तियां कसता है।

ट्रेलर से कुचलकर बाइक सवार सास और गर्भवती बहू की मौत

(आधुनिक समाचार सेवा)
वाराणसी। यूपी के वाराणसी जिले से सड़क हादसे की दुखद खबर सामने आयी है। क्षेत्र के मोहनसराय स्थित नेशनल हाईवे पर गुरुवार की सुबह ट्रेलर से कुचल कर बाइक सवार सास व गर्भवती बहू की मौत हो गई। वहीं, बाइक चला रहा युवक मामूली रूप से घायल हो गया। हादसे की जानकारी मिलते ही मृतक के स्वजन में मातम पसर गया। सूचना के बाद पहुंचे चौकी प्रभारी शिवानंद सिसोदिया अग्रिम कार्रवाई में जुट गए। जानकारी के मुताबिक बंदेपुर, रोहनिया निवासी सुनील कुमार पटेल बाइक से अपनी मां 50 वर्षीय शुभवंती देवी और 27 वर्षीय गर्भवती पत्नी मानसी देवी को लेकर मोहनसराय अल्ट्रासाउंड कराने जा रहे थे। इसी दौरान पीछे से आए एक ट्रेलर ने टक्कर मार दी। इससे बाइक पर बैठी सास व बहू सड़क की ओर गिर पड़ीं। इसके बाद ट्रेलर सास व बहू को कुचलते हुए भाग निकला। सुनील बाइक सहित दूसरी तरफ जा गिरे जिससे मामूली चोट आई। अपने सामने मां व पत्नी को दम तोड़ते देख सुनील बेसुध हो गए। प्राप्त जानकारी के मुताबिक सुनील पटेल सात भाइयों में पांचवे नंबर पर हैं। सुनील व गर्भवती पत्नी बाइक से साथ जाने वाले थे लेकिन मां भी साथ जाने को तैयार हो गईं। सड़क हादसे में एक साथ मां, पत्नी और गर्भ में पल रही संतान को दुनिया में आने से पहले ही खो देने के दुःख में रो-रोकर सुनील बेसुध हो चुका था। डेढ़ महीने पहले हार्ट अटैक से पिता बच्चे लाल की मौत का सदमा परिवार बर्दास्त भी नहीं कर पाया था कि इतने बड़े हादसे ने सुनील की दुनिया ही उजाड़ डाली। सुनील को क्या पता था कि अब उसकी मां व पत्नी लौट कर घर नहीं आएंगी।

सीधे प्रवेश
100% Placement
15% Fee Concession
नैनी औद्योगिक प्रशिक्षण केन्द्र
(भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त)
(पहले आओ पहले पाओ)
❖ प्रशिक्षण में उत्तीर्ण होने वाले छात्रों को रोजगार पाने का पूर्ण अवसर
❖ हाइस्कूल में 60% से उपर अंक लाने वाले छात्रों को प्रशिक्षण शुल्क में 15% प्रतिशत की छूट दी जायेगी।

➢ कम्प्युटर आपरेटर (कोपा)
➢ डेटा इंट्री आपरेटर
➢ फायर सेफ्टी
➢ कम्प्युटर टीचर ट्रेनिंग
➢ इलेक्ट्रीशियन
➢ सीएनसी प्रोग्रामिगं
➢ इलेक्टिक मैकैनिक
फिटर
वेल्डर
सीसीए
रेफ्रीजरेटर एवं ए.सी.
सिक्योरिटी सर्विस
बेसिक कम्प्युटर
कम्प्युटर हाडवेयर

Apply Online: www.nainitti.com
Mail us at – info@nainitti.com
प्रवेश हेल्पलाइन नं0
8081180306 , 9415608710 , 8103021873
⇨ इण्डियन कॉफी हाउस के सामने तुलसीयानी प्लाजा , तीसरी मंजिल , सिविल लाइन , प्रयागराज।

संयुक्त प्रेस कार्यालय का ताला व दरवाजा तोड़ चोर ने समान लेकर चलते बने

(आधुनिक समाचार सेवा)
ओबरा सोनभद्र। स्थानीय ओबरा थाना क्षेत्र के वीआईपी रोड कान्वेंट स्कूल के सामने ओबरा शापिंग काम्प्लेक्स में स्थित संयुक्त प्रेस कार्यालय का ताला एवं दरवाजा तोड़कर सारा सामान लेकर चलते बने, क्षेत्र में मचा हड़कंप मिली जानकारी के मुताबिक वीआईपी रोड कान्वेंट स्कूल के सामने ओबरा शापिंग काम्प्लेक्स में स्थित संयुक्त प्रेस कार्यालय का ताला एवं दरवाजा तोड़कर चोरी ने कार्यालय में रखा कम्प्यूटर सेट, सीलिंग फैन व अन्य इलेक्ट्रॉनिक व इलेक्ट्रीकल तथा लोहे का सामान सहित अन्य ज़रुरी उपयोग का सामान उठा ले गये। बुधवार अपराह्न आफिस खोलने पहुंचे पत्रकारों ने ताला और दरवाजा टूटा पाया तथा अंदर से आफिस का सामान गायब देख डायल 112 को इसकी सूचना दी। कार्यालय की टांड़ पर कार्टून में रखा सामान फर्श पर बिखरा मिला।आफिस में रखा रिवाल्विंग चेयर, कुर्सियां समेत अन्य जरुरी सामान भी गायब था। टांड़ पर रखे कुछ दैनिक उपभोग की चीजें उठा ले गये तथा टांड़ पर रखे अन्य बेकार सामान फर्श पर बिखरा गये।मौके पर पहुंची पुलिस ने जांच किया इस दौरान यह भी प्रकाश में आया कि शापिंग काम्प्लेक्स में कार्यालय के सामने लोहे की रखी एक बड़ी गुमटी का आधा हिस्सा एंगिल और उसकी लोहे की चद्दर भी चोर काट लें गये। इसी कैम्पस में मौजूद एक स्वीट हाउस की ड्रम नुमा भट्ठी और लोहे की जाली और अन्य लोहे की सामग्री भी चोर उठा ले गए स्टेट मीडिया के ज़िला प्रभारी पत्रकार कमाल अहमद ने घटना की जानकारी ओबरा थाने में दे दी है। थानाध्यक्ष ओबरा ने छानबीन हेतु तत्काल ही पुलिस टीम को संदिग्धों की जांच पड़ताल के लिए रवाना कर दिया। आसपास पड़ताल करने पर ज्ञात हुआ कि ओबरा शॉपिंग कंपलेक्स में शाम होते ही नशेड़ियों और कबाड़ियों का जमावड़ा हो जाता है। परियोजना प्रशासन और दुसान पावर प्रोजेक्ट प्रबंधन भी कबाड़ चोरों से त्रस्त है। चोरों का हौसला इतना बुलंद है कि रात्रि में गस्ती पर तैनात पुलिसकर्मियों का और उनके हूटर का भी इन्हें कोई डर नहीं है। नगर में कबाड़ चोरों का आतंक इस कदर पसरा हुआ है कि वह बड़े बड़े सामान भी उठाकर ले जा रहे हैं और कबाड़ के दुकानदार भी चोरी का सामान खरीद ले रहा है जिससे कानून व्यवस्था पर बार-बार सवालिया निशान उठता रहा है।

बीएस ज्ञानोदय का नेवारी में स्काउटिंग प्रशिक्षण सम्पन्न

(आधुनिक समाचार सेवा)
ओबरा सोनभद्र। उत्तर प्रदेश भारत स्काउट और गाइड जनपद सोनभद्र के तत्वाधान में बीएसजी उ. मा. विद्यालय नेवारी सोनभद्र में दिनांक 9 जनवरी से 11 जनवरी 2023 तक स्काउटिंग प्रशिक्षण संपन्न हुआ। जिसमें ज्ञानोदय स्काउट दल के साथ विद्यालय के बच्चों ने प्रतिभाग किया। प्रशिक्षण में पांच दर्जन से अधिक प्रतिभागी उपस्थित रहे। जिसका संचालन डॉक्टर बृजेश कुमार सिंह ठमहादेवठ ब्लाक स्काउट मास्टर नगवा ने किया। बतौर प्रशिक्षक अशोक कुमार एच डब्ल्यू बी तैनात रहे। सहयोगी के रूप में स्काउट मास्टर हनुमान प्रसाद सिंह रहे। अतिथि के रूप में उपस्थित रविन्द्र पाठक ने बताया कि स्काउटिंग से बच्चों में आत्मविश्वास बढ़ता है। अपने संबोधन में डॉ बृजेश महादेव ने कहा कि स्काउटिंग से जीवन जीने की एक बेहतर कला सीखने को मिलती है। तीन दिवसीय प्रगतिशील प्रशिक्षण में स्काउट गाइड प्रार्थना झंडा गीत प्रतिज्ञा नियम हाइक के साथ स्काउटिंग की विभिन्न जानकारी दी गई, बच्चों को बिना बर्तन के भोजन बनाना विषम परिस्थिति में अपने को तैयार रखना, टेंट लगाना और विभिन्न प्रकार की गांठ बांधना बताया गया. कार्यक्रम के संयोजक राज किशोर प्रधानाचार्य ने प्रशिक्षकों का आभार प्रकट करते हुए बच्चों को शुभकामनाएं प्रेषित की. समारोह में संतोष कुमार सिंह, राज कुमार सिंह, बुद्धिमान सिंह, राजेश तिवारी, नवीन मिश्रा, अंजनी सिंह, चंदूलाल, राम सुन्दर, राजेश कुमार, कुशमेश, साहबलाल, गंगेश्वर प्रसाद सिंह प्रबन्धक आदि उपस्थित रहे।

नगर निकाय चुनाव के मद्देनजर हर बूथ करेगे मजबूत- दयालु

(आधुनिक समाचार सेवा)
ओबरा।अपना दल एस की महत्वपूर्ण बैठक वार्ड नंबर 14 और वार्ड नंबर 3 में अलग-अलग की गई अपना दल एस को मजबूत बनाने के लिए अपना दल एस युवा मंच के प्रदेश उपाध्यक्ष आनन्द पटेल दयालु की अध्यक्षता में बैठक संपन्न हुई अध्यक्षता कर रहे आनन्द पटेल दयालु ने कहा कि नगर पंचायत चुनाव बहुत मजबूती से अपना दल एस ओबरा में लड़ेगा इसके लिए हर बूथ पर 10 यूथ तैयार करने के लिए काम किया जा रहा है उसमें 10 यूथ में 10 महिलाएं अलग से तैयार किया जा रहा है संगठन को मजबूत करने के लिए सबसे पहले माताओं और बहनों को हिस्सेदारी दी जा रही है संगठन

को मजबूत करने के लिए सभी ने संकल्प लिया डॉक्टर सोनेलाल पटेल जी रोटी, कपड़ा और मकान के लिए चिंतित रहा करते थे कि सभी को रोटी कपड़ा और मकान का अधिकार मिलना चाहिए जो व्यक्ति सक्षम नहीं है उन्हें मतदाता पेंशन मिलना चाहिए माननीय अनुप्रिया पटेल जी के हाथों को मजबूत करने के लिए अनवरत संघर्ष किया जा रहा है संचालन महताब आलम प्रदेश सचिव अल्पसंख्यक मंच ने किया मुख्य रूप से जिला महासचिव राधेश्याम भारती दूसरे जिला महासचिव जनाब शिबू खान, विधानसभा अध्यक्ष महिला में श्रीमती सोनी खान, जिला महासचिव युवा मंच दिनेश केसरी, सदस्य सत्येंद्र पांडे, जानेमन यादव, लीलावती, अनीता देवी, अजोरा देवी, कुसुम देवी, चंदा, मोहम्मद इसराइल, शबनम परवीन आदि महिलाएं उपस्थित रहे।

बालश्रम उन्मूलन हेतु जनपद स्तर पर चलाया गया सघन चेकिंग अभियान

(आधुनिक समाचार सेवा)
सोनभद्र। जिलाधिकारी व पुलिस अधीक्षक सोनभद्र के निर्देश के क्रम में जिला प्रोवेशन अधिकारी के आदेश पर थाना एएचटीयू , श्रम विभाग व जिला बाल संरक्षण इकाई की संयुक्त टीम द्वारा रावर्टसगंज थाना क्षेत्र में होटल , ढाबों , ऑटो पार्ट्स गैराजों,हरि बाग नर्सरी आदि जगहों पर

बालश्रम उन्मूलन अभियान चलाकर सघन चेकिंग के दौरान बाल श्रमिकों को बाल श्रम से मुक्त करवाकर नियोक्ता के विरुद्ध वैधानिक कार्यवाही करते हुए निरीक्षण नोट जारी किया गया एव नाबालिग बालको को बाल कल्याण समिति के समझ प्रस्तुत किया गया साथ ही लोगों को बालश्रम न कराने हेतु जागरूक किया गया । उनके बेहतर भविष्य के लिए स्कूली शिक्षा पर बल देते हुए लोगो से अपील की गई ।ताकि बच्चो का भविष्य उज्ज्वल हो , और बालश्रम पर प्रभावी अंकुश लगाया जा सके। अभियान में श्रम प्रवर्तन अधिकारी सुयश पाण्डेय , जिला बाल संरक्षण इकाई से ओआरडब्ल्यू शेषमणि दुबे महिला शक्ति केन्द्र से जिला समन्वय साधना मिश्रा थाना एएचटीयू से प्रभारी निरीक्षक राम जी यादव ,उपनिरीक्षक हरिदत्त पाण्डे, हेड का0 धनंजय यादव , आदि मौजूद रहे ।

एबीवीपी ने युवा दिवस के रूप में मनाई स्वामी विवेकानंद जयंती

(आधुनिक समाचार सेवा)
सोनभद्र। राष्ट्रीय युवा दिवस के अवसर पर गुरूवार को अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के नगर इकाई के द्वारा रामलीला मैदान के प्रांगण में कार्यक्रम का आयोजन किया गया.जिसका नेतृत्व नगर मंत्री आकाश पटेल ने किया।इस मौके पर मां सरस्वती और स्वामी विवेकानंद के चित्र पर माल्यार्पण पुष्प अर्पित कर विद्यार्थी परिषद के कार्यकर्ताओं ने स्वामी विवेकानंद के सिद्धांतों तथा बताए गए मार्ग पर चलने का संकल्प लिया वक्ताओं ने कहा कि स्वामी विवेकानंद ऐसे व्यक्तित्व के धनी थे जिन्होंने शिकागो अमेरिका के धर्म सम्मेलन में हिंदू धर्म का प्रतिनिधित्व किया और सार्वभौमिक पहचान दिलाई कहा कि हम संगठित होकर ही भारत को विश्व को बना सकते हैं वहीं आशीष अग्रहरी ने बताया की अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद एक ऐसा छात्र संगठन है जो स्वामी विवेकानंद के आदर्शों पर चलता है स्वामी विवेकानंद जी की जयंती राष्ट्रीय युवा दिवस के रूप में हम सभी मनाते हैं इस अवसर पर संजय गोड़,सुधीर पाठक,विकास जैन, गिरीश तिवारी,राजू दूबे,श्याम पाठक,अभिषेक पटेल,सोनू, नीरज दुबे सहित बड़ी संख्या में लोग उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन कुश देव पांडे द्वारा किया गया ।

1द्धजन सुनवाई हेतु ग्राम चौपाल 13 जनवरी को

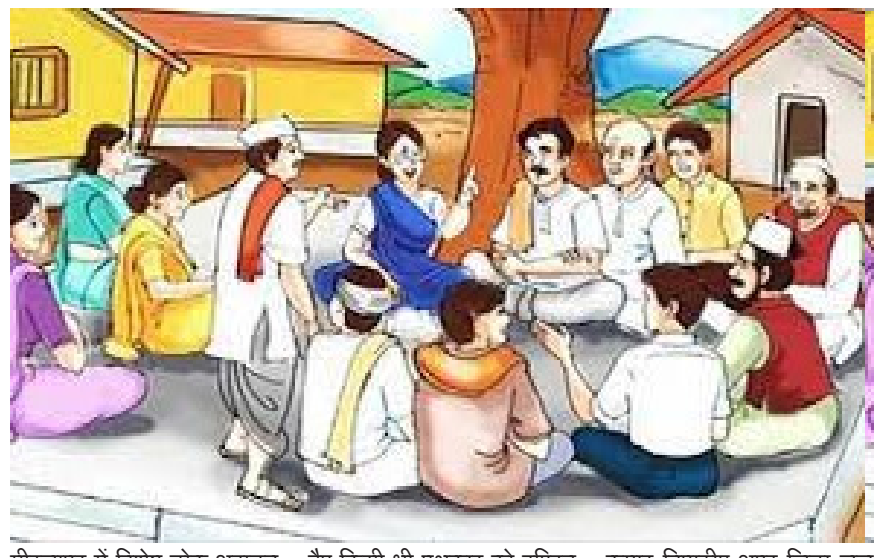

(आधुनिक समाचार सेवा)
मिर्ज़ापुर। आयुक्त ग्राम्य विकास ने ग्राम चौपाल का आयोजन किये जाने का निर्देश तहत दिनांक 13 जनवरी 2023 को विधानसभा मझवा के विकास खण्ड पहाड़ी में ग्राम पंचायत बेदौली कलाए इमिरितीए विकास खण्ड मझवा में महामलपुरए करसड़ाए विधानसभा मझवा नगर विकास खण्ड सिटी के ग्राम पंचायत पड़रा हनुमानए कंतित ग्रामीणए विधानसभा नगर के विकास खण्ड कोन में भोगांवए चन्देलढ़ियाए विधानसभा छानबे विकास खण्ड छानबे के ग्राम पंचायत गौराए जांसा बघौराए विकास खण्ड लालगंज में पतुलकीए बसही कलाए विकास खण्ड हलिया में हलियाए बरीए विधानसभा मड़िहान विकास खण्ड पटेहरा कला में मरचाए ककरदए विकास खण्ड राजगढ़ में ददराए पतेरीए विधानसभा चुनार विकास नरायनपुर में परशुरामपुरए बैंकुंठपुरए विकास सीखड़ में शिल्पीए पचरावए विकास खण्ड जमालपुर भुईली खासए हिनौती माफी में चौपाल का आयोजन किया जायेगा ।उक्त जानकारी जिला विकास अधिकारी श्रावण कुमार राय ने मीडिया को विज्ञप्ति के माध्यम से दिया। द्ध आर्बिट्रेशन निष्पादन वादों के निस्तारण हेतु 22 जनवरीए 2023 को विशेष लोक अदालत का आयोजन . जनपद न्यायाधीश मिर्ज़ापुर। उच्च न्यायालय इलाहाबाद न्यायमूर्ति ध् कार्यपालक अध्यक्षए उ0प्र0 राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण लखनऊ के आदेशानुसार जनपद न्यायाधीश ध् अध्यक्ष विधिक सेवा प्राधिकरण अनमोल पाल की अध्यक्षता में न्यायालयों में लम्बित आर्बीट्रेशन निष्पादन वादो के निस्तारण हेतु दिनांक 22 जनवरी 2023 को समय पूर्वान्ह 10ण्30 बजे से दीवानी न्यायालय परिसरए

मीरजापुर में विशेष लोक अदालत का आयोजन किया जायेगा। उक्त विशेष लोक अदालत को सफल बनाने के लिए जनपद न्यायाधीश ने सभी अपर जनपद न्यायाधीशगण एवं फाइनेन्स कम्पनियों के अधिवक्तागण की आवश्यक बैठक आहूत कर उन्हें निर्देशित किया कि न्यायालयों में लम्बित आर्बीट्रेशन निष्पादन ;मगमबनजपवद वा ।तइपजतंजपवद डंजजमते द्ध मुकदमों को ज्यादा से ज्यादा संख्या में चिन्हित कर निस्तारण कराना सुनिश्चित करें। जनपद न्यायाधीश ने बताया कि विशेष लोक अदालत में मुकदमों का निस्तारण कराने से वादकारी के मुकदमें में लगा न्यायालय शुल्क वापस मिल जाता हैए किसी भी पक्षकार को दण्डित नहीं किया जाता हैए लोक अदालत द्वारा पक्षकारों को न्याय आसानी से मिल जाता है और लोक अदालत का अवार्ड ;निर्णयद्ध अंतिम होता हैए जिसके खिलाफ किसी न्यायालय में अपील नहीं होती है इसलिए पक्षकार व्यक्तिगत तौर पर सम्बन्धित न्यायालय के समक्ष उपस्थित होकर अपने अपने मुकदमों को अविलम्ब निस्तारण हेतु पंजीकृत करा सकता है और द्वितीय बैठक 17.01.2023 को आहूत किया गया है। बैठक में विशेष न्यायाधीश एसण्सीण्एसण्टी एक्ट श्री बलजोर सिंहए विशेष न्यायाधीश ईण् सीण्एक्ट जितेन्द्र मिश्राए विशेष न्यायाधीश पॉक्सो एक्ट सन्तोष कुमार त्रिपाठीए अपर जिला जज पंचम चन्द्रशेखर मिश्राए अपर जिला जज ध् अति0 पॉक्सो एक्ट तालेवर सिंहए अपर जिला जज ;एफण्टीण्सीण्द्ध ध् सचिव लाल बाबू यादव तथा अधिवक्ता गण उपस्थित रहे। उक्त अवसर बैठक।में विधिक सेवा प्राधिकरण सचिव ने समस्त अधिवक्ता बन्धुओ एवं आर्बीट्रेशन के पक्षकारों से अपील करते है कि वह अपने.अपने आर्बीट्रेशन के मुकदमों को सम्बन्धित न्यायालय में उपस्थित होकर अविलम्ब पंजीकृत करा लेवें और अपने मुकदमों का निस्तारण कराकर विशेष लोक अदालत का लाभ उठायें।। द्धमंडलायुक्त ने गो आश्रय केंद्रों का निरीक्षण कर दिया। मिर्ज़ापुर।मंडलायुक्त डॉ0 मुथुकुमार स्वामी बी0 ने गो आश्रय स्थल बरकच्छा एवं गौ संरक्षण केंद्र सिंधोरा डगमगपुर का निरीक्षण कर दिशा निर्देश दिया। निरीक्षण के समय का बरकच्छा में कुल 55 गोवंश संरक्षित पाए गए। जिसमें जिसमें टैग वाले 55 बिना टैग वाले 06 गोवंश वर्तमान में रह रहे हैं। ग्रीष्म वर्षा संभावित सूखे बाढ़ से बचाव हेतु टीन सेट की व्यवस्था मिली। कौन सा स्थल पर सेट की व्यवस्था को उनकी क्षमता के अनुपात में है भूसा पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध पाया गया। गौ आश्रय केंद्र सिंधोरा डगमगपुर के निरीक्षण के निरीक्षण में पाया गया कि यहां पर 354 पशु रह रहे हैं जिसमें नर 237 एवं मादा 117 हैं। 354 पशुओं की पैकिंग की गई है। मौके पर बताया गया कि एच0एस0 वैक्सीन लगाई गई है। संबंधित विकासखंड स्तर पर एच0एस0 वैक्सीन माइक्रोप्लान कंप्लीट है। मंडलायुक्त ने पशुओं के लिए भूसाए ठंड से बचावए पेयजल आदि के लिए बेहतर प्रबंधन हेतु निर्देश दिया ।

6 लाख रुपये की 5100 पाउच अवैध अंग्रेजी शराब हुई बरामद

(आधुनिक समाचार सेवा)
सोनभद्र।सुत्रो के अनुसार अबकारी विभाग के कुछ लोगो कि मिली भगत से इस घटना को अंजाम दिया गया है विगत कई दिनों से आसूचना प्राप्त हो रही थी कि सीमावर्ती प्रान्त बिहार में शराब बन्दी के कारण अवैध रूप से भारी मात्रा में शराब तस्करी बिहार प्रान्त में की जा रही है। इस सूचना पर अपराधियों की गिरफ्तारी व बरामदगी हेतु डॉ0 यशवीर सिंह, पुलिस अधीक्षक जनपद सोनभद्र द्वारा थाना विण्ढमगंज पुलिस को विशिष्ट निर्देश दिये गये। इसी क्रम मे अपर पुलिस अधीक्षक ऑपरेशन व क्षेत्राधिकारी दुद्धी के निर्देशन में क्राइम ब्रांच, थाना विण्ढमगंज व दुद्धी पुलिस की संयुक्त टीम गठित की गयी। इस टीम द्वारा अथक लगन व परिश्रम से अपना आसूचना संजाल तैयार किया गया तथा अपराधियों की धरपकड़ और अवैध शराब की बरामदगी के लिए योजना बनाकर कार्यवाही की जा रही थी कि इसी दौरान इस टीम को दिनांक-11.01.2023 को मुखबिर द्वारा सूचना मिली कि तस्करों द्वारा 02 अदद पिकअप 1.ँ1उउ9246(फर्जी नम्बर), 2. ँघ्उउ6672 (फर्जी नम्बर) के डाला और बॉडी में चेचिस के अंदर जगह जगह पर भारी मात्रा में अवैध अंग्रेजी शराब को छुपा कर तस्करी कर शराब की बड़ी खेप बिहार ले जा रहे है। इस सूचना पर त्वरित कार्यवाही करते हुए थाना विण्ढमगंज व दुद्धी की पुलिस टीम के द्वारा घिवही रेलवे क्रासिंग के पास से 02 अदद पिकअप में बैठे कुल 06 व्यक्तियों (प्रत्येक में 03-03 व्यक्ति) को भारी मात्रा में अवैध अंग्रेजी शराब के साथ गिरफ्तार कर लिया गया। पकड़े गए लोगों के साथ बरामद महिंद्रा बोलेरो पिकअप वाहनों की तलाशी लेने पर पाया गया कि इन अभियुक्तों के द्वारा पिकअप वाहन के डाला एवं बॉडी में विशेष रूप से जगह बनाकर उनके अंदर अवैध शराब के पाउच/टेट्रा पैक रखे गए हैं एवं ऐसी शराब

को छुपाकर उसके ऊपर लोहे की चद्दर लगाकर वास्तविक डाला/ट्रॉली का रूप दे दिया गया है जिससे कोई यह न जान पाए कि बॉडी के अंदर डाला/ट्रॉली में शराब छुपाई गई है। उपरोक्त गिरफ्तारी एवं बरामदगी के सम्बन्ध में थाना विण्ढमगंज पर मु0अ0सं0-06/23 धारा 419, 420, 467, 468, 471, 411, 120बी भादवि व धारा 60/63/72 आबकारी अधिनियम का अभियोग पंजीकृत कर विधिक कार्यवाही की जा रही है। **विवरण पूछताछ-** ने पूछताछ पर अभियुक्तों द्वारा बताया गया कि बिहार प्रांत में शराबबंदी होने के कारण शराब की उपलब्धता नहीं हो पा रही है इसी वजह से अगल-बगल के राज्यों से शराब की तस्करी कर बिहार में लाई जाती है जहां पर महंगे दामों पर वह शराब बेची जाती है जिससे काफी मुनाफा होता है। इसके पहले भी हम लोग कई बार इस तरफ से अंग्रेजी शराब की बड़ी खेपें तस्करी कर बिहार में ले जा चुके हैं, आज भी हम लोग अवैध अंग्रेजी शराब की यह खेप म्योरपुर से बिहार में बेचने के लिये ले जा रहे थे। सोनू राय ने पूछताछ करने पर बताया कि हम लोग जो पिकअप लेकर आये हैं वह पिकअप चोरी की है तथा दोनों गाड़ियों पर जो नम्बर प्लेट लगा है वह फर्जी है। इस प्रकार की तस्करी में हम लोग प्रायः चोरी लूट की गाड़ियों का ही इस्तेमाल करते हैं और उनके नंबर प्लेट फर्जी तरीके से बदलकर उनका प्रयोग करते हैं यह शराब हम लोग बिहार में लेकर जा रहे थे वहां इसको बेच कर हम लोग भारी मुनाफा कमा लेते हैं यहां पर रेणुकूट का रहने वाला कौशल कुमार नाम का व्यक्ति है जो थोक दुकानदार फुटकर दुकानदार और लोकल के लोगों से तालमेल कर हम लोगों को माल उपलब्ध करवाता है और यहां के तमाम दुकानदार ऊंचे दामों पर हम लोगों को अंग्रेजी और अन्य प्रकार की शराब उपलब्ध करा देते हैं। मेरी और मेरे अन्य साथियों की वार्ता यहां के थोक एवं फुटकर दुकानदारों से भी होती है और तालमेल बनाकर हम लोग किसी हाते या दुकान के आस पास से ही माल लोड कर लेते हैं। जो माल आज पकड़ा गया है वह माल हम लोगों ने म्योरपुर में राहुल जयसवाल और खड़िया रेणुकूट दुकान से लोड किया था। हम लोगों को कौशल ही राहुल जायसवाल, अनुग्रह नारायण सिंह इत्यादि के यहां माल के लिए भेजते हैं। पूछताछ में राहुल जायसवाल ने बताया कि मेरे पिता के नाम से म्योरपुर में बीयर की दुकान है और कौशल से संपर्क हो जाने पर ज्यादा मुनाफा कमाने के चक्कर में मैं शराब के कारोबार में लगे हुए लोगों से अपने संपर्कों का फायदा उठाकर थोक दुकानदार से सेटिंग करके अंग्रेजी शराब की खेप मंगवाता था और सोनू राय और बिहार के अन्य लोगों को ऊंचे दामों पर बेच दिया करता था। इसके पूर्व भी मैं कई बार बिहार की पार्टी को अवैध तरीके से अंग्रेजी शराब की सप्लाई कर चुका हूं। मेरी कौशल कुमार रेनूकुट से शराब को बिहार भेजने के लिए बातचीत होती है। कौशल कुमार ही मेरे यहां से इनलोगों को शराब दिलवाता है। हम लोग थोक शराब विक्रेता और फुटकर शराब विक्रय के दुकानदार आपस में तालमेल से यह कारोबार करते हैं जिसमें थोक दुकानदार भी ज्यादा मुनाफा लेकर फुटकर दुकानदार के कोटे का माल शराब अवैध तरीके से इन

सोनभद्र प्रशासन की लोकहितकारी पहल,सोन ग्रामोदय एप किया लॉन्च

(आधुनिक समाचार सेवा)
सोनभद्र।ग्राम पंचायत स्तर पर जो मुख्य समस्या आती हैं वह राजस्व, पंचायती राज, ग्राम्य विकास, स्वास्थ्य, राशन, आंगनबाड़ी, शिक्षा इत्यादि से जुड़ी समस्याएं ज्यादा रहती हैं अगर इन समस्याओं को ग्राम पंचायत स्तर पर ही संबंधित अधिकारियों-कर्मचारियों से वार्ता कर निस्तारण कर दिया जाए तो विकास खंड, तहसील स्तर एवं जनपद स्तर पर वही समस्याएं आएंगी जिसका निस्तारण या तो ग्राम पंचायत के द्वारा संभव नहीं है अथवा पंचायत के निस्तारण से शिकायतकर्ता संतुष्ट नहीं है। सोन ग्रामोदय एप संचालन की प्रक्रियाः - सर्वप्रथम गूगल प्ले स्टोर के माध्यम से ग्राम पंचायतों में आम जनमानस द्वारा सोन ग्रामोदय एप को डाउनलोड किया जायेगा। जिसे एन्ड्राएड मोबाइल फ़ोन में सफलता पूर्वक इंस्टाल करने के बाद पब्लिक को अपना मोबाइल नंबर ओटीपी के माध्यम से पंजीकृत कराना अनिवार्य होगा। उसके बाद सोन ग्रामोदय एप में तहसील, ब्लाक फिर ग्राम पंचायत चयन करना होगा। ग्राम पंचायत का चयन करते समय विशेष ध्यान दिया जाये क्योकि एक बार ग्राम पंचायत का चयन करने के बाद उसमे परिवर्तन सम्भव नहीं है। जैसे ही ग्राम पंचायत चयन की प्रक्रिया पूर्ण हो जायगी, उस ग्राम पंचायत स्तर एवं सम्बंधित ब्लाक व तहसील पर कार्यरत कर्मचारियों/अधिकारीयों का नाम, पदनाम व मोबाइल नम्बर पब्लिक को दिखने लगेगा, जिसके सामने कॉल का बटन भी प्रदर्शित होगा। जिसपर क्लिक करने से सम्बंधित कर्मचारियों/अधिकारीयों से ग्रामीण जनता सीधे संवाद कर अपनी शिकायत/समस्या साझा कर सकते हैं और वहीं इसके जरिए ग्रामीण अपनी समस्या से अवगत कराने के साथ ही, निस्तारण और संबंधित अधिकारियोंकर्मचारियों से मिलने वाले रिस्पांस के बारे में स्टार रेटिंग (एक स्टार-खराब, दो स्टारअसंतोषजनक, तीन स्टार-संतोषजनक, चार स्टार-अच्छा, एवं पांच स्टार-सबसे अच्छा) के माध्यम से फीडबैक दर्ज करने के बाद मैसेज बाक्स मे अपनी प्रतिक्रिया/सुझाव भी दर्ज कर सकते हैं। समय-समय पर सम्बंधित ग्राम पंचायत के उप जिलाधिकारी व तहसीलदार का मोबाइल नम्बर पहले से ही मौजूद रहेगा। जिससे कि ग्राम पंचायत स्तर पर जो भी समस्याएं ग्रामीणों को आ रही हैं उसका त्वरित रूप से निस्तारण सम्बन्धित अधिकारियोंकर्मचारियों से वार्ता कर किया जा सके। सोन ग्रामोदय एप का प्रचार-प्रसारः सोन ग्रामोदय एप की वेबसाईट ीजजचेरू//दर्हैं.हग्म्.ग्ह से भी उक्त एप को डाउनलोड किया जा सकता है। ग्राम समाधान दिवस पर पंचायत सहायको एवं ग्रामीण क्षेत्रों में संचालित जन सेवा केन्द्रों के माध्यम से ग्रामीणों को एप के संचालन की जानकारी दी जाएगी। उन्हें कैसे इसे प्ले स्टोर से डाउनलोड करना है, किस तरह मोबाइल नम्बर डालकर एप में

पर जिलाधिकारी सहित अन्य जिला स्तरीय अधिकारियों की तरफ से इसकी निगरानी भी की जाती रहेगी। सोन ग्रामोदय एप में ग्राम पंचायत स्तर पर सचिव, ग्राम प्रधान, लेखपाल, पंचायत सहायक, रोजगार सेवक, कोटेदार, आशा, एएनएम, आंगनबाड़ी, सफाईकर्मी, केयर टेकर, जन सेवा केन्द्र संचालकों, अध्यापक, पुलिस इत्यादि विकास खंड स्तर पर बी.डी.ओ., ए.डी.ओ. (पंचायत), बाल विकास पुस्टाहार अधिकारी, प्रभारी चिकित्साधिकारी, खंड शिक्षा अधिकारी इत्यादि एवं तहसील स्तर के निर्माण का कार्य जिलाधिकारी श्री चन्द्र विजय सिंह के कुशल निर्देशन में पंचायती राज विभाग एवं डिस्ट्रिक्ट ई-गवर्नेन्स सोसाईटी के सहयोग से दिल्ली स्थित सॉफ्टवेयर कम्पनी टेक्नोशेपर्स द्वारा किया गया है। जनपद में सोन ग्रामोदय एप का प्रचार-प्रसार जिला सूचना विभाग के द्वारा मीडिया के माध्यम से, डिस्ट्रिक्ट ई-गवर्नेस सोसाइटी द्वारा ग्रामीण क्षेत्रों में संचालित जन सेवा केन्द्रों के माध्यम तथा पंचायती राज विभाग द्वारा ग्राम समाधान दिवस के माध्यम से कराया जायेगा। जनपद सोनभद्र पंजीकृत होना है और किस प्रकार संबंधित अधिकारियों-कर्मचारियों से मिलने वाले रिस्पांस के बारे में अपना स्टार रेटिंग देकर फीडबैक दर्ज करना है आदि जानकारी उपलब्ध करायी जाएगी। सोन ग्रामोदय एप के सफल क्रियान्वयन एवं सचांलन हेतु जिला पंचायत राज अधिकारी, सोनभद्र को नोडल एवं श्री दिव्यतोष मिश्र ई-डिस्ट्रिक्ट मैनेजर, सोनभद्र को तकनिकी सहयोग तथा श्री अनिल केशरी, डी.पी.सी. को सूचनाओं व डाटा के संकलन हेतु नामित किया गया है।

तालिबान को ऑस्ट्रेलिया का करारा जवाब, अफगानिस्तान के खिलाफ वनडे सीरीज कर दी रद्द

(आधुनिक समाचार सेवा)
नई दिल्ली। ऑस्ट्रेलिया क्रिकेट टीम इस साल मार्च में यूएई में अफगानिस्तान के खिलाफ तीन मैचों की वनडे सीरीज नहीं खेलेगी। क्रिकेट ऑस्ट्रेलिया ने सीरीज से कि वो वैश्विक स्तर पर पुरुष और महिला खेल की प्रगति के समर्थन के लिए प्रतिबद्ध है, जिसमें अफगानिस्तान भी शामिल है। सीए ने साथ ही कहा कि वो अफगानिस्तान क्रिकेट बोर्ड से ऑस्ट्रेलियाई सरकार के समर्थन का हम शुक्रिया अदा करते हैं।' आईसीसी के सीईओ ज्योफ एलार्डिस ने स्वीकार किया कि अफगानिस्तान में हाल में हुई चीजें चिंताजनक हैं और मार्च में अगली बोर्ड बैठक में

हटने का फैसला किया है। ऐसा इसलिए क्योंकि तालिबान ने हाल ही में महिलाओं और लड़कियों की पढ़ाई व रोजगार संबंधित पाबंदी की घोषणा की थी। ऑस्ट्रेलिया और अफगानिस्तान के बीच तीन मैचों की वनडे सीरीज आईसीसी वनडे सुपर लीग के अंतर्गत खेली जानी थी। क्रिकेट ऑस्ट्रेलिया के सीरीज के हटने का असर यह है कि अफगानिस्तान को सीरीज के 30 अंक मिलेंगे। क्रिकेट ऑस्ट्रेलिया ने अपनी आधिकारिक वेबसाइट पर एक बयान जारी करते हुए समझाया कि आखिर क्यों उन्होंने यह फैसला लिया। सीए ने कहा बातचीत करेगा और जानेगा कि देश में महिलाओं व लड़कियों के लिए स्थितियां सुधरी हैं या नहीं। अफगानिस्तान क्रिकेट बोर्ड ने इस मामले में समर्थन के लिए ऑस्ट्रेलियाई सरकार का शुक्रिया अदा किया है। सीए ने बयान में कहा, 'सीए विश्व में पुरुष और महिलाओं के खेल की प्रगति के समर्थन के लिए प्रतिबद्ध है, जिसमें अफगानिस्तान शामिल है। बोर्ड लगातार अफगानिस्तान क्रिकेट बोर्ड से बातचीत करके जानेगा कि देश में महिलाओं और पुरुषों की स्थिति में क्या सुधार है।'अफगानिस्तान ने जवाब में कहा, 'इस मामले में इस पर विचार किया जाएगा। एलार्डिस ने कहा, 'प्रशासन बदलने के बाद से हमारा बोर्ड प्रगति पर नजर रखे हुए है। यह चिंताजनक है कि अफगानिस्तान में प्रगति नहीं हो रही है और हमारा बोर्ड मार्च में अगली बैठक में इस पर विचार करेगा। जहां तक हमारी जानकारी है तो इस समय कोई गतिविधि नहीं हो रही है।'अफगानिस्तान एकमात्र आईसीसी पूर्ण सदस्य देश है, जिसकी महिला टीम नहीं है। महिलाओं के अंडर-19 टी20 वर्ल्ड कप के उद्घाटन संस्करण में भी अफगानिस्तान एकमात्र पूर्ण सदस्य है, जिसकी महिला टीम शिरकत नहीं कर रही है।

'केएल राहुल आउट होने के तरीके खोजते है कोच को उनकी खामियों पर काम करना चाहिए'

(आधुनिक समाचार सेवा)
नई दिल्ली। भारतीय टीम के पूर्व कप्तान मोहम्मद अजहरुद्दीन का मानना है कि केएल राहुल को राष्ट्रीय टीम के कोचों के साथ अपनी तकनीकी खामियों पर निरंतर काम करते रहना चाहिए। मेरा मानना है कि वहां कोचों को उनकी कमियों पर काम करने की जरुरत है। मेरे विचार में वो अच्छे खिलाड़ी हैं, लेकिन उनके खेल में निरंतरता की कमी है।' राहुल ने अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में वापसी के बाद दमदार प्रदर्शन नहीं किया है।

57 साल के अजहर इस बात से निराश हैं कि केएल राहुल जैसा प्रतिभाशाली बलेबाज अपनी पूरी क्षमता का उपयोग नहीं कर पा रहा है।अजहरुद्दीन ने पीटीआई से बातचीत में कहा, 'मेरे ख्याल से केएल राहुल के मामले में निरंतरता बड़ी दिक्कत है। मगर श्रीलंका के खिलाफ पहले वनडे में वो 39 रन बनाकर आउट हुए।अजहर ने कहा, 'मेरे ख्याल से राहुल कई तरह से आउट हुए हैं। पहले तो वो खराब गेंदों पर अपना विकेट खो रहे थे। फिर शॉट चयन ने उनकी मुसीबतें खड़ी कर दीं।' अजहरुद्दीन का मानना है कि सभी सीनियर खिलाड़ियों को समय निकालकर घरेलू क्रिकेट जरूर खेलना चाहिए। रोहित शर्मा और विराट कोहली ने श्रीलंका के खिलाफ पहले वनडे में अच्छा प्रदर्शन किया और अजहर का मानना है इस साल विश्व कप में ये दोनों भारत के प्रमुख खिलाड़ी होंगे अजहरुद्दीन ने कहा, 'रोहित-विराट दोनों शानदार और क्लास खिलाड़ी हैं। इन्होंने पहले भी शानदार प्रदर्शन किया है। इनके रिकॉर्ड्स सब बताते हैं। मेरा मानना है कि इस साल विश्व कप में रोहित और विराट शानदार प्रदर्शन करेंगे। वनडे प्रारूप में दोनों ने निरंतर बेहतर प्रदर्शन किया है।अजहरुद्दीन ने हार्दिक पांड्या को टी20 प्रारूप का कप्तान बनाने का समर्थन किया है। उन्होंने कहा, 'हार्दिक पांड्या लीडर के रूप में अच्छे लगे और ऐसा लगता है कि वो टीम को साथ लेकर चलना जानते हैं। मगर उन्हें अपनी पीठ को लेकर सतर्क रहने की जरुरत है, जिसके कारण वो लंबे समय तक बाहर रहे हैं। भारत को हार्दिक की जरुरत होगी और हम उनकी चोट को लेकर जोखिम नहीं उठाना चाहते।

रमीज राजा का विवादित बयान कहा- किसी खास पार्टी के माइंड सेट से करती है काम

(आधुनिक समाचार सेवा)
नई दिल्ली। पाकिस्तान के पूर्व चेयरमैन रमीज राजा ने एक बार फिर बीसीसीआई को लेकर विवादित बायन दिया है। रमीज राजा ने कहा कि भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड

बीजेपी है। रमीज राजा ने गवर्नमेंट कॉलेज यूनिवर्सिटी लाहौर में एक कार्यक्रम के दौरान ये बातें कही। पीसीबी के पूर्व अध्यक्ष रमीज राजा ने कहा कि भारतीय मानसिकता पाकिस्तान क्रिकेट की प्रगति को रोकने की थी। रमीज राजा ने कहा, दुर्भाग्य से भारत के साथ जो हो रहा है वह यह है कि वहां पर भाजपा की मानसिकता है। जिन संपत्तियों की मैंने घोषणा की थी, चाहे वह हो या पाकिस्तान महिला लीग, ऐसा इसलिए किया गया था ताकि हम अपनी खुद की पैसा बनाने वाली संपत्ति बना सकें, जो पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड को फंड करेगी, जो हमें आईसीसी की फंडिंग से दूर ले जाएगी।इसके बाद उन्होंने कहा, ङ्कहमारी स्वतंत्रता से समझौता किया जाता है, क्योंकि आईसीसी के अधिकांश संसाधन भारत में बनाए जाते हैं। अगर भारत की मानसिकता पाकिस्तान को हाशिये पर डालने की है तो हम न इधर के रहेंगे न उधर के। राजा ने यह भी कहा कि उन्होंने ऑस्ट्रेलिया और इंग्लैंड क्रिकेट बोर्ड से बात की थी और उन्हें छ्ण् में नेतृत्व की भूमिका निभाने के लिए कहा था जिससे संगठन पैसे के दबाव में नहीं झुकेगा।बता दें कि बीसीसीआई और पीसीबी के बीच एशिया कप 2023 को लेकर विवाद चल रहा है। दरअसल 2023 का एशिया कप पाकिस्तान में प्रस्तावित है। ऐसे में बीसीसीआई सचिव जय शाह ने कहा था कि अगर एशिया कप पाकिस्तान में होता है तो भारत उसमें हिस्सा नहीं लेगा। वहीं, जय शाह के बयान के बाद तत्कालीन पीसीबी रमीज राजा ने इसका विरोध करते हुए पाकिस्तान को एकदिवसीय विश्व कप से बाहर रखने के बात कही थी।

भारत-श्रीलंका के बीच दूसरे वनडे में पिच से किसे मदद मिलेगी जानें मौसम का हाल

(आधुनिक समाचार सेवा)
नई दिल्ली। भारत और श्रीलंका के बीच तीन मैचों की सीरीज का दूसरा वनडे गुरुवार को कोलकाता के ईडन गार्डन्स पर खेला जाएगा। भारतीय समयानुसार लाइव एक्शन दोपहर 1:30 बजे होगा जबकि टॉस कोशिश करेगी। दोनों टीमों के बीच पहला वनडे गुवाहाटी में खेला गया था, जहां भारत ने विराट कोहली (113) के शतक की मदद से 50 ओवर में 373/7 का स्कोर बनाया था। जवाब में श्रीलंका ने कप्तान दासुन शनाका (108) के शतक की 252 रन पर ऑलआउट हुई थी। जवाब में ऑस्ट्रेलियाई टीम 202 रन पर ही ढेर हो गई थी। इतने समय में पिच में क्या बदलाव हुए और अब यहां की पिच से किसे मदद मिलने की उम्मीद है, यहां हम आपको बताएंगे। कोलकाता के ईडन गार्डन?स

आधे घंटे पहले होगा। रोहित शर्मा के नेतृत्व वाली भारतीय टीम मौजूदा सीरीज में 1-0 की बढ़त पर है। मेजबान टीम कोलकाता में जीत दर्ज करके सीरीज अपने नाम करना चाहेगी। वहीं दासुन शनाका के नेतृत्व वाली श्रीलंकाई टीम दमदार वापसी करके सीरीज बराबर करने की मदद से 306/8 का स्कोर बनाया। गुवाहाटी की पिच पर जहां रनों की बरसात हुई, वहीं जानिए कोलकाता की पिच से किसे मदद मिलने की उम्मीद है। बता दें कि कोलकाता के ईडन गार्डन्स पर आखिरी वनडे 5 साल पहले भारत-ऑस्ट्रेलिया के बीच खेला गया था। तब भारतीय टीम की पिच पर स्पिनर्स अपना कमाल दिखा सकते हैं। यहां की पिच थोड़ी धीमी है, लेकिन गेंद फिर भी बल्ले पर आसानी से आती है। भारतीय कप्तान रोहित शर्मा के लिए यह भाग्यशाली मैदान है, तो यहां बल्लेबाजों का दमखम एक बार फिर देखने को मिल सकता है।

'हाथी पांव' होने से लगा कभी क्रिकेट नहीं खेल पाऊंगा, ऑस्ट्रेलिया के प्रमुख क्रिकेटर ने सुनाई आपबीती

(आधुनिक समाचार सेवा)
नई दिल्ली। ऑस्ट्रेलिया के स्टार ऑलराउंडर ग्लेन मैक्सवेल ने बिग बैश लीग में एडिलेड स्ट्राइकर्स और मेलबर्न रेनेगेड्स के बीच मैच मे कमेंट्री करते हुए एक बड़ा खुलासा किया। मैक्सवेल ने कहा, 'मुझे लगा था कि मैं शायद अब दोबारा क्रिकेट नहीं खेल पाऊंगा।' 34 साल के मैक्सवेल को एक घटना के दौरान बाएं पैर में चोट लगी

थी और उन्हें नवंबर में सर्जरी से गुजरना पड़ा था। ग्लेन मैक्सवेल ने अपने पूर्व टीम साथी ब्रेड हैडिन से ऑन एयर से बातचीत करते हुए कहा, 'अस्पताल में पहला सप्ताह काफी मुश्किल भरा था। मुझे लगा था कि शायद मैं दोबारा कभी क्रिकेट नहीं खेल पाऊंगा। जब मैं अस्पताल में था, तब ऐसे ख्याल आ रहे थे क्योंकि मेरे पैर एकदम गुब्बारे की तरह लग रहे थे।' मैक्सवेल ने अस्पताल से घर लौटने के बाद दर्दभरा अनुभव साझा किया। मैक्सवेल ने कहा, 'अस्पताल से वापस लौटने के बाद मैं अगले सप्ताह अपने घर में था। मुझे लगा कि घर में आसानी होगी। मगर नर्स का नहीं होना और लगातार दर्द वाली दवाइयां खाने से मुझे बहुत दर्द महसूस हुआ। घर में रहना बड़ा मुश्किल लगा।' ग्लेन मैक्सवेल ने कहा कि उन्हें अपनी रिकवरी पर गर्व है। उन्होंने कहा, 'मुझे बहुत गर्व है कि कैसे दिन रात मेहनत करके ठीक हुआ हूं। कई रातें गुजरी जब नींद नहीं आई। पैर की बर्फ से सिकाई की और खुद को तैयार किया।' याद दिला दें कि ग्लेन मैक्सवेल ने चोट के समय कहा था कि मेलबर्न में पुराने स्कूल टीचर की हाउस पार्टी में बैकयार्ड होर्सप्ले के दौरान उनके पैर में चोट लगी थी।

क्या सूर्या-किशन को मिलेगा मौक जानें भारत किन ११ खिलाड़ियों के साथ उतर सकता है

(आधुनिक समाचार सेवा)
नई दिल्ली। भारत और श्रीलंका के बीच तीन मैचों की वनडे सीरीज का दूसरा मैच कोलकाता के ईडन गॉर्डन्स में गुरुवार को खेला जाएगा। सलामी बल्लेबाज पाथुम निशंका ने श्रीलंका की पारी को संभाला और मैच में 80 गेंदों पर 72 रन की पारी खेली। उनके अलावा धनजंया डी सिल्वा ने 40 गेंदों में 47 रन बनाए।

पहले मैच में जहां भारत ने श्रीलंका को हराकर सीरीज में 1-0 से बढ़त बना ली है। वहीं, दूसरे मैच को जीतकर सीरीज अपने नाम करने को देखेगी। कप्तान रोहित शर्मा अगर दूसरे वनडे मैच के लिए टीम में कोई बदलाव नहीं करते हैं तो ईशान किशन और सूर्यकुमार को अपनी पारी का इंतजार करना पड़ सकता है। पहले वनडे मैच में भारत ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 7 विकेट के नुकसान पर 374 रन बनाए थे। श्रीलंका ने लक्ष्य का पीछा करते हुए शानदार प्रदर्शन किया। शुरुआत खराब होने के बावजूद बता दें कि कप्तान दसुन शानका ने 88 गेंदों का सामना करते हुए 108 रनों की नाबाद पारी खेली, फिर भी टीम को जीत नहीं दिला सके। इससे पहले भारतीय बल्लेबाजों ने कमाल की बल्लेबाजी की। ओपनर कप्तान रोहित शर्मा (83 रन) और शुभमन गिल (70 रन) ने भारत को एक मजबूत शुरुआत दी। बाद में तेज गेंदबाजों के बेहतरीन प्रदर्शन से भारत ने श्रीलंका को 67 रन से मात दी। पहले वनडे मैच में भारत ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 7 विकेट के नुकसान पर 374 रन बनाए थे। श्रीलंका ने लक्ष्य का पीछा करते हुए शानदार प्रदर्शन किया। शुरुआत खराब होने के बावजूद सलामी बल्लेबाज पाथुम निशंका ने श्रीलंका की पारी को संभाला और मैच में 80 गेंदों पर 72 रन की पारी खेली। उनके अलावा धनजंया डी सिल्वा ने 40 गेंदों में 47 रन बनाए। बता दें कि कप्तान दसुन शानका ने 88 गेंदों का सामना करते हुए 108 रनों की नाबाद पारी खेली, फिर भी टीम को जीत नहीं दिला सके। इससे पहले भारतीय बल्लेबाजों ने कमाल की बल्लेबाजी की। ओपनर कप्तान रोहित शर्मा (83 रन) और शुभमन गिल (70 रन) ने भारत को एक मजबूत शुरुआत दी। बाद में तेज गेंदबाजों के बेहतरीन प्रदर्शन से भारत ने श्रीलंका को 67 रन से मात दी। दूसरे वनडे में भारत पूरानी प्लेइंग इलेवन के साथ उतर सकती है। ओपनर ने बेहतरीन काम किया है। वहीं, केएल राहुल विकेटकीपर के रुप में टीम में शामिल रह सकते हैं। इसे देखते हुए सूर्यकुमार यादव और दोहरा शतक लगा चुके ईशान किशन को अभी अपनी बारी का इंतजार करना पड़ सकता है। इसके अवाला तेजगेंदबाज अर्शदीप और चाइना मैन कुलदीप यादव भी बेंच पर बैठे नजर आ सकते हैं।

विराट कोहली के पास दूसरे वनडे में सचिन तेंदुलकर का बड़ा रिकॉर्ड तोड़ने का सुनहरा मौका

(आधुनिक समाचार सेवा)
नई दिल्ली। श्रीलंका के खिलाफ पहले वनडे में शतक जड़ते ही विराट कोहली ने महान सचिन तेंदुलकर के रिकॉर्ड को तोड़ दिया। कोहली, श्रीलंका के खिलाफ सबसे

ज्यादा शतक जमाने वाले बल्लेबाज बन गए हैं। दूसरे वनडे मैच में भी कोहली पास सचिन तेंदुलकर का एक बड़ा रिकॉर्ड तोड़ने का सुनहरा मौका है। गौरतलब हो कि भारतीय टीम के पूर्व कप्तान विराट कोहली ने मंगलवार को श्रीलंका के खिलाफ पहले वनडे में शतक जमाकर इतिहास रच दिया। कोहली ने अपने अंतरराष्ट्रीय करियर का 73वां जबकि वनडे करियर का 45वां शतक जमाया। भारतीय टीम के स्टार बल्लेबाज ने 87 गेंदों पर 113 रन की पारी खेली।इस शतक के साथ ही विराट कोहली ने महान सचिन तेंदुलकर के रिकॉर्ड को तोड़ दिया। कोहली अब श्रीलंका के खिलाफ सबसे ज?यादा शतक जमाने वाले बल?लेबाज बन गए हैं। कोहली का श्रीलंका के खिलाफ यह 9वां शतक है। उन?होंने सचिन तेंदुलकर (8 शतक) को पीछे छोड़ा, जिनके नाम पहले यह रिकॉर्ड दर्ज था। इसके अलावा कोहली के पास सचिन तेंदुलकर का एक रिकॉर्ड तोड़ने के मौका है। दरअसल, दूसरे वनडे मैच में अगर कोहली शतक लगाते हैं तो वह भारतीय सरजमीं पर सबसे ज्यादा शतक लगाने वाले बल्लेबाज बन जाएंगे। पिछले मैच में शतक लगाते ही कोहली ने सचिन तेंदुलकर के 20 शतकों की बराबरी कर ली। गुरुवार को अगर कोहली शतक लगाते हैं तो वह क्रिकेट के भगवान को पीछे छोड़ देंगे। सचिन ने 164 मैचों में 20 वनडे शतक जमाए थे। वहीं, कोहली ने 102वें मैच में अपने 20 वनडे शतक पूरे किए हैं। बता दें कि गुरुवार को कोलकाता के ईडन गार्डन्स स्टेडियम में सीरीज का दूसरा मैच खेला जाएगा। गुवाहाटी में खेले गए पहले मैच में भारत ने श्रीलंका को 67 रन से मात देकर सीरीज में 1-0 से बढ़त बना ली है।

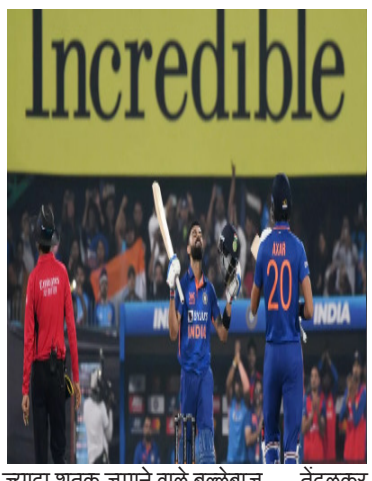

सीरीज जीत ईडन को 'रिटर्न गिफ्ट' देने की तैयारी, सीरीज में 1-0 से आगे है भारतीय टीम

(आधुनिक समाचार सेवा)
कोलकाता। कोलकाता के ईडन गार्डंस स्टेडियम में गुरुवार को भारत-श्रीलंका के बीच होने वाला सीरीज का दूसरा वनडे मैच खास है। क्योंकि यहां पांच साल से भी अधिक समय बाद वनडे मैच हो रहा है। ऐसे में टीम इंडिया यहीं सीरीज जीतकर कर ईडन को 'रिटर्न गिफ्ट' देना चाहेगी। टीम पिछला वनडे मैच 21 सितंबर, 2017 को भारत-आस्ट्रेलिया के बीच खेला गया था, जिसे मेजबान ने 50 रनों से जीता था। उसके करीब ढाई साल बाद 18 मार्च, 2020 को ईडन को भारत-दक्षिण अफ्रीका वनडे मैच की मेजबानी मिली थी, लेकिन देश में फैली कोरोना महामारी के कारण उस मैच के साथ-साथ दक्षिण अफ्रीका के साथ सीरीज को ही रद कर दिया

गया था। विराट से शतकों की हैट्रिक की उम्मीद विराट से ईडन में एक और शतकीय पारी की उम्मीद है। किंग कोहली ने बांग्लादेश के खिलाफ पिछली वनडे सीरीज के आखिरी मैच में शतक लगाया था। उसके बाद गुवाहाटी में मौजूदा वनडे सीरीज के पहले मैच में भी शतकीय पारी इंडिया गुवाहाटी में हुए पहले वनडे मैच में श्रीलंका को 67 रनों से हराकर सीरीज में 1-0 से आगे है। कागज और मैदान, दोनों में भारत का पलड़ा श्रीलंका के मुकाबले भारी नजर आ रहा है, लेकिन 'अंडरडाग' बनकर एशिया कप जीत चुकी श्रीलंकाई टीम वापसी करने का माद्दा रखती है। चूंकि ईडन में पांच साल बाद वनडे मैच होने जा रहा है, इसलिए इसे लेकर काफी उत्साह है। एशिया के सबसे बड़े क्रिकेट ग्राउंड में खेली। अब ईडन में उनसे वनडे में शतकों की हैट्रिक की उम्मीद है।यह वही मैदान है, जहां भारतीय कप्तान रोहित शर्मा ने 2014 में श्रीलंका के खिलाफ 173 गेंदों पर 264 रनों की रिकार्ड तोड़ पारी खेली थी। रोहित ने ब्रेक के बाद शानदार वापसी की है इसलिए उनके प्रशंसक ईडन में उनसे एक और विस्फोटक पारी की उम्मीद कर रहे हैं।

राशिफल

मेष-:तली-भुनी चीजों से दूर रहें और नियमित व्यायाम करते रहें. घरेलू सुख-सुविधा की चीज़ों पर ज़रूरत से ज़्यादा खर्च़ न करें। पिता का तल्ख बर्ताव आपको नाराज़ कर सकता है।

वृष-:जीवन की सभी कठिन परिस्थितियों में आपको अपने माता-पिता का पूरा सहयोग मिलेगा. जो लोग प्रेम के मोर्चे पर मायूस महसूस कर रहे हैं।

मिथुन-:क्षणिक क्रोध विवाद और दुर्भावना का कारण बन सकता है. मनोरंजन और सौन्दर्य वृद्धि पर आवश्यकता से अधिक समय व्यतीत न करें।

कर्क-:आज सभी ग्रह और सितारे आपके पक्ष में हैं, आप जिस भी काम में हाथ डालेंगे, उसमें आपको सफलता जरूर मिलेगी. आज के दिन यात्रा की योजना बन सकती है।

सिंह-:आपकी इच्छा शक्ति को प्रोत्साहन मिलेगा, क्योंकि आप बहुत उलझी हुई परिस्थितियों से निकलने में क़ामयाब रहेंगे. भावनात्मक फैसले लेते समय अपनी तार्किकता को न छोड़ें।

कन्या-:प्रेम के मामले में सफलता मिलेगी. नए कार्यों की शुरुआत करना शुभ रहेगा। आज अपने प्रिय के साथ अपनी व्यक्तिगत भावनाओं और गोपनीय मामलों को साझा करने का सही समय है।

तुला-: जो लोग आपके पास कर्ज के लिए आते हैं, बेहतर होगा आप उन्हें नजरंदाज करें. पारिवारिक मोर्चे पर चीज़ें अच्छी रहेंगी और आप अपनी योजनाओं को पूरा समर्थन मिलने की उम्मीद कर सकते हैं।

वृश्चिक-:छात्रों के लिए दिन अनुकूल है क्योंकि प्रतियोगी परीक्षाओं में सफलता मिल सकती है। जमीन-जायदाद संबंधी कार्य स्थगित करना आपके हित में रहेगा।

धनु-:इससे पहले कि नकारात्मक विचार मानसिक रोग का रूप लें, आपको उन्हें समाप्त कर देना चाहिए. आप किसी परोपकारी कार्य में हिस्सा लेकर ऐसा कर सकते हैं।

मकर-:लंबे समय से चली आ रही दिक्कतों से आज आपको छुटकारा मिल सकता है. आगे बढ़ने के बजाय अपने सभी आगामी कार्यों को पूरा करना ही समझदारी होगी।

कुंभ-:भावनात्मक रूप से बहुत अच्छा दिन नहीं रहेगा. आर्थिक समस्याओं के कारण आपको आलोचना और वाद-विवाद का सामना करना पड़ सकता है।

मीन-:आज आप सकारात्मक ऊर्जा से भरपूर रहेंगे, जिसका असर आपके आसपास के लोगों पर भी पड़ेगा. खुद के काम से समय [illegible] साथ [illegible] नहीं [illegible]

सम्पादकीय

आबादी का स्वरूप बिगाड़ती घुसपैठ, राज्यों के सहयोग के बिना इसपर नियंत्रण पाना असंभव

हाल में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता में कोलकाता में राष्ट्रीय गंगा परिषद की दूसरी बैठक हुई। प्रधानमंत्री राष्ट्रीय गंगा परिषद के अध्यक्ष हैं तो बंगाल, बिहार, झारखंड, उत्तर प्रदेश और उत्तराखंड के प्रतिनिधि इसके सदस्य होते हैं। इन राज्यों के मुख्यमंत्री ही इसकी बैठक में हिस्सा लेते हैं। बैठक में अन्य राज्यों के मुख्यमंत्री तो मौजूद रहे, लेकिन बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने स्वयं भाग न लेकर अपनी जगह उपमुख्यमंत्री तेजस्वी यादव को भेजा। इसी तरह का एक और वाकया देखिए। कुछ समय पहले कोलकाता में ही केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह की अध्यक्षता में राष्ट्रीय सुरक्षा पर 'पूर्वी क्षेत्रीय विकास परिषद' की एक बैठक हुई। इसमें सीमा पार यानी बांग्लादेश से हो रही घुसपैठ और तस्करी आदि राष्ट्रीय सुरक्षा से जुड़े मुद्दों पर चर्चा की गई। बैठक में केंद्रीय गृहमंत्री के अलावा बंगाल और झारखंड के मुख्यमंत्री तो शामिल हुए, पर ओडिशा और बिहार के मुख्यमंत्री शामिल नहीं हुए। जबकि बिहार इन दिनों जिहादी आतंकवाद की शरणस्थली बना हुआ है। देश को पांच क्षेत्रों-उत्तरी, मध्य, पूर्वी, पश्चिम और दक्षिण में विभाजित किया गया है। दरअसल अंग्रेजी शासन के तहत बिहार, बंगाल, ओडिशा और झारखंड एक ही प्रांत थे। इसे ही 'पूर्वी भारत' भी कहा जाता है। चारों प्रांतों की सीमाएं अनेक जगहों पर आपस में मिलती हैं। बंगाल और बिहार ही पूर्वोत्तर के आठों प्रांतों को भारत से जोड़ते हैं। अतः सामरिक दृष्टि से इनका अपना एक विशेष महत्व है। बांग्लादेश की आधी यानी लगभग 2,200 किलोमीटर की सीमा बंगाल से सटी हुई है। बांग्ला भाषा के कारण भारतीय और बांग्लादेशी के बीच फर्क कर पाना कठिन होता है। इसका फायदा उठाकर बांग्लादेश से घुसपैठिए, आतंकी और तस्कर भारत में प्रवेश करते रहे हैं। 1979 में असम के मंगलदोई संसदीय सीट पर पुनर्मतदान के समय मात्र एक वर्ष में ही लगभग 47,000 मुस्लिम मतदाताओं की वृद्धि ने बांग्लादेश से हो रही इस घुसपैठ के प्रति देश का ध्यान खींचा। मुस्लिम घुसपैठ के कारण असम में चले आंदोलन और फिर केंद्र सरकार एवं असम आंदोलनकारियों के बीच 1985 में हुए समझौते के बाद यह मुद्दा न केवल असम, बल्कि राष्ट्र का मुद्दा बन गया। अतः भारत में हो रही इस घुसपैठ को रोकने के लिए भारत-बांग्लादेश सीमा पर तारबंदी शुरू हुई, पर सीमा की प्राकृतिक बनावट और भाषाई अनुकूलता का फायदा उठाकर घुसपैठिए बिना किसी भय के भारत में लगातार आते रहे। आज भी बंगाल, बिहार, झारखंड और ओडिशा घुसपैठियों का प्रवेश द्वार बने हुए हैं। सेक्युलर राजनीति इन्हें संरक्षण प्रदान कर रही है। यह घुसपैठ देश की आबादी के स्वरूप को किस कदर बिगाड़ रही है, इसकी एक बानगी देखिए। 1961 से 2011 यानी विगत पांच दशकों में देश में हिंदू जनसंख्या वृद्धि दर 125.78 प्रतिशत तथा मुस्लिम जनसंख्या वृद्धि दर 194.38 प्रतिशत रही और देश की कुल जनसंख्या में औसतन मुस्लिम आबादी 3.54 प्रतिशत बढ़ी। वहीं इस दौरान असम में मुस्लिम जनसंख्या वृद्धि दर 286.16 प्रतिशत रही तथा मुस्लिम आबादी 10.93 प्रतिशत बढ़ी। बंगाल में मुस्लिम जनसंख्या वृद्धि दर 252.95 प्रतिशत रही और मुस्लिम आबादी 7.01 प्रतिशत बढ़ी। ओडिशा में हिंदू जनसंख्या वृद्धि दर 129.51 प्रतिशत तो मुस्लिम जनसंख्या वृद्धि दर 323.40 प्रतिशत रही। झारखंड में भी हिंदू जनसंख्या वृद्धि दर 142.21 तो मुस्लिम जनसंख्या वृद्धि दर 340.35 प्रतिशत रही। झारखंड के संताल परगना के साहिबगंज में 14.7 प्रतिशत तो पाकुड़ जिले में मुस्लिम जनसंख्या में 13.84 प्रतिशत की वृद्धि हुई। बिहार के किशनगंज प्रखंड में मुस्लिम आबादी 14.19 प्रतिशत तथा कटिहार के बारसोई प्रखंड में 16.33 प्रतिशत मुस्लिम जनसंख्या बढ़ी। बांग्लादेश से हो रही घुसपैठ के कारण बंगाल के मुर्शिदाबाद, मालदा और उत्तरी दिनाजपुर जिले तो मुस्लिम बहुल हो गए हैं। बिहार का किशनगंज जिला भी मुस्लिम बहुल हो गया है और निकट भविष्य में कटिहार तथा अररिया भी मुस्लिम बहुल हो जाएंगे। पूर्वोत्तर जाने वाली ट्रेनें झारखंड के साहिबगंज और बिहार के कटिहार और किशनगंज जिले से होकर ही गुजरती हैं। जिहादी ताकतें बिहार के अररिया, किशनगंज और कटिहार, झारखंड के साहिबगंज और पाकुड़ तथा बंगाल के मुर्शिदाबाद-मालदा और उत्तरी दिनाजपुर जिले को भारत से काटने की एक दीर्घकालिक योजना पर कार्यरत हैं।

साकार होता स्वामी विवेकानंद का सपना, उनके ही विचारों से ओतप्रोत हैं पीएम मोदी द्वारा प्रवर्तित पांचों संकल्प

संयुक्त राष्ट्र के निर्णय के अनुसार 1984 को 'अंतरराष्ट्रीय युवा वर्ष' घोषित किया गया। इसके महत्व पर विचार करते हुए भारत सरकार ने घोषणा की कि 1984 से 12 जनवरी यानी स्वामी विवेकानंद की जन्म-जयंती के दिन को 'राष्ट्रीय युवा दिवस' के रूप में मनाया जाएगा। वस्तुतः, स्वामी विवेकानंद वह विश्वव्यापी विचार हैं, जिसे न सिर्फ भारत, अपितु विश्व के युवाओं ने भी स्वीकार किया है। 'नर सेवा-नारायण सेवा' का मंत्र देने वाले स्वामी विवेकानंद की आज 160वीं जन्म-जयंती है। उन्होंने 39 वर्ष पांच माह और 22 दिन का जीवन जिया, लेकिन उनके संसार से जाने के लगभग 120 वर्ष बाद भी न सिर्फ भारत, बल्कि विश्व उन्हें एक प्रेरणा के रूप में याद कर रहा है। भारतीय आत्मा को अक्षुण्ण रखते हुए सार्वभौमिक विचारों से संवाद स्वामी जी की प्रमुख विशेषता रही। स्वामी विवेकानंद ने कहा था, 'भारत पुनः विश्व गुरु बनेगा, जो पूरे संसार का पथप्रदर्शन करने में समर्थ होगा।' उन्होंने जो भविष्यवाणी की थी अब सिर्फ उसका सत्य सिद्ध होना शेष है। वर्तमान भारत प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में जिस दिशा में आगे बढ़ रहा है, वह निश्चित रूप से स्वामी विवेकानंद के स्वप्न की पूर्ति कर रहा है। 15 अगस्त, 2022 को स्वतंत्रता दिवस पर प्रधानमंत्री मोदी द्वारा दिए गए भाषण में अमृत काल के पांच संकल्पों को हम स्वामी विवेकानंद के विचारों और प्रेरणा से भी जोड़कर देख सकते हैं। पहला संकल्प है 'विकसित भारत'। अमेरिका से लौटकर स्वामी विवेकानंद ने देशवासियों से आह्वान किया था कि 'नया भारत निकल पड़े मोची की दुकान से, भड़भूंजे के भाड़ से, कारखाने से, हाट से, बाजार से, निकल पड़े झोपड़ियों से, जंगलों से, पहाड़ों से, पर्वतों से और खेत-खलिहानों से और पुनः भारत मां को विश्वगुरु के पद पर आसीन कर दे।' पीएम मोदी का भी यही मानना है कि जनभागीदारी और 'सबका साथ-सबका विकास' के मंत्र से ही हम विकसित भारत के महान लक्ष्य को पूरा करेंगे। दूसरा संकल्प है 'गुलामी से मुक्ति'। 1897 में स्वामी विवेकानंद से किसी ने पूछा कि 'स्वामी जी मेरा धर्म क्या है?' स्वामी जी ने उत्तर दिया कि 'गुलाम का कोई धर्म नहीं होता। अगले 50 वर्षों तक सिर्फ भारत को गुलामी से आजाद कराना ही तुम्हारा धर्म है।' स्वामी जी कहा करते थे कि ठहम वह हैं, जो हमें हमारे सोच ने बनाया है, इसलिए इस बात का ध्यान रखिए कि आप क्या सोचते हैं। शब्द गौण हैं, विचार रहते हैं, वे दूर तक यात्रा करते हैं।ठ अर्थात अपने मन मस्तिष्क में गुलामी का कोई भी विचार न रहने दें। यही बात पीएम मोदी ने कही कि हमारे मन के भीतर किसी भी कोने में गुलामी का एक भी अंश न रहे। भारत गुलामी की जंजीरों में जकड़ा हुआ था, तब स्वामी विवेकानंद ने भारत की प्राचीन सभ्यता, संस्कृति, विरासत, अध्यात्म और वैभवशाली इतिहास के बारे में विदेशी धरती पर गर्व के साथ बताया। उसके बाद पुनः भारत को मान-सम्मान मिला। गुलामी के कारण जो हीनता का भाव भारतीयों में आया था वह खत्म हुआ। मानो किसी नए सवेरे ने जन्म लिया। तीसरा संकल्प है 'विरासत पर गर्व'। 11 सितंबर, 1893 का स्वामी जी का शिकागो में दिया गया भाषण इसका सर्वोत्तम उदाहरण है। जब विश्व विजय की इस यात्रा से सभी भारतवासियों में ऊर्जा की एक नई लहर दौड़ी और भारत फिर से परम वैभव को प्राप्त करने की दिशा में अग्रसर हुआ। यही बात प्रधानमंत्री मोदी भी कहते हैं कि हमें अपनी सामर्थ्य पर भरोसा होना चाहिए। हमें अपने देश की विरासत पर गर्व होना चाहिए, क्योंकि इसी विरासत ने भारत को कभी स्वर्ण काल दिया था। चौथा संकल्प है 'एकता और एकजुटता'। एकता और एकजुटता पर स्वामी जी का विश्व को संदेश था कि 'जल्द ही हर धर्म की पताका पर लिखा हो-विवाद नहीं, सहायता। विनाश नहीं, संवाद। मतविरोध नहीं, समन्वय और शांति।' आज विश्व को आतंकवाद के खिलाफ नरेन्द्र मोदी का भी यही संदेश है। स्वामी विवेकानंद ने देशवासियों से कहा था कि 'इस बात पर गर्व करो कि तुम एक भारतीय हो और अभिमान के साथ यह घोषणा करो कि हम भारतीय हैं और प्रत्येक भारतीय हमारा भाई है।' प्रधानमंत्री मोदी ने भी 'एक भारत-श्रेष्ठ भारत' के भाव को मन में समेटे हुए कहा है कि हमें अपनी देश की विविधता को बड़े उल्लास से मनाना चाहिए, क्योंकि किसी देश की सबसे बड़ी ताकत उस देश की एकता और एकजुटता में ही होती है। पांचवां संकल्प है 'नागरिकों का कर्तव्य'। स्वामी विवेकानंद द्वारा लिखित 'कर्मयोग' नामक पुस्तक का चौथा अध्याय है- 'कर्तव्य क्या है?' इसमें उन्होंने जीवन के हर कर्तव्य के बारे में विस्तार से बताया है। स्वामी जी ने लिखा है कि 'हमारा पहला कर्तव्य है कि हम अपने प्रति घृणा न करें।' उसी प्रेरणा से प्रधानमंत्री मोदी ने कहा है कि नागरिकों का कर्तव्य देश और समाज की प्रगति का रास्ता तैयार करता है। यह मूलभूत प्रणशक्ति है। स्पष्ट है भारत की स्वतंत्रता के अमृत काल के संकल्पों में स्वामी विवेकानंद के विचार अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। अपनी आध्यात्मिक शक्ति, गौरवपूर्ण संस्कृति-संस्कारों से ओतप्रोत अद्भुत सामर्थ्य, वैश्विक शांति एवं सौहार्द के लिए वसुधैव कुटुंबकम् के भारतीय दर्शन और मानव कल्याण की प्रेरणा देने वाले सनातन धर्म के कारण ही भारत विश्वगुरु की प्रतिष्ठा को प्राप्त करेगा।

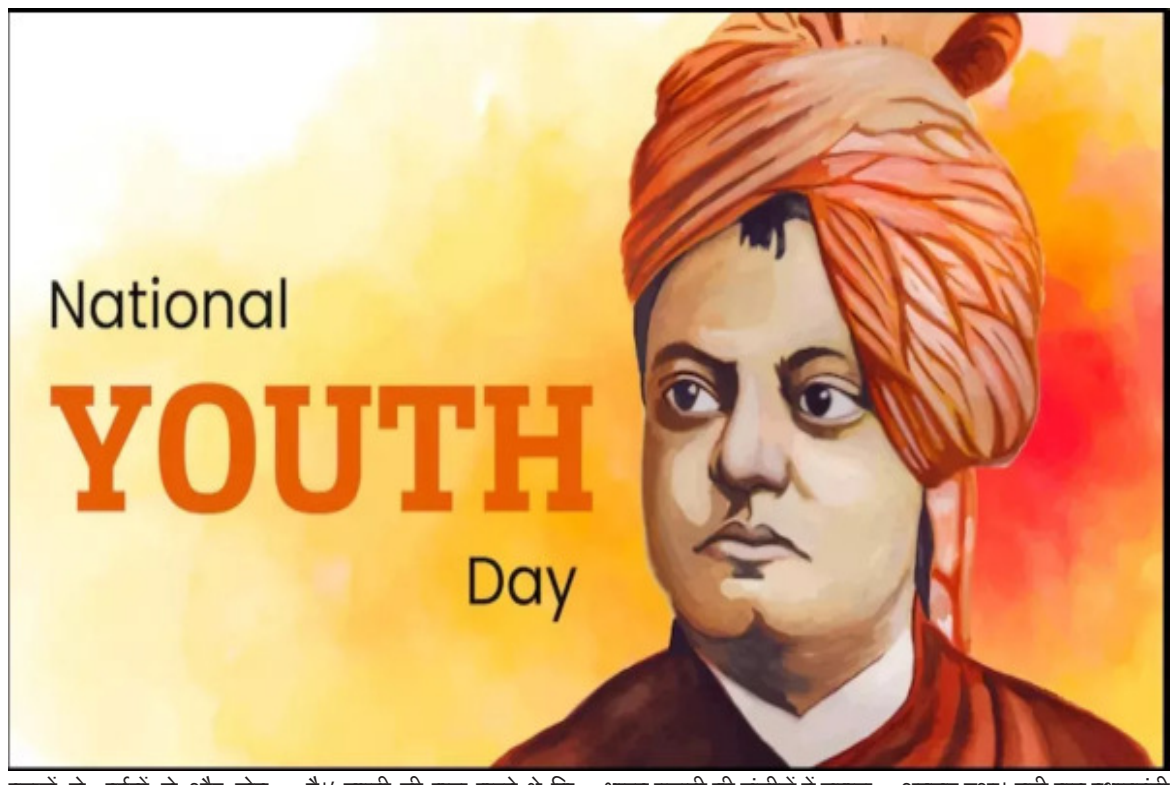

विकासशील देशों की आवाज बनता भारत

विकसित देशों ने संसाधनों के मामले में विकासशील देशों के साथ पारंपरिक रूप से अन्याय ही किया है। इसने दुनिया के इन दोनों ध्रुवों के बीच असमानता की खाई को चौड़ा किया है। दिसंबर में साउथ सेंटर द्वारा जारी 'इलिसिट फाइनेंशियल फ्लोज एंड स्टोलन असेट रिकवरी' अध्ययन में पुनः इसी रुझान की पुष्टि हुई है। ऐसे में विकासशील देशों के हितों की अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पैरवी अपरिहार्य हो गई है। इसी दायित्व की पूर्ति के लिए भारत 12 जनवरी से दो दिवसीय 'वाइस आफ ग्लोबल साउथ समिट' का आयोजन करने जा रहा है। इसमें 120 से अधिक देशों के प्रतिनिधि जुटकर एक मंच पर अपना दृष्टिकोण एवं प्राथमिकताओं को साझा करेंगे। इस आयोजन का उद्देश्य विकासशील देशों में सहयोग एवं एकता का भाव बढ़ाना है। भारत हमेशा से विकासशील देशों की आवाज को मुखरता से उठाने के मामले में अग्रणी रहा है। असल में वैश्विक समुदाय में भारत की स्थिति बहुत अनोखी है। विकासशील देशों में गिनती होने के बावजूद भारत विशाल आबादी और तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था वाला देश है। इससे भारत को अंतरराष्ट्रीय संबंधों विशेषकर विकासशील देशों के संदर्भ में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने की गुंजाइश मिल जाती है। संप्रति भारत कम से कम तीन स्तरों पर विकासशील देशों की चिंताओं को लेकर आवाज बुलंद कर रहा है। जैसे कि मौजूदा सरकार के दौर में भारत ने अंतरराष्ट्रीय संगठनों और मंचों पर सक्रियता से सहभागिता आरंभ की है। फिर चाहे संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की अध्यक्षता हो या जी-20 की कमान, भारत ने समय के साथ एक नेतृत्वकर्ता का अवतार लिया है। वह विश्व व्यापार संगठन और विश्व बैंक सहित तमाम मंचों पर विकासशील देशों के हितों की पुरजोर वकालत कर रहा है। दूसरा स्तर विकासशील देशों के साथ प्रगाढ़ संबंध बनाने का है। गत वर्षों के दौरान भारत ने तमाम विकासशील देशों विशेषकर अफ्रीकी और दक्षिण अमेरिकी देशों के साथ आर्थिक सहयोग एवं सांस्कृतिक आदान-प्रदान के आधार पर मजबूत रिश्ते गांठे हैं। इससे विकासशील विश्व के हितों के पक्ष में माहौल बनाने का उपयुक्त मंच तैयार हुआ है। तीसरा पहलू दक्षिण-दक्षिण सहयोग की कड़ी के रूप में भारत की महारत से जुड़ा है। ऐसे सहयोग में गुटनिरपेक्ष आंदोलन ने अहम भूमिका निभाई। वर्ष 2009 में दक्षिण-दक्षिण सहयोग पर आयोजित उच्चस्तरीय संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन के नैरोबी दस्तावेज में भी इसकी स्वीकारोक्ति हुई। बेलग्रेड में 1961 में हुए गुटनिरपेक्ष देशों के पहले सम्मेलन में विकासशील देशों के बीच व्यापारिक संबंधों को मजबूत बनाने की स्पष्ट प्रतिबद्धता जताई गई। हालांकि, विकासशील देशों में सहयोग की प्रक्रिया 1968 में तभी जाकर शुरू हो पाई, जब भारत, मिस्र और यूगोस्लाविया ने व्यापार समझौता किया। वर्ष 1972 में गुटनिरपेक्ष आंदोलन ने अपने सदस्य देशों और अन्य विकासशील देशों के बीच आर्थिक सहयोग को स्वीकृति प्रदान की थी। हाल के दौर में विकासशील देशों को कोविड रोधी वैक्सीन उपलब्ध कराना भी दक्षिण-दक्षिण सहयोग के प्रति भारत के निरंतर प्रयासों का प्रमाण है। दुनिया में चुनिंदा विकासशील देश ही हैं, जो अन्य विकासशील देशों या अल्पविकसित देशों में निवेश करते हैं। इस प्रकार के निवेश में चीन और भारत अग्रणी हैं, जो अन्य देशों में भी विकास कार्यों को विस्तार दे रहे हैं। हालांकि, चीन कर्ज के जाल में फंसाने के लिए कुख्यात हो चला है। चीन की कर्ज जाल में फंसाने वाली रणनीति कई देशों की संप्रभुता पर आघात करने वाली सिद्ध हुई है। चीन अपनी आर्थिक एवं वित्तीय ताकत का इस्तेमाल बुनियादी ढांचे से जुड़ी परियोजनाओं के लिए विकासशील देशों को कर्ज की आड़ में लुभाता है और फिर जब वह देश उसके इस जाल में फंस जाता है तो इसका परिणाम वहां चीन के राजनीतिक प्रभाव एवं रणनीतिक लाभ के रूप में निकलता है। इस चीनी परिपाटी को लेकर चिंता व्यक्त की जाने लगी है कि इससे आर्थिक अस्थिरता और यहां तक कर्जदार देशों के समक्ष दिवालिया होने तक का संकट पनप सकता है। पड़ोस में श्रीलंका और पाकिस्तान ही इस चीनी कर्ज जाल में फंसने के भुक्तभोगी हैं। इसी के चलते श्रीलंका हंबनटोटा बंदरगाह चीन को 99 साल के लिए लीज पर देने को विवश हुआ। पाकिस्तान ने भी चीन-पाकिस्तान आर्थिक गलियारे यानी सीपैक के लिए बीजिंग से भारी-भरकम कर्ज लिया है और यही आशंका जताई जा रही है कि उसके लिए उसकी भरपाई बेहद कठिन होगी।

चुनौतियों से जूझते लोकतंत्र, ब्राजील का घटनाक्रम अन्य के लिए भी एक सबक

बीते दिनों ब्राजील की संसद यानी कांग्रेस में उपद्रव ने पूरी दुनिया का ध्यान अपनी ओर खींचा। इससे पहले कड़वाहट भरे चुनाव अभियान के करीब दो महीने बाद मामूली अंतर से बनी सरकार के दौर में ब्राजील में चीजें सहज होती दिख रही थीं। इस महीने जब लुइस इनासियो 'लूला' डी सिल्वा ने तीसरी बार ब्राजील के राष्ट्रपति की शपथ ली तो उन्होंने 'लोगों के साथ मिलकर' ब्राजील के 'पुनर्निर्माण' का वादा किया था। साथ ही उन्होंने अपने पूर्ववर्ती और प्रतिद्वंद्वी जोइस बोलसोनारो पर भी परोक्ष रूप से निशाना साधते हुए कहा था कि हम उन लोगों के विरुद्ध प्रतिशोध का कोई भाव नहीं रखते, जिन्होंने देश पर अपना निजी और वैचारिक एजेंडे थोपने का प्रयास किया। लूला ने कहा कि हम विधि के शासन की सत्ता सुनिश्चित करेंगे। उस समय बोलसोनारो के समर्थकों की ओर से हिंसा की आशंका जताई जा रही थी। हालांकि, तब ऐसा कुछ घटित नहीं हुआ, लेकिन वह तूफान से पहले की शांति साबित हुई। लूला के शपथ ग्रहण के करीब हफ्ते भर बाद बोलसोनारो समर्थकों ने ब्राजीली झंडा थामकर राजधानी ब्राजीलिया स्थित संसद, सुप्रीम कोर्ट और राष्ट्रपति आवास जैसे लोकतांत्रिक प्रतीकों पर धावा बोल दिया। मामला इतना गंभीर हो गया कि सरकार को महत्वपूर्ण स्थल 24 घंटों के लिए बंद करने पड़े। स्थिति को सामान्य बनाने के लिए राष्ट्रपति की आपात शक्तियों के तहत राष्ट्रीय सुरक्षा गार्ड को तैनात करना पड़ा। लूला ने प्रदर्शनकारियों के संसद तक पहुंचने के लिए सुरक्षाकर्मियों को आड़े हाथों लिया। गिरफ्तार प्रदर्शनकारियों में ब्राजीलिया के पूर्व जन सुरक्षा प्रमुख एंडरसन टोरेस भी शामिल थे। इस घटनाक्रम ने ब्राजील के अस्थिर लोकतांत्रिक ढांचे को दर्शाने का ही काम किया। इस पूरे फसाद की जड़ अक्टूबर में हुए तल्ख चुनाव से जुड़ी हुई है, जिसने देश का इतना ध्रुवीकरण कर दिया कि यह देश उससे उपजे संकट को सुलझा नहीं सका। बेहद करीबी मुकाबले में लूला ने 50.8 प्रतिशत मतों के साथ सत्ता हासिल की तो उनके प्रतिद्वंद्वी को 49.2 प्रतिशत मत मिले। ब्राजील के इतिहास में यह सर्वाधिक ध्रुवीकरण वाला चुनाव सिद्ध हुआ, लेकिन बोलसोनारो ने कभी आधिकारिक रूप से हार स्वीकार नहीं की। वह मतदान प्रणाली को लेकर भी संदेह प्रकट कर चुके हैं। उनके तमाम समर्थकों को भी उनकी हार गले नहीं उतर पाई और उन्हें लगा कि चुनावों में गड़बड़ी हुई। ब्राजील में वाम और दक्षिण के बीच विभाजन देखना बहुत सरल है, किंतु आज बुनियादी भ्रंशरेखा यही दिखाती है कि ब्राजील की तकरीबन आधी आबादी लूला की जीत से प्रभावित नहीं और उनकी सोच यही है कि ब्राजील के लोकतांत्रिक संस्थानों में उनका कोई प्रतिनिधित्व नहीं रह गया है। बात व्यापक सांस्कृतिक विभाजन तक पहुंच गई है, जहां बोलसोनारो के तमाम समर्थक उन्हें 'ईश्वर, मातृभूमि और परिवार' जैसे मूल्यों को पुनर्स्थापित करने का श्रेय देते हैं। नेतृत्व ने इस विभाजन की खाई को और चौड़ा ही किया। यूं तो बोलसोनारो ने दंगाइयों की निंदा की है, लेकिन प्रदर्शनकारियों को भड़काने की जिम्मेदारी नहीं ली और पूरे प्रकरण में सार्वजनिक रूप से सामने आने में भी छह घंटे लगा दिए। लूला ने बोलसोनारो पर आरोप मढ़ते हुए कहा कि सभी जानते हैं कि पूर्व राष्ट्रपति के तमाम भाषणों ने इसे भड़काया। अनुमान से कहीं ज्यादा करीबी चुनाव परिणाम ने कई वर्गों में उस धारणा को मजबूत किया कि लूला की जीत में कुछ न कुछ गड़बड़ है और उसे दुरुस्त करने के लिए किसी भी हद तक कुछ भी किया जाना चाहिए।इस प्रकरण ने दो वर्ष पहले ट्रंप समर्थकों द्वारा अमेरिकी संसद में किए गए उपद्रव की यादें ताजा करा दी। ट्रंप के कुछ समर्थकों की भी अफवाहों के माध्यम से ब्राजील में इस संकट को और बढ़ाने में भूमिका रही। यह ब्राजीली लोकतंत्र के समक्ष समीक्षा का समय है। संस्थान स्वाभाविक रूप से नाजुक होते हैं। उनकी निरंतर निगरानी आवश्यक होती है। कारगर बने रहने के लिहाज से राजनीतिक लोकतंत्र सबसे कठिन संस्थागत ढांचा होता है, क्योंकि इसमें भावनात्मक जुड़ाव की आवश्यकता होती है। तानाशाही शासनों में ऐसा जुड़ाव नहीं होता और वहां एक सुगठित नौकरशाही सब कुछ प्रबंध करने में पर्याप्त होती है। चीनी कम्युनिस्ट पार्टी ऐसी नौकरशाही की सबसे बड़ी मिसाल है, जो समय के साथ और प्रभावी होती गई, किंतु लोकतंत्र और उसके संस्थान कड़ी मेहनत की मांग करते हैं। उन्हें भरोसे के मानवीय मूल्यों, आस्था-विश्वास और दायित्व भाव के साथ पोषित करना पड़ता है। हालिया हिंसा के बाद ऐसा सुझाव देना आसान है कि ब्राजील एकजुटता के लिए आगे आए, लेकिन बड़ा प्रश्न यही है कि मौजूदा विभाजन के दौर में यह कैसे संभव होगा। अराजक तत्वों पर निश्चित रूप से कड़ी कानूनी कार्रवाई होनी चाहिए, लेकिन लूला को बोलसोनारो समर्थकों तक पैठ बनाने के लिए कुछ ठोस करने की आवश्यकता होगी, जो कि देश की आबादी का करीब आधा हिस्सा हैं। उनमें से तमाम को किसी युक्ति से भले ही साधा जा सके, लेकिन इसकी संभावना कम ही है कि वे लूला को अपने रहनुमा के रूप में स्वीकार करें। अपनी जीत के तुरंत बाद लूला ने देश को एकजुट करने का वादा किया था कि वह 21.5 करोड़ नागरिकों की सेवा को तत्पर रहेंगे न कि केवल उन्हीं लोगों के लिए, जिन्होंने उन्हें वोट दिया था। हालिया घटनाएं यही दर्शाती हैं कि इस मामले में कथनी आसान थी, लेकिन करनी खासी मुश्किल। ब्राजील की जनता केवल राजनीतिक रूप से ही विभाजित नहीं है। उसमें बुनियादी सामाजिक ध्रुवीकरण भी प्रत्यक्ष है। यह नीतियों में प्रतिबिंबित भी हो रहा है। ऐसे में लूला के समक्ष चुनौती खासी कड़ी हो गई है, जिसमें उन्हें एक तरह से राष्ट्र का नए सिरे से निर्माण करना है।

संक्षिप्त समाचार

अल-जवाहिरी के बाद कौन होगा अल कायदा का चीफ असमंजस में आतंकी संगठन

वॉशिंगटन। अमेरिका ने अल कायदा चीफ अयमान अल-जवाहिरी को अफगानिस्तान के काबुल में एक ड्रोन हमले में मार गिराने का दावा किया था। अमेरिका के खुफिया अधिकारी का कहना है कि अल-जवाहिरी के उत्तराधिकारी को लेकर स्थिति स्पष्ट नहीं है। वॉशिंगटन इंस्टीट्यूट की ओर से आयोजित एक कार्यक्रम में यूएस नेशनल काउंटर टेररिज्म सेंटर के निदेशक क्रिस्टीन अबिजैद ने एक सवाल के जवाब में कहा, ठअल कायदा के पास खुद इसका जवाब नहीं है कि जवाहिरी के बाद उत्तराधिकारी कौन होगा।ठ यूरोपियन फाउंडेशन फॉर साउथ एशियन स्टडीज (ईएफएए) की रिपोर्ट के अनुसार, 9/11 के आतंकी हमले के साजिशकर्ता अल जवाहिरी के पाकिस्तान में रहने की सूचना मिली थी। तब तालिबान ने अफगानिस्तान पर कब्जा नहीं किया था। अंदेशा था कि वो पाकिस्तानी खुफिया एजेंसी आईएसआई के संरक्षण में था।जवाहिरी की मौत के बाद सैफ अल-अदेल का नाम अल कायदा के उत्तराधिकारी के तौर पर सबसे आगे है।

एक कम्पनी के फील्डर को ट्रक ने मारी टक्कर, मौकै पर ही मौत

(आधुनिक समाचार सेवा)

नोएडा। सेक्टर 58 के अन्तर्गत 11 /1/ 23 को मोहन सिंह पुत्र राम सिंह निवासी मकान नंबर 42 / 16 जनता फ्लैट पॉकेट 7 सेक्टर 82 थाना फेस-2 नोएडा जो सेक्टर 57 में बेलपतराम वेंचर प्राइवेट लिमिटेड कंपनी ए/10 में काम करते थे कंपनी के ही चेक बैंक में जमा करने हेतु अपनी मोटरसाइकिल नंबर यूपी 16 बी वी 4825 से जा रहे थे कि जैसे ही यूफ्लेक्स कंपनी के पास अथॉरिटी शौचालय के पास ट्रक नंबर एच आर 38 डब्ल्यू 5130 द्वारा तेजी व लापरवाही से चला कर ला कर पीछे से टक्कर मारकर मोहन सिंह की मृत्यु हो गई है जिसका शब कैलाश हॉस्पिटल सेक्टर 71 नोएडा की मोर्चरी में है ट्रक को कबजा में लिया गया है डी पार्क सेक्टर 62 में खड़ा किया गया है पंचायत नामा व अन्य विधिक कार्यवाही की जा रही है।

18वी राष्ट्रीय जम्बूरी भारत स्काउट और गाइड में उ0 प्र0 बना विजेता

(आधुनिक समाचार सेवा)

नोएडा। 4 जनवरी से 10 जनवरी तक रोहट, पाली, राजस्थान में 18वीं राष्ट्रीय जंबूरी का आयोजन हुआ। इस जम्बूरी में भारत सहित कई देशों के लगभग 37 हजार स्काउट और गाइड ने प्रतिभाग किया। जम्बूरी का उद्घघाटन 04 जनवरी को महामहिम राष्टपति द्रोपदी मुर्मू जी के करकमलों द्वारा किया गया। इस जम्बूरी में जनपद गौतम बुद्ध नगर से भारत स्काउट एवं गाइड की 15 सदस्यों की टीम ने श्री जयप्रकाश स्काउट मास्टर, बिहारी लाल इण्टर कॉलेज दनकौर व श्रीमती भारती श्रीवास्तव जिला बेसिक गाइड कैप्टन गौतमबुद्धनगर के नेतृत्व में, जिला स्काउट मास्टर श्रीमती ज्योतिर्मयी पाण्डेय, ब्लॉक गाइड कैप्टन श्रीमती आरती कुलश्रेष्ठ , ब्लॉक स्काउट मास्टर श्रीमती रश्मि त्रिपाठी , ट्रेनिंग काउन्सलर श्री विकास कुमार और श्री कादिर खान के साथ बिहारी लाल इण्टर कॉलेज के 4 स्काउट और 1 गाइड एवं लाला लाजपत राय कन्या इन्टर कॉलेज ,दनकौर की 04 गाइड के साथ प्रतिभाग किया। जंबूरी कार्यक्रम में उत्तर प्रदेश के बच्चों ने द्वार निर्माण में गाइड्स व टावर निर्माण में स्काउट्स ने प्रथम स्थान प्राप्त किया इसके अतिरिक्त एडवेंचर स्पोर्ट्स, पीजेंट शो, कैम्प-फायर, सांस्कृतिक कार्यक्रम, फूड प्लाजा, प्रदेश की प्रदर्शनी आदि प्रतियोगिताओं में पूरे उत्साह के साथ प्रतिभाग कर राज्य के लिए अंक जुटाए जिला गाइड कमिश्नर डॉ. मिथिलेश गौतम , जिला संगठन कमिश्नर स्काउट श्री शिवकुमार,जिला संगठन कमिश्नर गाइड श्रीमती शैफाली गौतम ने जंबूरी स्थल रोहट, पाली राजस्थान पहुंचकर बच्चों का उत्साह वर्धन किया और राष्ट्रीय स्तर पर विजेता टीम के सदस्य बने।

स्वामी विवेकानंद जी की जयंती पर यंग इंडिया रनठ कार्यक्रम आयोजित

(आधुनिक समाचार सेवा)

नोएडा। भारतीय जनता युवा मोर्चा नोएडा महानगर ने आज 12 जनवरी को स्वामी विवेकानंद जी की जन्म जयंती के उपलक्ष्य में ठ यंग इंडिया रन ठ कार्यक्रम के अंतर्गत नोएडा स्टेडियम गेट नंबर 4 से मैराथन का आयोजन किया। मैराथन को पूर्व मंत्री माननीय नवाब सिंह नागर, भाजयुमो प्रदेश मंत्री एवम् ठयंग इंडिया रनठ कार्यक्रम की प्रदेश सह संयोजक सुश्री अंजली चौहान तथा भाजपा जिलाध्यक्ष मनोज गुप्ता ने हरी झंडी दिखा करके प्रारंभ किया। मैराथन में मुख्य अतिथि के पी मलिक माननीय वन,पर्यावरण, जंतु उद्यान एवं जलवायु परिवर्तन राज्य मंत्री उत्तर प्रदेश सरकार रहे तथा विशिष्ट अतिथि भाजयुमो प्रदेश मंत्री, ठयंग इंडिया रनठ की प्रदेश सह संयोजक तथा भाजयुमो नोएडा महानगर प्रवासी सुश्री अंजली चौहान जी ,पूर्व मंत्री उत्तर प्रदेश सरकार श्री नवाब सिंह नागर जी उपस्थित रहे। 5 किलोमीटर की मैराथन प्रातः 8:45 पर नोएडा स्टेडियम गेट नंबर 4 से आरंभ हो करके एडोब चौराहे से होते हुए प्रकाश अस्पताल के अंडरपास से सुमित्रा अस्पताल के सामने से मोरना सिटी सेंटर के अंडरपास के ऊपर से यू टर्न ले करके वापस नोएडा स्टेडियम गेट नंबर 4 पर

समाप्त हुई। महिला वर्ग में प्रथम स्थान पर सलोनी दीक्षित, द्वितीय स्थान पर मुस्कान, तृतीय स्थान पर तिशा, चतुर्थ स्थान पर फरहा तथा पंचम स्थान पर चेतना यादव विजयी रहीं। पुरुष वर्ग में प्रथम स्थान पर साहिल खान, द्वितीय स्थान पर अंकित कुमार, तृतीय स्थान पर अतुल पाल, चतुर्थ स्थान पर आकाश सागर तथा पंचम स्थान पर नितिन यादव विजयी रहे। विजेताओं को नकद पुरस्कार के साथ साथ प्रतीक चिन्ह, प्रमाण पत्र, मेडल इत्यादि प्रदान किए गए। सभी प्रतिभागी युवा दिवस पर विशेष टी शर्ट पहन करके दौड़ सम्मिलित हुए तथा आज ऐसा प्रतीत हुआ की नोएडा का युवा मैराथन में प्रतिभागी बन युवा दिवस को हर्षोल्लास के साथ मना रहा है। युवा तरुणाई को संबोधित करते हुए माननीय मंत्री जी ने सभी युवाओं को संबोधित करते हुए कहा की हम सभी को स्वामी विवेकानन्द जी से प्रेरणा लेते हुए एक सशक्त राष्ट्र निर्माण में अपनी अपनी भूमिका का निर्वहन करने के लिए दृढ़ संकल्पित रहना चाहिए। युवा प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए अंजली चौहान ने कहा की आज भारत सबसे युवा राष्ट्र है और आज संपूर्ण विश्व भारत के युवाओं की शक्ति का लोहा मान रहा है,उन्होंने कहा की भारत की बढ़ती हुए सामरिक और आर्थिक शक्ति के पीछे भी युवाओं का महत्वपूर्ण योगदान है।कार्यक्रम का समापन भाजपा युवा मोर्चा जिला अध्यक्ष रामनिवास यादव जी ने सभी प्रतिभागियों एवम् कार्यकर्ताओं को धन्यवाद ज्ञापित करते हुए किया। रामनिवास ने एमएसएमई जिला संयोजक शिवकुमार राणा जी एवम् उनकी टीम को भी टी शर्ट प्रदान करने के लिए धन्यवाद दिया। कार्यक्रम में उमेश त्यागी, गणेश जाटव,मनीष शर्मा,नरेश शर्मा,ओमवीर अवाना,गोपाल गौड़,पंकज झा,शिवकुमार राणा, अरुण बसोया, मोहित शर्मा, अर्पित मिश्रा,नरेंद्र जोगी ,तुषार गोयल,कौशल यादव संजय चौधरी,साधना शर्मा, दीपक ठाकुर,विनय कुमार,उज्ज्वल सिंह, आकाश चौहान, अंकुश चौधरी,मुखिया जी, विक्की दास,मयंक सिंह इत्यादि कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

शंकर मिश्रा को जेल तो जौहर अली खान को बेल, कपिल मिश्रा बोले एक ही अपराध की अलग सजा क्यों

(आधुनिक समाचार सेवा)

नई दिल्ली। एयर इंडिया की फ्लाइट में पेशाब कांड में आरोपी शंकर मिश्रा की जमानत याचिका खारिज हो गई है। दिल्ली की पटियाला हाउस कोर्ट ने बुधवार को आरोपी को जमानत देने से इनकार कर दिया। शंकर मिश्रा याचिका खारिज हुई, उसी दिन एयरपोर्ट पर पेशाब करने के अन्य आरोपी जौहर अली खान को जमानत मिल गई। जौहर अली खान पर इंदिरा गांधी एयरपोर्ट पर खुलेआम पेशाब करने का आरोप है। शिकायत के बाद पुलिस ने उसे गिरफ्तार कर लिया था। गिरफ्तारी के कुछ ही देर बाद उसे जमानत मिल गई थी। वहीं, कपिल मिश्रा ने ट्वीट कर लिखा कि जौहर अली खान को उसी दिन जमानत दे दी गई, लेकिन दिल्ली पुलिस शंकर मिश्रा की जमानत का विरोध क्यों कर रही है। शंकर की तरह जौहर को उसकी नौकरी से क्यों नहीं निकाला गया? भाजपा नेता ने पूछा कि शंकर मिश्रा और जौहर अली खान के लिए अलग सजा क्यों गौरतलब है कि न्यूयॉर्क से दिल्ली आ रहे एयर इंडिया के विमान में 26 नवंबर 2022 को सफर के दौरान शंकर मिश्रा ने एक बुजुर्ग महिला पर पेशाब कर दिया था। आरोप है कि शंकर तब नशे में धुत्त था। मामला सामने आने के बाद शंकर को 6 जनवरी को बेंगलुरु से गिरफ्तार कर लिया गया।

पर एयर इंडिया की फ्लाइट में एक बुजुर्ग महिला यात्री पर पेशाब करने का आरोप है। शंकर मिश्रा की जमानत याचिका खारिज होने के बाद भाजपा नेता कपिल मिश्रा ने इस पर सवाल उठाए हैं। भाजपा नेता ने पूछा कि एक ही अपराध के लिए अलग सजा क्यों दरअसल, जिस दिन शंकर मिश्रा की जमानत

दलित उत्थान महासभा ने गरीबों को कम्बल वितरण किया

(आधुनिक समाचार सेवा)

नोएडा। दलित उत्थान महासभा के तत्वधान में ग्राम गेझा तिलपता बाद नोएडा गौतम बुध नगर मैं एक मीटिंग कर दलित परिवार से गरीब असहाय एवं जरूरतमंद बुजुर्ग महिलाओं को कंबल वितरण किए गये कार्यक्रम अक्षता हरपाल सिंह ने की मीटिंग को संबोधित करते हुए दलित उत्थान महासभा के सचिव श्री निरंजन सिंह जी ने कहा यह कार्यक्रम निरंतर चलता रहेगा नोएडा अन्य गांवों मे भी मीटिंग एवं कंबल वितरण का कार्यक्रम दलित उत्थान महासभा के सौजन्य से चलते रहेंगे एवं गांव की छोटी-छोटी जो समस्याएं हैं उनके बारे में जानकारी ली जाएगी दलित उत्थान महासभा के अध्यक्ष राजकुमार भारती ने भी अपने विचार रखते हुए कहां दलित उत्थान महासभा के बैनर तले 5 फरवरी 2023 को संत रविदास जी के जन्म दिवस के शुभ अवसर पर बड़े आयोजन का कार्यक्रम करने जा रहा है इस कार्यक्रम में लोगों से पहुंचने के लिए उन्होंने अपील की संरक्षक सुरेंद्र सिंह संगठन के मार्गदर्शक हुकम सिंह संगठन के उपाध्यक्ष विजय गौतम डॉ संजय भारती सतवीर गौतम विनय सिंह बाबू गौतम पिंटू गौतम आदि लोगों ने भी कार्यक्रम को संबोधित किया एवं अपने विचार रखे।

जीएल बजाज और मैचबोर्ड यंग लीडर्स कॉन्क्लेव 2023 का समापन

(आधुनिक समाचार सेवा)

नोएडा। जीएल बजाज इंस्टिट्यूट ऑफ़ मैनेजमेंट एंड रिसर्च और मैचबोर्ड के संयुक्त तत्वाधान में ठभविष्य निर्माण के लिए सर्वश्रेष्ठ बनने की संभावनाठ विषय पर चल रहे दो दिवसीय यंग लीडर्स कॉन्क्लेव-2023 का समापन किया गया। आज कार्यक्रम के दूसरे दिन मानव संसाधन एस्मे उपभोक्ता की प्रमुख सोनल कपूर और डीएसपीआईएन कंसल्टिंग प्राइवेट लिमिटेड के संस्थापक एवं सीईओ पंकज दुबे ने कॉन्क्लेव को संबोधित किया। उन्होंने उल्लेख किया कि कैसे संगठनात्मक सफलता कई परिवर्तनों को सक्षम करके लगातार चुनौतियों का सामना करने की क्षमता पर निर्भर है। उन्होंने कॉर्पोरेट जगत में युवा लीडर के रूप में विकसित होने के लिए विश्वास, अखंडता और सशक्तिकरण की भूमिका पर भी चर्चा की। जीपीआर एचआर कंसल्टिंग एलएलपी के संस्थापक डॉ0 जीपी राव और मैचबोर्ड की एमडी एवं डब्ल्यूडब्ल्यूएल फोरम की संस्थापक डॉ0 सागरिका घोषाल ने दोनों दिनों के सभी सत्रों में छात्रों की सक्रिय भागीदारी की सराहना की और आयोजन समिति को उनके अथक प्रयासों के लिए बधाई दी। जीएलबीआईएमआर की निदेशक डॉ0 सपना राकेश ने कहा कि इन दो दिनों के दौरान सीखे गए ज्ञान ने नए साल 2023 में एक नई शुरुआत और आकांक्षाओं को उजागर किया है। डॉ0 निधि श्रीवास्तव ने कॉन्क्लेव को प्रभावी रूप से सफल बनाने के लिए फैकल्टी, स्टाफ सदस्यों और छात्रों द्वारा निभाई गई महत्वपूर्ण भूमिका का उल्लेख करते हुए कार्यक्रम का धन्यवाद प्रस्ताव दिया। इस दो दिवसीय कॉन्क्लेव में देश भर के लगभग 200 वरिष्ठ विद्वानों और छात्रों ने भाग लिया।

प्रियंका गाँधी जी के जन्मदिन के अवसर पर असहाय बच्चों को भोजन वितरित किया

(आधुनिक समाचार सेवा)

नोएडा। काँग्रेस के नेता उत्तर प्रदेश काँग्रेस कमेटी के पूर्व सदस्य सतेन्द्र शर्मा ने अखिल भारतीय कांग्रेस की महासचिव यूपी प्रभारी गरीब मजदूर किसान महिलाओं युवाओं की की आवाज को बुलंद करने वाली प्रियंका गाँधी के जन्मदिन पर सेक्टर 2 स्थित.वीआर कैटर्स एव फ़ास्ट फ़ूड पर असहाय बच्चों को भोजन वितरित किया। सतेन्द्र शर्मा ने बताया कि हमारी नेता प्रियंका गाँधी का जन्मदिन पूरे उत्तर प्रदेश सहित देश मे कांग्रेस कार्यकर्ताओं द्वारा बड़ी धूमधाम से मनाया जा रहा है,जन्मदिन के अवसर पर असहाय बच्चों को भोजन वितरित किया गया। हम सभी कार्यकर्ता प्रियंका गाँधी के लिए भगवान से दीर्घायु एव अच्छे स्वास्थ्य की कामना करते है ,इस अवसर पर विकटराम,सतपाल लाला,रौनक पाल,सहित कार्यकर्ता रहे।

महर्षि महेश योगी की 106 वी जयंती मनाई गई

(आधुनिक समाचार सेवा)

नोएडा। महर्षि वेद विज्ञान विद्या पीठ के सौजन्य से भावतीय ध्यान के प्रावत्तक और वेद विजान के प्रकाशन महर्षि महेश योगी की 106 वी जयंती पर आयोजित समारोह में कहा गया कि वैदिक ज्ञान की प्रकाश और ऋषि महर्षि द्वारा प्रति पादित योगविद्या के बल बूते भारत निकट भविष्य में जगत गुरु बनेगा. महर्षि वेद विजान विद्यापीठ के प्रभारी शिशिर श्रीवास्तव ने बताया कि वैदिक गुरु परंपरा के पूजन और एकादश वैदिक पंडितो के वैदिक स्वास्तिक वाचन के समारोह में महर्षि यूनिवर्सिटी के डी0 जी 0 ओ पी शर्मा ने कहा कि महर्षि ने दुनिया के सामने भावातीय ध्यान सहित समस्त वेद विधाओं को प्रकिशित करने के साथ सबसे बड़ी बात यही सिखाई अंधेरा प्रकाश आने से दूर होता हैं न की अंधेरे के दिए से कानून बनाने से! आज जितने भी ध्यान सहित शिथक है वह वैदिक विश्व प्रकाशक है उन सबको महर्षि द्वारा प्रदत्त ज्ञान को फैलाना है! ऐसा करके ही सामूहिक चेतना की सतगुरु बनाया जा सकेगा !जो सुख शांति और समृद्धि का आधार है! मीडिया कोडिनेटर ए के लाल ने बताया कि महोत्सव नमक चमक के विशिष्ट रुद्राभिषेक के साथ प्रारंभ हुआ जिसे 21 वैदिक पंडितो ने संपन किया! इन अनुष्ठान के बाद महर्षि ब्याज सहित सम्पूर्ण गुरु परंपरा का प्रजोत पूजन किया गया! महर्षि विद्या मंदिर स्कूल सेक्टर 36 की प्रधानाचार्य डा द वीना बहुगुणा ने स्कूल के बच्चो के साथ महर्षि महेश योगी की 106 वी जयंती मनाई!वही पर महर्षि विद्या मंदिर स्कूल सलारपुर महर्षि नगर में प्रधानाचार्य वीरेंद्र सेंगर ने स्कूल के बच्चो के साथ महर्षि महेश योगी की106 वी जयंती मनाई इस महर्षि नगर समारोह मे विनीत श्रीवास्तव,राघवेंद्र यादव, संतोष श्रीवास्तव,रामेद्र सचान , एस पी गर्ग,सुनील श्रीवास्तव , लल्लन पाठक ,श्री कांत ओझा आदि लोग उपस्थित रहे ।

महुआ मोइत्रा ने सड़क किनारे टी स्टाल पर बनाई चाय

(आधुनिक समाचार सेवा)

नई दिल्ली। टीएमसी सांसद महुआ मोइत्रा, नरेंद्र मोदी सरकार पर जमकर निशाना साधता रहती हैं। एक बार फिर उन्होंने मोदी सरकार पर निशाना साधा लेकिन अंदाज अलग था। अपने संसदीय क्षेत्र कृष्णानगर में वो टी स्टाल पर चाय बनाती नजर आईं और अपने इस अंदाज को कैप्शन के साथ ट्वीट किया। मोइत्रा ट्विटर पर विडियो शेयर करते हुए लिखती हैं कि चाय बनाने की कोशिश..कौन जानता है कि यह मुझे कहां ले जाए। ये बात अलग है कि मोइत्रा ने चाय बनाने का कोरम पूरा किया। वीडियो में आप देख सकते हैं कि पहले उन्होंने पैन में चीनी डाली और चाय के बनने के बाद दुकानदार आगे का काम करता है। महुआ मोइत्रा के वीडियो और उसके कैप्शन पर प्रतिक्रिया देते हुए, भाजपा के पूर्व नेता और नेताजी सुभाष चंद्र बोस के पोते चंद्र कुमार बोस ने चुटकी ली, 'मुझे यकीन है कि आप जानते हैं कि यह आपको कहां ले जाएगा।'

20 जनवरी को इंदिरा गांधी कला केंद्र नोएडा में होगा जिला स्तरीय ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट का आयोजन

(आधुनिक समाचार सेवा)

नोएडा। इन्दिरा गाँधी कला केन्द्र मे 20 जनवरी से जिला स्तरीय ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट का आयोजन किया जा रहा है। जिसमे संबंधित विभागों के द्वारा अपने-अपने विभाग से संबंधित संचालित नीतियों एवं सुविधाओं के संबंध में प्रस्तुत किया जाएगा प्रेजेंटेशन। उत्तर प्रदेश सरकार के माननीय मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी की मंशा के अनुरूप प्रदेश स्तर की भांति जनपद स्तर पर भी जिला स्तरीय ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट 2023 का आयोजन किया जाना है। इसी क्रम में जिला उद्योग प्रोत्साहन एवं उद्यमिता विकास केंद्र गौतम बुद्ध नगर के उपायुक्त उद्योग अनिल कुमार ने जानकारी देते हुए बताया कि आगामी 20 जनवरी 2023 को इंदिरा गांधी कला केंद्र के ऑडिटोरियम सेक्टर 6 नोएडा में दोपहर 2:00 से जिला स्तरीय ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट-2023 का आयोजन किया जाएगा। उन्होंने बताया कि आयोजित होने वाले समिट में जनपद के सभी प्राधिकरणों के वरिष्ठ अधिकारियों सहित जनपद के विभिन्न संबंधित विभागों के अधिकारी गण तथा जनपद के निवेशकों द्वारा प्रतिभाग किया जाएगा एवं संबंधित विभागों के द्वारा अपने-अपने विभागों से संबंधित निवेशको/उद्यमियों के लिए संचालित नीतियों तथा दिए जा रहे प्रोत्साहन/सुविधाओं के संबंध में प्रेजेंटेशन भी आयोजित होने वाले जिला स्तरीय इन्वेस्टर समिट-2023 में प्रस्तुत किए जाएंगे, ताकि निवेशकों/उद्यमियों को प्रदेश सरकार द्वारा उनके हित में चलाई जा रही जन कल्याणकारी योजनाओं की जानकारी प्राप्त हो सके एवं वह उनका भरपूर लाभ उठा सकें।

जर्मनी में 10 से 13 जनवरी से आयोजित हेमटेक्स्टिल-2023 में सशक्त उपस्थिति दर्ज कराई

(आधुनिक समाचार सेवा)

नोएडा। जर्मनी के फ्रैंकफर्ट में महावाणिज्य दूत और कार्यकारी काउंसल जनरल एवं भारतीय महावाणिज्य दूतावास, फ्रैंकफर्ट के आर्थिक और वाणिज्य विंग के प्रमुख विनोद कुमार और सदस्य निर्यातकों की गरिमामयी उपस्थिति में हेमटेक्स्टिल, 2023 आयोजन की शुरुआत हई। यह मेला 10 से 13 जनवरी 2023 तक आयोजित किया जाएगा। यह भारत के लिए ठभारत के अतुल्य वस्त्र, अतुलनीय विविधता, समृद्ध संस्कृति, कला और शिल्प की परंपरा को हेमटेक्स्टिल जैसे बड़े मंच पर प्रदर्शित करने का एक शानदार अवसर है। ईपीसीएच ने हॉल संख्या 10.3 और हॉल 6.2 में देश के कोने-कोने से आए 20 सदस्य निर्यातकों के साथ भागीदारी का आयोजन किया है। राकेश कुमार महानिदेशक ईपीसीएच ने सूचित किया अपनी बात को विस्तार देते हुए उन्होंने कहा कि हेमटेक्स्टिल इंटीरियर टेक्सटाइल्स, इंटीरियर डिजाइन, होम फर्निशिंग्स और हाउसहोल्ड टेक्सटाइल्स के लिए दुनिया का सबसे बड़ा इवेंट है। यह व्यापार शो अपने नए उत्पादों और प्रवृत्तियों के साथ दुनिया भर से प्रदर्शन करने वाली कंपनियों और पेशेवर आगंतुकों दोनों को महत्वपूर्ण मंच प्रदान करता है। यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि पिछले कुछ वर्षों में हेमटेक्स्टिल फ्रैंकफर्ट में भारत की उपस्थिति में भी काफी वृद्धि हुई है।ईपीसीएच के अध्यक्ष राज कुमार मल्होत्रा ने कहा कि चीन के बाद भारत की भागीदारी दूसरी सबसे बड़ी भागीदारी है, लगभग 400 भारतीय प्रदर्शक शो का हिस्सा हैं। उन्होंने चिंता जाहिर करते हुए कहा कि यह सर्वविदित है कि आज डिजिटल क्रांति के कारण टेक्सटाइल फर्निशिंग क्षेत्र को बड़ी चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। डिजिटलीकरण उत्पादन पक्ष और खुदरा पक्ष पर कई अवसर खोलता है, हालांकि, यह पर्चेजिंग फ्लो में कई महत्वपूर्ण बदलाव भी करता है। इन सबके बावजूद 120 से अधिक देशों के लगभग 2400 प्रदर्शक हेमटेक्स्टिल, 2023 में भाग ले रहे हैं। ईपीसीएच के कार्यकारी निदेशक आर.के. वर्मा ने कहा, भारत की भागीदारी मेले की जीवंतता और विविधता को बढ़ाएगी, साथ ही साथ वैश्विक निर्माताओं, खुदरा विक्रेताओं और ब्रांडों को भारतीय कपड़ा, होम फर्निशिंग और उपभोक्ता उत्पाद उद्योगों में मजबूत उद्यमिता से परिचित कराएगी इसके साथ ही यह आयोजन भारत से सोर्सिंग के अवसर भी खोलेगा। अपनी बात को विस्तार देते हुए उन्होंने कहा कि जर्मनी भारतीय उत्पादों के लिए एक प्रमुख बाजार है। ऐसे में हेमटेक्स्टिल पूरी दुनिया में भारतीय कंपनियों के लिए एक महत्वपूर्ण मार्केटिंग माध्यम साबित होने वाला है। ईपीसीएच दुनिया भर के विभिन्न देशों में भारतीय हस्तशिल्प निर्यात को बढ़ावा देने और उच्च गुणवत्ता वाले हस्तशिल्प उत्पादों और सेवाओं के एक विश्वसनीय आपूर्तिकर्ता के रूप में विदेशों में भारत की छवि बनाने के लिए जिम्मेदार एक नोडल संस्थान है। वित्तीय वर्ष 2021-22 के दौरान हस्तशिल्प निर्यात 33253.00 करोड़ (4459.76 मिलियन अमेरिकी डॉलर) रहा, जिसमें बीते वर्ष की तुलना में रुपये के संदर्भ में 29.49 और डॉलर के संदर्भ में 28.90 की वृद्धि दर्ज हुई है। वित्तीय वर्ष 2021-22 के दौरान जर्मनी में होने वाला हस्तशिल्प निर्यात 1816.70 करोड़ (243.65 मिलियन अमेरिकी डॉलर) रहा, जिसमें बीते वर्ष की तुलना में रुपये के संदर्भ में 19.36 और डॉलर के संदर्भ में 18.82 की वृद्धि दर्ज हुई है।

सशक्त महिला सम्मान समारोह आयोजित

(आधुनिक समाचार सेवा)

नोएडा। सेक्टर 8 नवरत्न ज्ञानपीठ पर जिला अल्पसंख्यक कांग्रेस गौतम बुध नगर व अल्पसंख्यक नोएडा कांग्रेस द्वारा कांग्रेस के राष्ट्रीय महासचिव उत्तर प्रदेश की प्रभारी प्रियंका गांधी के जन्म दिवस के अवसर पर सशक्त महिला सम्मान समारोह का आयोजन किया जिसमें समाज में अच्छे कार्य करने वाली सैकड़ों महिलाओं को प्रशिक्षित पत्र देकर सम्मान किया गया कार्यक्रम का आयोजन जिला चेयरमैन जावेद खान व शहर चेयरमैन कदीर खान ने किया इस मौके पर मुख्य रूप से अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी सदस्य दिनेश अवाना, पूर्व अध्यक्ष शहाबुद्दीन ,राष्ट्रीय विचार संयोजक तरुण भारद्वाज, कांग्रेसी नेता मोहम्मद शाहिद,नवरत्न ज्ञानपीठ संचालक रमाकांत सिंह , मुन्नीलाल, परवेज इकबाल, मेहंदी, शबनम, स्मूतारा, एनएसयूआई नेता गौरव आधाना, गुलाब शाह, तमन्ना, शम्मा, संविदा, शशि कला , सुनीता, खुशबू, लक्ष्मी, चंदा बेगम, रजनी पाल, रामावती देवी,असिफ, फरमाना,आलतिशा पूजा,शिवांगी,कृति,रीना, प्रियंका,अजय, राखी मीरा अजीमा अन्य क्षेत्र के लोग गणमान्य व्यक्ति व कांग्रेस पार्टी के कार्यकर्ता मौजूद रहे।

मोदी कैबिनेट में इसी महीने होगा बड़ा फेरबदल भाजपा संगठन में भी बदलाव की चर्चा

(आधुनिक समाचार सेवा)

नई दिल्ली। इस साल के विधानसभा चुनावों और अगले साल लोकसभा की रणनीति के मद्देनजर भाजपा अपनी राष्ट्रीय कार्यकारिणी की

बैठक की तैयारियों में जुटी है। दूसरी तरफ, इसी महीने केंद्रीय मंत्रिपरिषद में फेरबदल की अटकलों को भी बल मिल रहा है। मंत्रियों के प्रदर्शन और सत्तारूढ़ पार्टी की राजनीतिक जरूरतों के कारण यह बदलाव होने की संभावना है। बजट सत्र से पहले फेरबदल संभव ध्यान रहे कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अपने दूसरे कार्यकाल में जुलाई 2021 में केवल एक बार अपनी मंत्रिपरिषद में फेरबदल किया है, जबकि अपने पहले कार्यकाल में उन्होंने तीन बार अपनी मंत्रिपरिषद में फेरबदल और विस्तार किया था। हालांकि, इस बारे में अभी तक कोई आधिकारिक बयान नहीं आया है, लेकिन सूत्रों ने कहा कि यह फेरबदल 31 जनवरी को संसद का बजट सत्र शुरू होने से पहले किसी भी दिन हो सकता है। भाजपा कार्यकारिणी की बैठक 16-17 जनवरी को दिल्ली में होनी है। कैबिनेट में लोकसभा चुनाव से पहले आखिरी बदलाव माना जा रहा है कि गुजरात विधानसभा चुनाव में पार्टी की शानदार जीत और हिमाचल प्रदेश विधानसभा एवं दिल्ली नगर निगम चुनावों में हार से मिले सबक का असर इस फेरबदल में दिख सकता है। साथ ही कर्नाटक, राजस्थान और छत्तीसगढ़ जैसे चुनावी राज्यों में राजनीतिक जरूरतों के अनुसार भी इस मंत्रिपरिषद में फेरबदल हो सकता है।

नाटू-नाटू का 10% पार्ट लिखने में चंद्रबोस को लगे थे महीनों बोलें- 'कड़ी मेहनत रंग लाई'

(आधुनिक समाचार सेवा)

नई दिल्ली। अमेरिका के लॉस एंजेलिस में आयोजित 80 वें 'गोल्डन ग्लोब अवॉर्ड्स 2023' में एसएस राजामौली की फिल्म ने इतिहास रच दिया। इस फिल्म के गाने 'नाटू नाटू' ने बेस्ट ओरिजिनल सॉन्ग का अवॉर्ड जीता है। 'गोल्डन ग्लोब अवॉर्ड्स' के दौरान अवॉर्ड लेते वक्त स्टेज पर 'नाटू नाटू' के कंपोजर लेकर फैंस तक ने अवॉर्ड पाने के बाद पूरी टीम को बधाई दी। ऐसे में अब 'नाटू नाटू' गाने को लिखने वाले तेलुगु के मशहूर गीतकार और सिंगर चंद्रबोस ने अपने एक इंटरव्यू में बताया कि अवॉर्ड विनिंग सॉन्ग को लिखने में कितना वक्त लगा। गीतकार और सिंगर चंद्रबोस ने एएनआई से खास बातचीत की है। उन्होंने इंटरव्यू में कहा, ''नाटू नाटू' गाने को अवॉर्ड मिलने के बाद वो काफी खुश हैं। ये मेरे लिए बहुत यादगार पल हैं। गोल्डन ग्लोब पुरस्कार जीतना, यह मेरे लिए बहुत बड़ी बात है। मैंने इस चीज की उम्मीद सपने में भी नहीं की थी।' चंद्रबोस ने आगे कहा, 'सबसे पहले, मैं एसएस राजामौली और एमएम कीरावनी को 'आरआरआर' के लिए मुझे एक गीत लिखने का अवसर देने के लिए दिल से धन्यवाद देना चाहता हूं। सच कहूं तो गाना बनाने में मुझे काफी वक्त लगा। 90 प्रतिशत गीत आधे दिन में ही लिख दिया था, जिसे काफी पसंद किया गया था। बाकी का 10 फीसदी में एक साल सात महीने का लंबा वक्त लगा, लेकिन आज मेरे प्रयास, कड़ी मेहनत और धैर्य का फल मिला है।बता दें नाटू-नाटू गाने को अगस्त, 2021 में फिल्माया गया था। इस गाने को यूक्रेन के मरिंस्की पैलेस में शूट किया गया था। गाने का हुक स्टेप इतना ज्यादा वायरल हुआ कि लोगों ने सोशल मीडिया पर इसके साथ कई वीडियो बनाए। यह गाना हिंदी में 'नाचो नाचो', तमिल में 'नाडू कूथु', कन्नड़ में 'हल्ली नातु' और मलयालम में 'करिन्थोल' के रूप में भी जारी किया गया था। इसके हिंदी वर्जन को राहुल सिप्लिगुंज और विशाल मिश्रा ने गाया था।

शाह रुख खान ने इवेंट में सिग्नेचर पोज के साथ गाया डीडीएलजे का सॉन्ग

(आधुनिक समाचार सेवा)

नई दिल्ली। बॉलीवुड एक्टर शाह रुख खान इन दिनों अपनी आने वाली फिल्म 'पठान' को लेकर खूब चर्चा में बने हुए हैं। शाह रुख लंबे समय के बाद 'पठान' के साथ सिल्वर स्क्रीन पर कमबैक कर रहे हैं। एक तरफ जहां फैंस के उनकी फिल्म को लेकर एक्साइटमेंट बनी हुई हैं। वहीं, दूसरी तरफ 'पठान' को लेकर जमकर विवाद चल रहा है। हाल ही में फिल्म का ट्रेलर रिलीज हुआ, जिसे दर्शकों की मिली जुली प्रतिक्रिया मिली। पठान की चर्चा के बीच शाह रुख का एक वीडियो वायरल हो रहा है। इस वीडियो को उनके फैंस बेहद पसंद कर रहे हैं शाह रुख खान हाल ही में एक कार इवेंट का हिस्सा बनें। इस दौरान उन्होंने अपनी सुपरहिट फिल्म 'दिलवाले दुल्हनिया ले जाएंगे' का गाना गाया वो भी सिग्नेचर पोज के साथ।

गाना गाने के बाद शाह रुख ने हंसते हुए कहा- 'मुझे लगता है कि ये काफी रोमांटिक है।' उनका ये अंदाज फैंस को बेहद पसंद आया। शाह रुख की इस अदा पर उनके चाहने वाले फिदा होते नजर आ रहे हैं शाह रुख खान का ये रोमांटिक अंदाज को काफी पसंद आ रहा है। इवेंट में एक्टर के लुक की बात करें तो उन्होंने व्हाइट शर्ट और ब्लैक सूट में पहना हुआ था। इसके साथ ही ब्लैक गॉगल में वो काफी डैपर दिख रहे हैं।

दयाबेन दिशा वकानी का हाल देख कांप जाएगी रूह, रोते हुए सुनाई अपनी आपबीती

(आधुनिक समाचार सेवा)

नई दिल्ली। तारक मेहता का उल्टा चश्मा हर दिल अजीज है। इसे चाहने वालों की एक लंबी फैन लिस्ट है। यही कारण है ये कि ये शो जल्द ही अपने 15 साल पूरे करने वाला है। इतने सालों में इस सिटकॉम ने काफी उतार चढ़ाव देखे। कई कलाकार शो छोड़कर चले गए तो कुछ का निधन हो गया। हालांकि दर्शक आज भी अपना पहला एपिसोड वाला स्टारकास्ट देखना चाहते हैं। ऐसे में सबसे ज्यादा डिमांड हो रही है दयाबेन को वापस लाने की। सोशल मीडिया पर इन दिनों दयाबेन का किरदार निभाने वाली दिशा वकानी का एक वीडियो वायरल हो रहा है जिसमें वो गोद में एक बच्चा लिए बैठी है और अपनी दर्दनाक कहानी सुना रही हैं। बच्चा लगातार रोता जा रहा है और दिशा के भी आंखों से आंसू रुकने का नाम नहीं ले रहे हैं। इंटरनेट पर जबरदस्त तरीके से वायरल हो रहे इस वीडियो में दयाबेन का हाल देख लोग इमोशनल हो रहे हैं। दयाबेन के आंसू लोगों को भी रोने पर मजबूर कर रहे हैं। सोशल मीडिया पर यूजर पूछ रहे हैं कि ये बच्चा आखिर है कौन और दयाबेन का यह हाल किसने बनाया तो आपको बता दें कि ये सीन साल 2008 में आई फिल्म 'के कंपनी' का है जिसमें तुषार कपूर और अनुपम खेर लीड रोल में थे। इस फिल्म में तुषार एक पत्रकार होते हैं और वो दुनिया के सामने दिशा वकानी की आपबीती सुना रहे होते हैं। याद दिला दें कि तारक मेहता का उल्टा चश्मा शुरू होने से पहले दिशा सहित अन्य कलाकारों ने फिल्मों, सीरियल, ऐड और म्यूजिक वीडियोज में रोल किए थे। हालांकि, किसी ने उन्हें नोटिस नहीं किया कभी। दिशा वकानी ने भी फिल्मों में पैर जमाने की काफी कोशिश की थी। उन्होंने जोधा अकबर समेत कई फिल्मों में छोटी भूमिका निभाई पर कामयाबी नहीं मिली। पहचान उन्हें तारक मेहता से ही मिली। इस सीरियल में भी वो साल 2017 के बाद से नजर नहीं आई हैं। हाल ही में उन्होंने एक बेटे को जन्म दिया है तब से तारक मेहता का उल्टा चश्मा में उनकी वापसी के कयास लगाए जा रहे हैं।

दिग्गज रॉक गिटारवादक जेफ बेक का 78 वर्ष की आयु में निधन, शोक में डूबी म्यूजिक इंडस्ट्री

(आधुनिक समाचार सेवा)

नई दिल्ली। दिग्गज गिटारिस्ट जेफ बेक अब हमारे बीच नहीं रहे। 78 साल की उम्र में उन्होंने दुनिया को अलविदा कर दिया। जेफ बेक की ऑफिशियल वेबसाइट ने बुधवार को ये दुखद सूचना दी। 1960 के दशक में सुपरग्रुप द यार्डबर्ड्स के साथ रॉक एंड रोल स्टारडम देखने वाले जेफ बेक संगीत के चाहने वालों के बीच काफी पॉपुलर थे। नहीं रहे जेफ बेक जेफ बेक की मौत का कारण अचानक हुए बैक्टीरियल मैनिंजाइटिस को बताया जा रहा है। इंग्लिश बॉर्न गिटारिस्ट की ऑफिशियल वेबसाइट पर एक बयान में कहा गया, 'उनके परिवार की ओर से कहा गया- काफी गहरे दुख के साथ हम जेफ बेक के निधन की खबर साझा करते हैं। अचानक बैक्टीरियल मैनिंजाइटिस से पीड़ित होने के बाद, उनका निधन हो गया।शोक में डूबी म्यूजिक इंडस्ट्री इस घटना पर बेक के परिवार ने प्राइवेसी की मांग की है, वो फिलहाल इस दर्दनाक घटना से उबरने की कोशिश कर रहे हैं। बेक के निधन से म्यूजिक इंडस्ट्री में शो की लहर है। ओजी ऑस्बॉर्न जैसे रॉक आइकॉन, जिनके साथ बेक ने एक बार को-ऑडिनेट किया था और किस के प्रमुख गायक जीन सीमन्स, जिन्होंने बेक के निधन को 'हार्दिक विदारक' कहते हुए उन्हें श्रद्धांजलि दी है। सिमंस ने ट्विटर पर पोस्ट किया, ठजेफ जैसा गिटार कोई नहीं बजा सकता। उनके पहले दो जेफ बेक ग्रुप एल्बम देखने के बाद भी आप उनके ग्रेट होने का अंदाजा लगा सकते हैं। मिक जैगर ने बेक - आठ बार ग्रैमी विजेता, जिन्होंने दो बार रॉक एंड रोल हॉल ऑफ फेम में शामिल किया गया था, ने बेक को ठदुनिया के महानतम गिटार खिलाड़ियों में से एक कहा।

हिट एक्टिंग करियर छोड़ने की झनक शुक्ला ने बताई असल वजह, शाह रुख-सैफ संग कर चुकी हैं काम

(आधुनिक समाचार सेवा)

नई दिल्ली। छोटे पर्दे की पापुलर चाइल्ड आर्टिस्ट रह चुकी झनक शुक्ला इन दिनों चर्चा में छाई हुई हैं। हाल ही में एक्ट्रेस की सगाई की तस्वीरें सामने आई थी, जो सोशल मीडिया पर खूब वायरल हुई। झनक के फैंस उन्हें स्क्रीन पर देखने का लंबे समय से इंतजार कर रहे हैं, लेकिन एक्ट्रेस ने अपने हिट एक्टिंग करियर पर ब्रेक लगा दिया। अब झनक ने एक इंटरव्यू में अचानक एंटरटेनमेंट इंडस्ट्री छोड़ने के पीछे की वजह का खुलासा किया है। झनक शुक्ला 90 के दशक की मशहूर चाइल्ड एक्टर हैं। सबसे ज्यादा उन्हें स्टार प्लस के शो करिश्मा का करिश्मा के लिए जाना जाता है। टीवी के अलावा उन्होंने फिल्मों में भी काम किया। झनक सुपरस्टार शाह रुख खान, सैफ अली खान और प्रीति जिंटा स्टारर फिल्म कल हो ना हो में भी नजर आई थीं। इस फिल्म में वो जया बच्चन की सौतेली बेटी जिया कपूर के किरदार में थीं। शोहरत की सीढ़ियां चढ़ती झनक ने अचानक फिल्म और टीवी को अलविदा कह दिया। ईटाइम्स को दिए इंटरव्यू में झनक ने एक्टिंग से दूरी बनाने की वजह बताते हुए कहा, मैंने जानबूझकर एक्टिंग नहीं छोड़ी, ये बस हो गया। मैं चाइल्ड आर्टिस्ट थी, लेकिन एक समय के बाद मेरे पेरेंट्स ने कहा कि मुझे अपनी पढ़ाई पर फोकस करना चाहिए और एक्टिंग के बारे में ग्रेजुएशन के बाद सोचूं अगर मुझे एक्टिंग करनी है तो। ऐसे में मैं पढ़ाई में जुट गई और जब तक मैंने अपना ग्रेजुएशन खत्म किया एक्टिंग से मेरा इंटरेस्ट ही खत्म हो गया। एक्टिंग में दोबारा हाथ आजमाने के बारे में बात करते हुए झनक ने कहा, ठमैं आगे और पढ़ना चाहती थी तो मैंने आर्कियोलॉजी चुन लिया। लॉकडाउन में मैंने अपना एमबीए कंप्लीट किया और अब मार्केटिंग में मास्टर की पढ़ाई करने के लिए आयरलैंड जाने का फैसला किया है। इस महीने के अंत तक मैं चली जाउंगी। हालांकि, भविष्य में अगर मुझे किसी वेब शो में अच्छा किरदार ऑफर हुआ तो मैं जरूर एक्टिंग करूंगी। मैं खुद को ऐसा कोई भी काम करने से नहीं रोकना चाहती, जिससे मुझे खुशी मिले, लेकिन मैं फुल टाइम एक्टर नहीं बनना चाहती।

एमटी स्टैन की मां ने अर्चना की फैमिली पर किया ऐसा कमेंट की भड़क गए लोग, पूछा- आते ही चुगली शुरू

(आधुनिक समाचार सेवा)

नई दिल्ली। बिग बॉस 16 में फैमिली वीक चल रहा है, जहां कंटेस्टेंट अपने परिवार वालों से मिलकर इमोशन हो रहे हैं। हर रोज घर में लड़ाई झगड़े देखकर बोर हो चुके दर्शक भी इसे पसंद कर रहे हैं। सबसे ज्यादा पसंद शिव ठाकरे की मां को किया जा रहा है। शिव ठाकरे की मां आशा जी ने सबके दिल जीत लिए। लोग उनकी सादगी, गर्मजोशी और मासूमियत के कायल हो गए हैं शिव की मां ने अब्दु रोजिक, अर्चना गौतम और शालिन भनोट पर जिस तरह का प्यार बरसाया है, उसकी सोशल मीडिया पर जमकर तारीफ की जा रही है। शिव ठाकरे का फैन बेस उनकी मां के प्रवेश के बाद बढ़ा। खैर, एमसी स्टेन की मां वाहिदा तडवी भी घर में आईं। रैपर का एक बहुत ही इमोशनल रियूनियन था, जिसमें दोनों तरफ सिर्फ आंसू ही आंसू थे। लोगों को पता चला की स्टैन का गैंगस्टा स्वैग सिर्फ एक दिखावा था, और वो रियल लाइफ में काफी इमोशनल इंसान हैं। हालांकि इस दौरान कुछ ऐसा भी हुआ जो दर्शकों को अखरने लगा। हुआ ये कि गौतम के भाई गुलशन गौतम ने घर में डांस करना शुरू कर दिया। अर्चना ने बिग बॉस 16 में आने के लिए अपने भाई को फटकार लगाई क्योंकि वो चाहती थीं कि उनकी मां शो में आएं। गुलशन गौतम ने साबित कर दिया कि वह अपनी बहन की तरह कॉमेडियन भी हैं। उनका एंटरटेनमेंट कोशेंट शानदार रहा। अब तो ऐसा लग रहा है कि फैंस उन्हें बिग बॉस 17 में देखना चाहते हैं इस सब पर साजिद खान ने कमेंट करते हुए कहा था कि अर्चना गौतम का परिवार पूरी तरह से डिसफंक्शनल है। तभी इस बातचीत में स्टैन की मां की एंट्री हुई और उन्होंने कहा कि अर्चना और उसके भाई की बॉन्डिंग सिर्फ कैमरे को दिखाने के लिए है। फैंस को यह कमेंट पसंद नहीं आया है।

गोल्डन ग्लोब अवॉर्ड जीतने पर सलमान खान ने की टीम को दी बधाई, शेयर की एमएम कीरावानी की विक्ट्री फोटो

(आधुनिक समाचार सेवा)

नई दिल्ली। साउथ के डायरेक्टर एसएस राजामौली की फिल्म आरआरआर ने बीते दिन गोल्डन ग्लोब अवॉर्ड जीतकर इतिहास रच दिया। फिल्म के गाने नाटू-नाटू ने बेस्ट ओरिजनल सॉन्ग का अवॉर्ड अपने नाम किया। गोल्डन ग्लोब जैसे प्रतिष्ठित अवॉर्ड के भारत आने पर पूरे देश में खुशी की लहर देखने को मिली है। शाह रुख खान से लेकर ए आर रहमान तक, बॉलीवुड के कई स्टार ने आरआरआर की टीम को बधाई दी। अब बॉलीवुड के दबंग यानी सलमान खान ने भी आरआरआर के गोल्डन ग्लोब जीतने पर खुशी जताई है और फिल्म की टीम को ढेरों बधाइयां दी हैं। नाटू-नाटू की जीत पर गदगद हुए भाईजान सलमान खान ने ट्विटर पर गाने नाटू-नाटू के क्रिएटर एमएम कीरावानी का एक फोटो शेयर किया, जिसमें वह एक हाथ में गोल्डन ग्लोब ट्रॉफी लिए हुए और दूसरे हाथ से विक्ट्री साइन दिखाते हुए नजर आ रहे हैं। पोस्ट को शेयर करते हुए सलमान खान ने कहा, गोल्डन ग्लोब में शानदार जीत के लिए आरआरआर की पूरी टीम को बधाइयां। इसके साथ ही एक्टर ने एसएस राजामौली, एमएम कीरावानी, राम चरण और जूनियर एनटीआर को टैग भी किया।गोल्डन ग्लोब अवॉर्ड 2023 में आरआरआर को दो कैटेगरी में नॉमिनेशन मिला। बेस्ट ओरिजनल सॉन्ग के अलावा आरआरआर ने बेस्ट नॉन इंग्लिश लैंग्वेज फिल्म की कैटेगरी में भी अपनी दावेदारी ठोकी थी, लेकिन ये अवॉर्ड जीतने से आरआरआर चूक गई। गोल्डन ग्लोब की इस कैटेगरी में पांच फिल्में मुकाबला कर रही थी और जिस फिल्म ने बेस्ट नॉन इंग्लिश लैंग्वेज फिल्म का अवॉर्ड जीता वह है- अर्जेंटीना, 1985।

नोरा फतेही को अली कुली मिर्जा ने मारा था चांटा, दोनों के बीच हुई थी जबरदस्त मारपीट

(आधुनिक समाचार सेवा)

नई दिल्ली। बिग बॉस 8 में नजर आ चुके अली कुली मिर्जा ने हाल ही में नोरा फतेही पर कई गंभीर आरोप लगाए। उन्होंने कहा कि 10-12 साल पहले एक फिल्म की शूटिंग के दौरान किसी बात पर नोरा ने उन्हें चांटा मार दिया था जिसके बाद उन्होंने ने भी पलटकर एक्ट्रेस को मार दिया। अली को दुख इस बात का है कि ये घटना काफी पुरानी है और अब एक्ट्रेस इसे हर किसी को सुना रही हैं। दरअसल, हाल ही में द कपिल शर्मा शो पर पहुंची नोरा फतेही ने बिना नाम लिए बताया कि कैसे उनके एक को एक्टर के साथ उनकी बहुत बुरी लड़ाई हुई थी, जो हाथापाई तक पहुंच गई थी। नोरा ने कपिल शर्मा को बताया कि बांग्लादेश में जब वो शूट के लिए गई थीं तो वहां एक को-एक्टर ने उनके साथ बदसलूकी की थी जो उन्हें सहन नहीं हुआ और दोनों के बीच इसे लेकर लड़ाई बढ़ गई। नतीजा ये हुआ कि नोरा ने को-एक्टर को थप्पड़ मार दिया, बदले में उसने भी मारा। नौबत बाल नोचने तक आ पहुंची थी। नोरा फतेही की बाते सुनकर शो में हर कोई दंग रह गया था। अब टेलीचक्कर को दिए अपने इंटरव्यू में अली कुली मिर्जा सामने आए हैं और उन्होंने सारी कहानी बताई है।

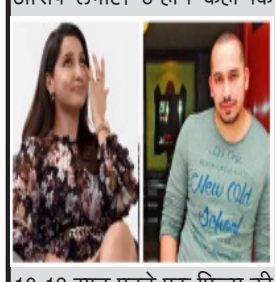

सुजैन खान के ब्वॉयफ्रेंड अर्सलान संग ऋतिक रोशन ने की जमकर पार्टी, इस नाम से बुलाया

(आधुनिक समाचार सेवा)

नई दिल्ली। बॉलीवुड के ग्रीक गॉड ऋतिक रोशन ने 10 जनवरी को अपना 49वां जन्मदिन सेलिब्रेट किया। उनके जन्मदिन पर बॉलीवुड सितारों ने एक्टर को जन्मदिन की बधाई दी, जिसे ऋतिक रोशन ने अपने इंस्टा स्टोरी पर शेयर किया है। ऋतिक के जन्मदिन पर जहां सुजैन खान ने एक प्यारा सा वीडियो शेयर करके उन्हें बधाई दी थी, तो वही एक्टर की एक्स वाइफ के ब्वॉयफ्रेंडअर्सलान ने भी सोशल मीडिया पर कृष एक्टर को विश किया। उनकी इस स्टोरी को ऋतिक रोशन ने शेयर करते हुए उन्हें इस नाम से पुकारा। ऋतिक रोशन ने अर्सलान गोनी द्वारा शेयर की गई तस्वीर को अपने इंस्टाग्राम अकाउंट पर शेयर किया। इस फोटो में अर्सलान और ऋतिक रोशन पार्टी के मूड में नजर आ रहे हैं। सुजैन खान के ब्वॉयफ्रेंड अर्सलान तस्वीर ले रहे हैं और ऋतिक थम्स अप दिखाते हुए पोज कर रहे हैं। इस फोटो को शेयर करते हुए सुजैन के ब्वॉयफ्रेंड और एक्टर अर्सलान गोनी ने ऋतिक को विश करते हुए कैप्शन में लिखा, 'हैप्पी-हैप्पी बर्थडे ऋतिक रोशन'। उनकी इस तस्वीर को अपनी इंस्टा स्टोरी पर रिपोस्ट करते हुए फाइटर एक्टर ने कैप्शन में 'थैंक्स यारा'। अर्सलान गोनी से पहले ऋतिक रोशन की एक्स वाइफ सुजैन खान ने भी एक्टर को खास अंदाज में जन्मदिन की बधाई दी थी। उन्होंने उनके बर्थडे पर एक फोटोज का वीडियो बनाकर इंस्टाग्राम पर पोस्ट किया था। उनकी इस पोस्ट में ऋतिक रोशन के बेटे रेहान-हृदान, पिता राकेश रोशन, मां पिंकी रोशन तो थे ही, लेकिन ऋतिक के साथ इस वीडियो में सुजैन रोशन, अर्सलान गोनी और सबा आजाद संग क्वालिटी टाइम स्पेंड करते हुए ऋतिक रोशन की फोटोज थी। सुजैन के अलावा सबा आजाद ने भी ऋतिक रोशन के जन्मदिन पर उन्हें रोमांटिक अंदाज में जन्मदिन की बधाई देते हुए एक वीडियो शेयर किया था। आपको बता दें कि ऋतिक रोशन और सुजैन खान का भले ही डिवोर्स हो गया हो, लेकिन वह दोनों एक-दूसरे के साथ आज भी अच्छी बॉन्डिंग शेयर करते हैं।

स्वत्वाधिकारी एवं मुद्रक
डा0 दीपक अरोरा द्वारा
रामा प्रिन्टर्स 53/25/1 ए
बेली रोड न्यू कटरा प्रयागराज
(उ.प्र.) 211002 से मुद्रित
एवं सी-41 यूपी एसआईडीसी
औद्योगिक क्षेत्र नैनी प्रयागराज।
(उ.प्र.) 211010 से प्रकाशित।
सम्पादक/प्रकाशक
डा0 पुनीत अरोरा
मो0न0 09415608710
RNI No. UPHIN/2015/63398
website:www.adhuniksamachar.com

नोट:- इस समाचार पत्र में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा इनसे उत्पन्न समस्त विवाद इलाहाबाद न्यायालय के अधीन ही होगे।